

छोटे समूह में परमेश्वर का अनुभव करना (Experiencing God In the Small Group)

Volume One

ग्रंथ एक

My Story

मेरी कहानी

Discovering Lamad Lifelong Learning

लामाड जीवनभर सीखने की खोज

Written by Mark and Patti Virkler

मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा लिखी गयी

Experiencing God In the Small Group

छोटे समूह में परमेश्वर का अनुभव करना

Volume One

ग्रंथ एक

My Story

मेरी कहानी

Discovering Lamad Lifelong Learning

लामाड जीवनभर सीखने की खोज

Written by Mark and Patti Virkler

मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा लिखी गयी

Copyright 1990

1431 Bullis Road, Elma, NY 14059

प्रतिलिप्याधिकार १९९०

१४३१ बुल्लिस रोड, एलमा, न्यू यार्क १४०५९

ईममानुएल के लिए - परमेश्वर हमारे साथ

विषय सूची

परिचय	छोटे समूह में परमेश्वर का अनुभव करना, ग्रंथ एक
- मेरी कहानी	
अध्याय एक	परमेश्वर का अनुभव करना
अध्याय दो	छोटे समूह का स्थान
अध्याय तीन	छोटे समूह में आत्मा से मुलाकात का स्थान
अध्याय चार	आज रात हम क्या सिखाएंगे?
अध्याय पाँच	परमेश्वर आज रात क्या करना चाहता है?
अध्याय छः	हम सच को कैसे खोज सकते हैं?
अध्याय सात	हम कक्षा तक जीवीते सच को कैसे पहुँचा सकते हैं?
अध्याय आठ	छोटे समूह में कहानी का स्थान
अध्याय नौ	पवित्रात्मा अध्यापक है
अध्याय दस	छोटे समूह में कहानी द्वारा परमेश्वर से मुलाकात
अध्याय ग्यारह	हम शाम का कार्यक्रम कैसे तै करें?
अध्याय बारह	पागलपन को नियंत्रण में रखना
अध्याय तेराह	क्या मैं सब कुछ जानता हूँ?
अध्याय चौदाह	निजी मुकाबला और बाईबल का मूलार्थ
अध्याय पंद्राह	बीसवीं सदी के भविष्यवक्ताओं को अपनाना
अध्याय सोलाह	विश्वास, आशा और प्रेम को उजागर करना
परिषिष्ट	आगे देखना

परिचय

छोटे समूह में परमेश्वर का अनुभव करना

ग्रंथ एक - मेरी कहानी

यह पुस्तक मेरी कहानी है। फरीसीपन से मसीहत तक के मेरी यात्रा की कहानी है। मैं एक पक्के फरीसी की तरह पला बड़ा हुआ। परन्तु मुझे पता नहीं था। मुझे लगा की मैं एक भक्तीपूर्ण विश्वासी हूँ। परन्तु मैं अपने पता शैतान की ओर से था (सहम जाता हूँ)। मैंने वचन सुनाया, मुक्ति की योजना के बारे में बताया, बाईबल को पढ़ा, और याद भी किया और हर सप्ताह गिरजाघर भी गया। परन्तु मैं परमेश्वर को नहीं जानता था। फिर मुझे दमश्क की राह का अनुभव हुआ, जहाँ परमेश्वर ने मेरे प्यासे प्राण पर अपनी ज्योती चमकाई और मैंने परमेश्वर का अनुभव एक जीवित, प्यार से भरपूर व्यक्ति जो मेरे पास खड़ा हुआ था, के रूप में अनुभव किया। हम इसे ईमानुएल कहते थे - परमेश्वर हमारे साथ। परन्तु मुझे पता चला की परमेश्वर आत्मविध्या से कुछ अधिक था। परमेश्वर सच में मेरे अंदर था, मुझ से बात कर रहा था और मेरे साथ जीवन बाँट रहा था। एक दम से सब सच हो गया। मसीहत सच्ची थी। बाईबल सच्ची थी। आखिरकार मैं आत्मिकता का अनुभव कर रहा था।

अब यह प्रश्न आया: क्या वह छोटे समूह में भी सच हो सकता है? मैं वचन का प्रचारक था। क्या जो सच्चाई मैंने मसीह में पाई थी और अनुभव किया था, क्या वह हर उस व्यक्ति को मिल सकती है जो छोटे समूह में मिलकर परमेश्वर को खोजते हैं? मुझे पता नहीं था, परन्तु मैं कोशिश करना चाहता था। इसलिए मैंने कोशिश की। मैं सात वर्षों तक बाईबल स्कूल में पढ़ाता रहा और हर कक्षा में मसीह को उभरते हुए देखा। एक विषय के रूप में नहीं, परन्तु उस वायू की तरह जो जीवन की गती से बहती है और हमें यह अनुभव कराती है की हमने परमेश्वर का स्पर्श किया है, ईमानुएल के रूप में, जैसे की कोई उस कमरे में चल रहा हो। वह जिस से हम सब बात कर सकते थे। और उस से भी अधिक, वह हमें जवाब भी देता था। हम ने देखा की हम पत्रे पे पत्रा लिख सकते थे की वह हम से क्या कह रहा है, निजी रूप में और समूह के रूप में।

यह पुस्तक मेरी कहानी को बताती है। और इस से अधिक यह हमें शिक्षा देती है, क्योंकि मैं हृदय का शिक्षक हूँ। यह आप को वह बताती है, जो मुझे सीखना पड़ा। जैसे की साऊल को दमश्क की राह पर, वैसे ही मुझे परमेश्वर की सेवा करते हुए भटकती राह पर। मैं धार्मिक था, परन्तु फरीसीयों की राह पर जा रहा था। मैं समझता था की मैं सही हूँ परन्तु मैं

गलत था। बिलकुल ही गलत। परमेश्वर ने मेरा हृदय निकाला उसे घुमा कर फिर से रख दिया। परमेश्वर ने मेरे ईश्वरज्ञान के चिथड़े बना दिये और अधिकतर तो निकाल के फैंक दिये। कुछ समय तक परमेश्वर मुझे रेगिस्तान में ले गया, ताकी मैं उस के बारे में और उसकी आत्मा के बारे में सीख सकूँ। फिर परमेश्वर ने मुझे सिखाया की मैं उस के बच्चों के समूह को उस से मुलाकात के लिए कैसे ले कर चलूँ ताकी वे उस का अनुभव कर सकें, उसकी अदभुत चंगाई की शक्ति और प्रेम का अनुभव कर सकें। मैंने जो सीखा है उसे आप के साथ बाँटना चाहता हूँ।

मैं इस पुस्तक को मसीहत के २२ वर्ष और जिस में से २० वर्षों तक पादरी की तरह कार्य कर ने के बाद लिखा है। परमेश्वर के लिए और कलीसिया को पूर्ण रूप से जीवन देने के बाद और इतने वर्षों तक उस की सेवा करने के बाद मैं इस नतिजे पर पहुँचा हूँ की अधिकतर मसीहत संस्थाएँ आत्मा में शून्य हैं और परमेश्वर की ओर ले जाने बजाए वे मुझे उस से दूर रखती रहीं। मैं इस बात से सहमत हो गया की मेरे धर्म ने मुझे निराश किया था। मैं निशब्द और गुस्से से भर गया। मैं गिरजाघर को छोड़ कर चले जाना चाहता था, मुझे उस से कुछ लेना देना नहीं था। परन्तु, परमेश्वर ने मेरे हृदय से बात की और कहा, "मार्क, यह मेरा गिरजाघर है, और मैंने इसे नहीं छोड़ा है। यदी मैंने इसे नहीं छोड़ा है, तो तुम भी नहीं छोड़ोगे। मैंने तुम्हें यहां बुलाया है और इसकी सेवा करते हुए तुम्हें अपना जीवन लगा देना है।" मुझे पता था की वह सच कह रहा है। मैं योना की तरह जानता था की परमेश्वर कि पुकार को जो उस ने मेरे जीवन पर रखी है, उसे मैं नहीं छोड़ सकता। इसलिए मैं वापस आ गया। कुछ और लिखने के लिए, कुछ और सिखाने के लिए और अपना जीवन देने के लिए वापस आ गया हूँ, ताकी आवश्यकता पढ़ने पर उस सच के लिए अपना जीवन का बलिदान भी दे सकूँ।

आत्मा में आगे बढ़ने के लिए एक बुनियाद :

जैसे जैसे मैं लिख रहा हूँ, वैसे वैसे, आप मेरी चोट, गुस्सा और पराजय को देख सकेंगे। परन्तु, मैं केवल तोड़ फोड़ कर बिगाड़ूँगा नहीं, परन्तु आत्मा के लिए नयी बुनियाद बताऊँगा। पत्थर फैंकना आसान है। परन्तु बनाना बहुत ही कठिन। मैं यह प्रार्थना करता हूँ की जब आप इस पुस्तक को पढ़ लोगे तो आप यह जान जाओगे की हम ने न केवल गलत बुनियादों को तोड़ा है परन्तु नयी बुनियादों को, परमेश्वर की मित्रता में बनाया भी है।

जब आप पढ़ रहे हैं तो मैं प्रार्थना करूँगा की यदी आवश्यक हो तो, परमेश्वर आप के हृदय को निकाल कर उसे पूरी तरह बदल कर दुबारा लगा दे। यह कष्ट भरा है, परन्तु, परमेश्वर को जानने की खुशी हर लाभ से बड़ कर है। मैं प्रार्थना करूँगा की यह पुस्तक आप

में वो आग लगाये, जो पहले कभी न लगी हो। जब आप इस पुस्तक को पढ़ कर रख दें तो आप वही व्यक्ति न रहें। आप अंधेरे के राज से हट कर उस के पुत्र के राज में आ जाएं।

ऐसा लगता है जैसे परमेश्वर की आत्मा की हर चाल एक आकार और धर्म में बदल जाती है, और परमेश्वर को फिर से कार्य करना है। ऐसा क्यों है? वह क्या है जो हमें वापस खेंचता है? क्या हम इन्हें पहचान कर इन्हें काट सकते हैं और उन्हें नये फट्टों से बदल सकते हैं, ताकी ऐसा पुल बन सके जिस के द्वारा हम आत्मिक दुनिया में लगातार आ जा सकें? मुझे लगता है की हम कर सकते हैं और यह पुस्तक इस ओर जाने का एक परिश्रम है। हम झूठ को पहचान कर उन्हें काटेंगे और नयी बुनियाद डालेंगे जो हमें लगातार आत्मिक दुनिया में आ झा सकें।

इस पुस्तक का प्रयोग कैसे करें :

१. मैं चाहूँगा की यह पुस्तक पहले आप स्वयं पढ़ें।
२. फिर मैं चाहूँगा की आप की कलीसीया के नायक इस पुस्तक को पढ़ें। इस में पादरी, बड़े लोग, छोटे पादरी, संडेस्कूल अध्यापक, घरेलू प्रार्थना समूह के नेता, कनिष्ठ कलीसीया के कार्यकर्ता और कोई भी जो कलीसीया का नायकत्व करता हो।
३. फिर मैं यह कहूँगा की आप का पादरी इस पुस्तक में से कुछ विषयों पर उपदेश दे, संडे स्कूल अध्यापक और घरेलू सभा नायक अपने समूह के साथ इस पुस्तक को तान माह में पढ़ें, ताकी आप की कलीसीया में सब यह जान सकें की हम परमेश्वर का अनुभव करने के लिए क्या खोज रहे हैं। जब तक हम यह न जान लें की हमारी दिशा क्या है, तब तक हम वहां नहीं पहुँच सकते।

इस पुस्तक में हर अध्याय के बाद प्रश्न दिये गये हैं, जिस से आप का समूह आपस में विवाद कर सके। हर सप्ताह अधिक से अधिक जितने अध्याय कर सकते हैं, करीए। कम से कम प्रति सप्ताह एक अध्याय पूरा करीए।

जो मैं परमेश्वर के अनुभव के बारे इस पुस्तक में बताता हूँ निजी रूप में और छोटे समूह के बारे में बता रहा हूँ, वह बड़े समूह में भी लागू होगा। इसलिए, पादरी कृप्या इन सिद्धान्तों और यंत्र कला को अपनी रविवार की सुबह की आराधना में प्रयोग करें।

आत्मिक जीवन को कक्षा तक पहुँचाने के बारे में मेरी पहले की पुस्तक का क्या? :

आप में से कुछ लोग यह जानते होंगे की मैंने अपनी पुस्तक, "कक्षा में आत्मिक जीवन ", में एक अध्याय इस विषय पर लिखा है। अब जो बताने जा रहा हूँ, वह इन पुस्तकों के भेद के बारे में बताएँगे। मेरे पहले की पुस्तक विद्वान लोगों के लिए लिखी गयी है। इसलिए सदी आप उसे पढ़ना चाहें तो पढ़ सकते हैं। उसे लिखते समय मैं अपने जीवन का परिक्षण भी कर रहा था। मैं ऐसे सचों को पहचान रहा था जिन के द्वारा हम जी सकते हैं। यह पुस्तक उस परिश्रम का फल है। यह उस व्यक्ति की जीवित अनुभव की कहानी है जो कक्षा में आत्मिकता को भरने वाली पुस्तक में बताया गया है। यह पुस्तक कहानी की तरह है। चाहे यह मुख्य बातों को बताती है, फिर भी यह उन भीतरी बातों को बताती है जो मुझे इन मुख्य विचारों की ओर ले आयी। यह पुस्तक अधिकतर दाहिने दिमाग की ओर वाली है। यह मुख्य रूप से उन लोगों के लिए लिखी गयी है जो मसीह के साथ चलते हुए नयी जगहों पर जाना चाहते हैं। पढ़ते हुए आशीष पाएँ।

हर अध्याय या भाग के अन्त में, मैं उन मुख्य विचारों की संक्षिप्त सूची दूँगा, जो उस अध्याय में पाए जाते हैं। कई भागों के बाद कार्य करने वाली बातें भी बतायी गयी हैं। अपने छोटे समूह की सभाओं में इन पर बहस करें।

छोटे समूह के नायकों के लिए कुछ पढ़ने लायक पुस्तकें। :

यदी आप किसी छोटे समूह के नायक हैं तो मैं चाहूँगा की आप इन पुस्तकों को पढ़ें, जैसे छोटे समूह में परमेश्वर का अनुभव करना, ग्रंथ दो। वह इसी पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। इस में हम बताते हैं की शिक्षकों को किस रीती से पढ़ाना चाहिए। हम एक अध्याय चित्र बताते हैं और एक कार्य पत्रा भी देते हैं, जिस के द्वारा आप पवित्रात्मा से मुलाकात की मुख्य चाबीयों के बारे में जानेंगे। इस में कुछ अध्याय हैं, जैसे "बहस करने के स्थान" और "प्रश्नों का प्रयोग"। इस बात का निवेदन है की पादरी अपने सण्डे स्कूल शिक्षकों ओर छोटे समूह के नायकों के साथ मिल कर इस पुस्तक का अध्ययन सप्ताह में एक बार करें।

परिचय में से कुछ मुख्य बातों पर पुनर दृष्टि:

१. इस पुस्तक में जो विचार बताए गये हैं वह निजी जीवन पर आधारित हैं, क्योंकि मैं जानता हूँ की कहानी के माध्यम से अच्छि शिक्षा दी जा सकती है।
२. यह पुस्तक उस व्यक्ति की कहानी है जो अपने मन में परमेश्वर के अनुभव को करना सीख रहा है और फिर छोटे समूह में इस का प्रयोग करता है।

३. यह फरीसीयत से हट कर सच में आत्मिक मुकाबले की ओर जाने की कहानी है।
४. यह आप के मन से उन झूठ को हटा देगी जो आप को फरीसीयत से बाँधे रखती है।
५. यह पुस्तक सच की बुनियाद डालेगी जो आप को आत्मिक मुकाबले में चलते समय सहारा देगा।
६. यदी कोई कलीसीया इस आत्मिक मुकाबले की ओर जाना चाहती है, तो यह सही होगा की हर व्यक्ति, छोटे समूह बना कर इस पुस्तक का अध्ययन करें और रविवार की सुबाह के प्रचार के समय में प्रयोग कर कुछ नये विचार डालें। इस से सेरी कलीसीया का ध्यान एक ही ओर केंद्रित होगा और इस से शांतिपूर्वक प्रगती होगी और ल७य की ओर जल्द पहुँच पाएँगे।

अध्याय एक

परमेश्वर का अनुभव करना

मैंने ठण्डि दिवार का टेका लिया। मेरा मन उत्तेजित हो गया। मैं कैसे विश्वास करते रहूँ? मैं सप्ताह दर सप्ताह विश्वास करता रहा, परन्तु कुछ न हुआ। केवल इस कमरे की ठण्डि दिवारें, जो मुझे चारों ओर से घेरे हुए थीं। मैं अकेला नहीं था। मेरे साथ उस कमरे में और भी लोग थे। वे भी प्रार्थना कर रहे थे, विश्वास कर रहे थे, उम्मीद कर रहे थे और इंतजार कर रहे थे। हम कब तक इंतजार करें? यदी परमेश्वर है, तो वह क्यों नहीं सुनता? उसे इतनीदेर क्यों लग रही है? इतना कुछ करना है, इतने लोगों को बचाना और चंगा करना है, तो हम यहाँ क्यों इंतजार कर रहे हैं?

उसने कहा था की हमें शक्ति के लिए इंतजार करना है। उपर से शक्ति। मैं शक्ति की आवश्यकता को समझता हूँ और मैं कार्य करने की आवश्यकता को भी समझता हूँ। मैं कार्य करने वाला व्यक्ति हूँ। मुझे कार्य करना अच्छा लगता है। और फिर भी हम यहाँ बैठे हुए थे, परमेश्वर का इंतजार करते हुए। मुझे लगा जैसे मेरा मन टूट जाएगा। मुझे लगा की मैं निकल कर बाहर भागूँ और सब को बताऊँ की मसीह हमारे पापों के कारण सलीब पर मुआ था, परन्तु आत्मिक शक्ति के बिना यह किस काम का, केवल इसके की कार्य करने के लिए तरस रहे मेरे मन को शांति मिलेगी?

नहीं, मुझे इंतजार करना चाहिए। और मैंने चालिस दिन और चालिस रातों तक इंतजार किया। एक महिने से अधिक समय तक मैं इस कमरे में बैठा रहा, बिना कुछ करे, केवल परमेश्वर को पुकारने के। पहले मुझे लगा की कुछ वहीं हो रहा है। परन्तु धीरे धीरे मैं जान ने लगा की इस समय में जब मैं अकेले था, तो कुछ हो रहा था। पहले, मेरी स्वयं इच्छा टूट चुकी थी, क्योंकि परमेश्वर का राज्य लाने के लिए मैं कुछ नहीं कर पा रहा था। हाँ, मैं चारों ओर भागते हुए चिल्ला चिल्ला कर कह सकता हूँ की वह राजा है, परन्तु इस से मैं कुछ नहीं कर सकता सिवाय अपनी देह को तसल्ली देने के? मुझे शक है। इस से कुछ लोग बदल सकते हैं, परन्तु परमेश्वर के राज्य को लाने के लिए यह कुछ नहीं कर सकता।

सो मैं इंतजार करतता हूँ और इंतजार करते हुए मैं यह पाता हूँ की मैं अपने जीवन और विश्वास की जड़ों की तैय तक पहुँच रहा हूँ। मैं कौन हूँ? क्या मैं विश्वासी हूँ? क्या मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ की वह इस ब्रह्माण्ड का जीवीता राजा और प्रभु है? क्या मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ, जैसा प्रभु ने कहा "न मेरी शक्ति, न मेरी ताकत से परन्तु मेरी

आत्मा के द्वारा?" क्या मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ की, "परमेश्वर का हाथ इतना छोटा नहीं की वह न बचा सके?" हाँ, मैं विश्वास करता हूँ। इसलिए मैं उस राजा की आराधना करता हूँ, जिसे विश्वास की आँखों से देखता हूँ और कुछ नहीं करता केवल विश्वास के इस इंतजार में की वह शक्ति मुझे मिलेगी, जिस के बारे में उस ने कहा है। क्या मेरे पास कुछ और इच्छा थी? नहीं, जब तक मैं उन सब को नहीं छोड़ देता जो मुझे प्यारे हैं, वह सब जिन पर इतने वर्षों से मैं विश्वास करता आया हूँ, वह सब जिन के लिए मैं इतनी इच्छा से कार्य करते आया हूँ।

मुझे विश्वासी बनना है। मुझे विश्वास करना है। बिना विश्वास के जीने के लिए कुछ भी नहीं है। इस के अलावा, क्या बीते हुए दिनों में उस ने अपने आप को विश्वास के लायक साबित नहीं किया? हाँ बार बार। इसलिए मैं विश्वास करूँगा मैं अपनी आशा को नहीं छोड़ूँगा जिस के कारण कितना महान इनाम है। मैं अपने आप को उस में रखूँगा, ताकी वह अपना राज्य स्थापित करने के लिए, जैसा चाहें, वैसे मेरा प्रयोग करें। मैं उस की आवाज को सुनूँगा और जो कुछ भी मुझ में उस के द्वारा है, उसकी आज्ञा का पालन करूँगा। (यानी मेरे भीतर काम कर रही उस की शक्ति के द्वारा)। मैं अपने आप को उसे सौंप दूँगा।

उसका राज्य है। वह उसे अपनी शक्ति से और अपने तरीके से उसकी स्थापना करेगा। यह हमारी समझ से बाहर है, क्योंकि उस के रास्ते हमारे रास्ते नहीं और उस के विचार हमारे विचार नहीं। मैं उस का उत्सव मनाऊँगा। वह मेरा प्रभु है। वह मेरा राजा है। मैं उस की आराधना करता हूँ। मैं उसी का इंतजार करता हूँ। सब से ऊँचा हमारा प्रभु धन्य है।

जब हमारा समूह दुबारा एकत्रित हुआ, तो हम प्रभु के साथ अपने अनुभवों को बाँटने लगे। उस समूह का हर व्यक्ति स्वतंत्रता से यह बता सकता था की प्रभु ने उस के मन में किया किया। जब मेरी बारी आयी, तो मैंने बताया की प्रभु मुझे प्रेरितों १ में ले गया। उस ने मुझे कहा की मैं एक चेला बन जाऊँ (पतरस) और उस कमरे में प्रवेश करूँ, जहाँ सब ऊपर के कमरे में, प्रचार में आगे बढने से पहले पवित्रात्मा का इंतजार कर रहे थे। वह मुझे जीवन के अगले भाग और प्रचार के लिए तैयार कर रहा था।

सामान्य तौर पर मुझे बदलाव पसन्द नहीं। मैं अपने आप को खोया हुआ और स्वयं में अविश्वासी पाता हूँ की मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैं नियंत्रण में नहीं रहता। यह मेरे मरे हुए कार्य होते हैं। मरे हुए कार्य किसे चाहिए? इन से सिवाय पीडा और दुख के कुछ नहीं मिलता और इस में परमेश्वर की इच्छा और रास्ता नहीं होता।

मैं अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा के प्रगट होने का इंतजार कर रहा था। मैं इंतजार नहीं कर सकता। मैं वब व्यक्ति हूँ, जो कार्य करना चाहता है। परन्तु प्रभु ने मुझे याद

दिलाया की प्रेरित १ में वे इंतजार करते हैं। इंतजार करना परमेश्वर को जवाब देना है और इस से पूरणता प्राप्त होती है (यानी प्रेरित २)। मैंने समूह को बताया की एक बार फिर परमेश्वर ने मेरे मन को चंगा किया है और उस में बस रहे डर और उत्सुक्ता को भी और अपने वचन और उसकी पवित्रात्मा के द्वारा मेरी सेवा करी है।

समीह को बाकी लोगों ने भी अपने अनुभव बताए। यह सब को मालूम था की उस छोटे समूह में हर व्यक्ति के मन में और जीवनों में बदलाव आ रहा था। बाईबल का अध्याय करना अच्छि बात है। पहले हम ने परमेश्वर के बारे में साखा। अब हम उस का अनुभव कर रहे हैं।

अध्याय एक की कुछ मुख्य बातों पर पुनर दृष्टि।

१. बाईबल का अध्यायन करना, अध्ययन से अधीन हैं। ये पवित्रात्मा के द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अनुभव है।
२. इस अध्ययन में एक उदहारण दिया गया है, की छोटे समूह में पवित्रशास्त्र के द्वारा परमेश्वर का अनुभव कैसे करें।

विचार करें और बहस करें

१. क्या मेरा ध्यान "परमेश्वर का अनुभव" पर है, या केवल "उस के बारे में जानने के बारे में?"
२. उस समय के बारे में लिख लें, जब छोटे समूह में आप ने पहली बार परमेश्वर का अनुभव किया।
३. क्या मैं इस बात से सहमत हूँ की आत्मिक मुकाबला आज के लिए है या मुझे इस युग में बाईबल को आधार बना कर जीना है?
४. छोटे समूह होने के नाते बाईबल की कहानी में प्रवेश करें। आप वह कहानी चुन सकते हैं, जो आप के समूह के लिए अच्छि है। वह प्रेरित १ या प्रेरित २ हो सकती है, या वह पहाडी पर उपदेश हो सकता है, या ५००० लोगों को भोजन कराना हो सकता है।

पहले बाईबल में से सही वचन पढ़ें। फिर चार चार लोगों के झुण्ड में बैठ जाएँ और हाथ जोड़ लें। हर कोई आँखें बंद कर के उस कहानी में डूब जाईए जो अभी पढी है। उस पर ध्यान लगाएँ ताकी आप उस दृष्य को देख सकें। वह जो देख रहा है, उस का अनुभव बताएगा। जब वह बता चुके तो अपनी दाहिनी ओर वाले का हाथ दबा दें, ताकी वह अपना

अनुभव बता सकें। हर व्यक्ति जब कह चुका हो, तो फिर से वापस बड़े छुण्ड में मिल जाएँ। यदी कोई कुछ कहना नहीं चाहता हो तो वह बिना कुछ कहे दाहिने खड़े व्यक्ति का हाथ दबा दें।

जब आप बाईबल के पात्र बन जाते हो, तो आप देखेंगे की परमेश्वर आप में कार्य करने लगता है और आप से बात चीत शुरू कर देता है। यह एक बहुमूल्य समय बन जाता है। डरीए मत। कोशिश करीए। आप को पसन्द आएगा।

जब बड़े समूह में आप लौटेंगे, तो कई लोग सोरे लोगों के साथ अपना अनुभव बाँटना चाहेंगे।

अध्याय दो

छोटे समूह का स्थान

प्रारम्भिक मसीही दिनों में मैंने कभी छोटे समूह की सभाओं की आवश्यकता को नहीं समझा। हम बड़े समूह में हर रविवार और हर बुद्धवार को मिलते थे और हर बार एक जैसी ही लगती थीं। हम गाते, एक उपदेश सुनते और घर लौट जाते। इस से अधिक कुछ नहीं होता था।

कई वर्षों बाद मुझे पता चला की प्रेरितों के काम में, दो समूहों के बारे में बताया गया है और इन दोनों समूहों का अलग कार्य था।

हमें अपनी आत्मिक सेहत बनाए रखने के लिए हर सप्ताह हमें इन दोनों सभाओं की आवश्यकता पड़ेगी। एक है उत्साह से भरा बड़ा समूह और दूसरा है संभालने वाला छोटा समूह। पहले दो स्थानों पर आराधनाएँ होती थीं, एक मंदिरों में, दूसरा घरों में (प्रेरित २०: २०; २: ४६)। इस तरह करके उन्होंने हमारे लिए एक उदहारण बनाया है।

बड़े समूह का उत्साह :

बड़े समूह का उत्साह (जो अधिकतर रविवार की सुबाह आराधना होती है), हम एकत्रित होते हैं की हम हमारे बीच में राजा की उपस्थिति का उत्साह मनाएँ, नाचें, स्तूती करें, आराधना करें, अपने आप को झुका दें और पादरी द्वारा कहे वचन को सुनें। यह वह स्थान है जहाँ हम एकत्रित हो कर चुनौती पाते हैं।

छोटा संभालने वाला समूह

घरेलू सबाएँ या सण्डे स्कूल या बाईबल स्कूल कक्षा ग्रह, वह स्थान हैं, जहाँ हम एकत्रित होकर प्रभु में बढ़ते हैं। यहाँ एक दूसरे को संभाला जाता है। यहाँ पर हम रो सकते हैं, चोट पहुँचा सकते हैं और चंगाई पाते हैं। यहाँ हर एक की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

सप्ताह में कितनी गिरजाघर की सभाओं में एक व्यक्ति को उपस्थित होना चाहिए? मैं एक बड़े समूह उत्साह और एक छोटे समूह में उपस्थित होता हूँ। इस के बाद मैं परिवार का समय और प्रचार का समय चुनता हूँ। गिरजाघर की कई सभाओं में उपस्थित होना मुझे ठीक नहीं लगता। मैं अपने मन में इस वक्त यह अनुभव करता हूँ की मुझे अपनी समीहत को गिरजाघर से बाहर जीवित रखना है।

मैं प्रोत्साहन देता हूँ की लोग इन दो सभाओं में उपस्थित हों। यह दोनों समूह उन की हर आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। इन सभाओं में भाग लेने के बाद मैं उन्हें प्रोत्साह देता हूँ की वे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कुछ समय बिताएँ और उन्हें घुमाने ले जाएँ। फिर उन्हें परमेश्वर के बताए अनुसार प्रचार के मार्ग पर चलना है।

जब हम छोटे समूह में परमेश्वर के अनुभव के बारे में बताते हैं, तो हम यह जान लें की यह वह स्थान है, जहाँ लोग निजी रूप में परमेश्वर का अनुग्रह पाने आते हैं। वे यहाँ कोई उपदेश सुनाने नहीं आए हैं। वे जीवन में अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने आए हैं। यदी उपदेश सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आत्मा से भरा हुआ हो, तो सप्ताह में एक उपदेश बहुत है। छोटे समूह में हमें इस बात का ध्यान देना चाहिए की हर एक व्यक्ति, मसीह के अनुग्रह का अनुभव करे, उस का एहसास करे और उस के कारण बदल जाए। परन्तु, कई छोटे समूह इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं और रविवार की आराधना की तरह करते हैं। इसलिए, वे अपने मकसद में कामयाब नहीं होते।

हमें यह समझ लेना है की छोटे समीह का कार्य बड़े समीह के कार्य से अलग है। निम्न सूची मे बड़े समूह और छोटे समूह के भेद बताए गये हैं।

बड़ा समूह	छोटा समूह
घोषणा करना	निजी स्पर्श
दावा करना	संभालना
प्रेरणा देना	दया
संयुक्त पर केंद्रित	एक व्यक्ति पर केंद्रित
उपदेश	बाँटना
तैयार उपहार में प्रचार का योगदान	लोग प्रयोग करते हैं उपहारों के कार्य करने में
अधिकतर लोग सुनते हैं	अधिकतर लोग बाँटते हैं

छोटे समूह की सभाओं को उत्साह आराधना के संग जोडना :

छोटे समूह की सभाओं को हम रविवार सुबह की आराधना के उपदेशों के साथ जोडना संभव है। यह हम उन पर आधारित प्रश्नों के द्वारा कर सकते हैं। यदी पादरी का उपदेश पत्नी को प्रेम करने के बारे में था तो हम छोटे समूह में पत्नी को प्रेम करने के क्षेत्र में हमारी उन्नति, संघर्ष, जीत और हार पर अपने अनुभवों को बाँट सकते हैं। यह एक दूसरे के

संग प्रार्थना, प्रोत्साहन और प्रचार का समय है। यह वह समय हो सकता है जब इस क्षेत्र में आप अपने सुझाव दे सकते हैं।

परन्तु हर आराधना को एक साथ जोड़ने की कोशिश न करें, वरणा यह वर्ष के ५२ सप्ताह में आज्ञापात्र बन जाएगी। आपके पास और कई क्षेत्र हैं जहाँ पर आप को एक समीह में रह कर निजी तौर से कार्य करना है। कुछ सप्ताहों को निजी निर्देश की ओर ले जाने के लिए रखीए।

जीवन भर शिक्षा पाना और चोटा समूह :

बाईबल स्कूल, मसीही विश्वविध्यालय और सण्डे स्कूलों को छोटे समूह की आवश्यकता पड सकती है। इस में वे अभिशिक्त आत्मा का बहाव, भविष्यवाणी, जीवन सुधार, निजी मुकाबले का प्रयोग कर सकते हैं। इस में वे कई रीती से विध्यार्थी की उन्नति और बदलाव के लिए पढाई के तरीके बल सकते हैं। हम इस पढाई के बारे में दूसरी पुस्तकों में देखेंगे। शिक्षकों को भी भविष्यवाणी करना आना चाहिए, ताकी वे कक्षा में आत्मिक बहाव ला सकें। आगे की पुस्तकों में हम यह भी पढेंगे की भविष्यवाणी करने वाला शिक्षक कैसे होना चाहिए और वह कक्षा में आत्मिक बहाव कैसे ला सकता है।

अध्याय दो के कुछ आवश्यक विचार :

१. पुराने गिरजाघरों में दो प्रकार की सभाओं के बारे में बताया गया है, एक बडा समूह और एक छोटा समूह।
२. हर मसीही को हर सप्ताह, एक बडी सभा और एक छोटी सभा में भग लेना चाहिए।
३. बडे समूह का कार्य है उत्साह और प्रोत्साहन देना।
४. छोटे समूह का कार्य है संम्भालना, चंगाई देना और ुन्नति पर ध्यान देना.
५. इस अध्याय में से कुछ और विचारों को जोडीए जो आप के लिए प्रमुख हैं।

कार्य :

इस बात का ध्यान दें की आप एक बड़े समूह और एक छोटे समूह में हैं जो आप को उपर बताई बातों पर ध्यान देता हो।

विचार करें और विवाद करें :

१. आपको क्या लगता है की आप को सप्ताह में कितनी आराधनाओं में उपस्थित रहना चाहिए?
२. हर सप्ताह सामान्य रूप से आप कितनी सभाओं में उपस्थित रहते हैं?
३. क्या आप इस बात से सहमत हैं की सप्ताह में एक बड़ी सभा और एक छोटी सभा काफी है?
४. क्या आप के जीवन में ऐसा समय आया है जब आप को ऊपर बताए सिद्धान्त ठीक नहीं लगे?
५. क्या आप को यह बात अच्छी लगी की सप्ताह में एक दिन आप को अपनी पत्नी के साथ बिताना चाहिए? आप के आत्मिक जीवन में इस की कितना आवश्यकता है?
६. हर सप्ताह आप को अपने बच्चों के साथ समय बिताना कितना आवश्यक है? क्या आप इस बात से संतुष्ट हैं की आप हर सप्ताह अपने बच्चों के साथ निर्धारित समय व्यतीत कर रहे हैं?
७. आत्मिक उन्नति के लिए प्रचार कितना आवश्यक है? आवश्यक है या नहीं?
८. क्या आप इस बात से सहमत हैं की छोटे समूह को एक दूसरे के साथ संपर्क रखना चाहिए? क्या जिस छोटे समूह में आप जाते हैं, क्या वहाँ और ताल मेल की आवश्यकता है?
९. क्या छोटे समूहों में खुलासा, स्वच्छता और लेखा होना चाहिए? क्या आप समझते हैं की आप में यह सब है? क्या आप इन में और उन्नति करना चाहेंगे? यदी हाँ, तो इसे कैसे करेंगे?

१०. **लिखाई का जवाब** - "प्रभु इस अध्याय के विचार के बारे में आप मुझ से क्या कहना चाहेंगे?" इस प्रश्न को अलग पत्रे पर लिखें और परमेश्वर के जवाब को भी लिख लें। यदि आप नहीं जानते की इसे कैसे करें तो, मार्क विर्कलर द्वारा लिखित परमेश्वर से बातचीत पढ़ीए। आगे के सप्ताहों में ऊपर बताए गये अनुसार लिखीए।

अध्याय तीन

छोटे समूह में आत्मा से मुलाकात का स्थान

छोटा समूह न उपदेश सुनने की जगह है न परमेश्वर के बारे में जानने की जगह, तो फिर यह क्या है? छोटा समूह वह स्थान है, जहाँ हम निजी रूप से परमेश्वर का अनुभव करते हैं, अपने घनिष्ठ मित्रों के बीच में, जो इस बात की परवाह नहीं करते कि वे कैसे लग रहे हैं और सच बोलने से नहीं डरते। यह वह जगह है जहाँ पर हम हँस सकते हैं, नाँच सकते हैं, रो सकते हैं और दुःखी हो सकते हैं। यह वह जगह है जहाँ पर हम वह हैं जो हम हैं। हम अपनी सफलताओं और असफलताओं को बाँटते हैं। हम एक दूसरे के इरद गिरद खडे होते हैं, एक दूसरे पर हाथ रखते हैं, एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं और एक दूसरे को संभालते हैं।

मुझे यह सिखाया गया था की आज के युग में आत्मिक बहाव नहीं है और न ही आत्मिक मुकाबला है। मेरा हृदय परमेश्वर को अनुभव करने के लिए व्याकुल था, परन्तु मुझ से यह कहा गया की, "अब हमारे पास बाईबल है, इसलिए हमें आत्मिक मुकाबले की आवश्यकता नहीं। न ही हमें इसे खोजना है, वरना हम भटक जाएंगे।" मेरे मन ने इन बातों को मान लीया, परन्तु मेरा हृदय नहीं मानता था। मेरा हृदय परमेश्वर का अनुभव करना चाहता था।

जिनोसको :

आखिरकार परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली और मुझे बताया की मैं कैसे खामोशी को तोड़ कर दूसरी ओर जा कर उसे कोज सकता हूँ। मैंने इस के बारे में, "परमेश्वर से बंधुत्व" और "परमेश्वर से बात चीत" नामक पुस्तकों में लिखा है। मैं इस के बारे में इस पुस्तक में नहीं बताऊँगा। हम परमेश्वर का अनुभव कर सकते हैं। यूनानी में "मैं जानता हूँ" के लिए शब्द है, "जिनोसको", जिसका अर्थ नये नियम की पुस्तक के मुताबिक यह है की की कोई पुरुष का अपनी पत्नी को शारीरिक रूप में जानना। इसलिए बाईबल के अनुसार अर्थ निकालने का मतलब है की किसी वस्तु का निजी रूप से अनुभव करना। मेरा प्रारंभिक मसीही जीवन इस से वंचित था। मुझे यह बताया गया था की भावनाएँ और अनुभव आत्मा से सम्बंधित हैं, और इस कारण न इन पर विश्वास करना चाहिए, और न इन्हें खोजना चाहिए। मुझे मुक्ति का अनुभव विश्वास में और बाईबल की सच्चाईयों को आधार रख कर बनाना था। निजी अनुभव का मुक्ति से कुछ लेना देना नहीं है। मेरे मसीही बनने के प्रारंभिक दिनों में यह

विचार की "आत्मा, मेरी आत्मा के साथ मिल कर इस बात की साक्षी दे की मैं परमेश्वर का बेटा हूँ", कुछ मायने नहीं रखता था। मुझे पवित्रात्मा के बारे में कुछ नहीं पता था। हमें मनुष्य की आत्मा या उसके हृदय के बारे में भी कुछ नहीं पता था। बाईबल में बताए गये, कई मनुष्य के मन की भवनाओं के बारे में भी कुछ नहीं पता था। (मनुष्य के मन की भावनाओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मेरी पुस्तक "मसीह में स्थायी होना", पढ़ीए।)

मेरा धार्मिक अनुभव साफ था। हमें यह नहीं भूलना है की पूरी बाईबल में परमेश्वर आत्मिक नजदीकता को शारीरिक नजदीकी से मिलाता है। एलिय्याह ने ईसाएलीयों से कहा "तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदी परमेश्वर यहोवा हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदी बाल हो, तो उसके पीछे हो लो।" लोगों ने उस के उत्तर में एक भी बात न कही (शराजाओं १८:२१)। फिर एलिय्याह ने एक परिक्षा रखी यह साबित करने के लिए की कौनसा भगवान अधिक ताकतवर है। उस ने यह परिक्षा रखी की प्रभु परमेश्वर स्वर्ग से आग बरसा सकता था। इस के बाद, "यह देख सब लोग मुँह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है।" (शराजाओं १८: ३९)।

भावमय अस्थितार्ता या बावमय स्वतंत्रता :

ऐसा नहीं की ऐसे लोग नहीं थे जिन्हें परमेश्वर की आराधना कर के आन्नद नहीं मिला। वे अपने हाथ उठते और ताली बजाते और चिल्लाते और नाचते और उत्तसुक हो जाते। मुझे यह बताया गया की ये लोग पागल थे। मैं कालेज में था, जब एक आराधना में मैंने पहली बार लोगों को ऐसा करते देखा था। मैं उन के चेहरे को ध्यानपूर्वक देखने लगा यह जानने के लिए की पागल लोग दिखते कैसे हैं। मैं विश्वास नहीं कर पा रहा था। उन के चेहरे आन्नद से और शांति से और उत्तसुकता से और जीवन से और चमक से भरे हुए थे। कुछ गलत था। मुझे पता था की पागल लोग ऐसे नहीं दिखते। ये लोग पागल नहीं थे। ये लोग परमेश्वर का अनुभव करने के लिए भावमय स्वतंत्र थे, पूरे शारीरिक रूप में, शरीर, प्राण और आत्मा से। उन की देह नाचती थी, उन के हृदय प्रेम करते थे, उन की आत्मा आराधना करती थी। वे अपने परमेश्वर के साथ पूर्ण रूप से जुड़े हुए थे। दूसरी ओर मेरे पास आदर्णीय धर्म था। मैंने इसे दिमागी स्तर पर रखा था, परन्तु मेरा मन परमेश्वर को जानने के लिए व्याकुल था (जिनोसको)।

परन्तु मुझे तार्किक सभ्यता और तार्किक कलीसीया के द्वारा यह सिखाया गया की आज कल आत्मिक मुकाबले नहीं होते। अब हमारे पास बाईबल है। अब हम बाईबल में बताये गये लोगों के आत्मिक मुकाबलों के द्वारा जी सकते हैं, परन्तु हम स्वयं रूप से आत्मिक मुकाबले नहीं कर सकते। यह अजीब हात है की बाईबल में परमेश्वर के लोग आत्मिक रूप में उससे मिलते रहे, परन्तु हम इस कलीसीया के युग में इसे पा नहीं सकते।

यादाह :

इब्रानी में "जानने" का शब्द है, "यादाह", जिस का अर्थ है निजी रूप से मुकाबला। यह नये नियम में बताये गये "जिनोसको" का सही भाग है। यह हमें परमेश्वर को जानने के बारे में बताता है और आदमी और औरत को जानने के बारे में और बच्चा पैदा करने के बारे में भी बताता है।

सही ज्ञान :

पौलुस, "सही ज्ञान" के बारे में बताता है (इफिसियों ४:१३)। एक रोचक वाक्यखण्ड, है न? उस ने केवल विध्या क्यों नहीं कहा? क्या "ज्ञान" और "सही ज्ञान", दोनो हैं? हो सकता है। फिर ज्ञान की तुलना में सही ज्ञान क्या है? क्या मैं यह कह सकता हूँ की ज्ञान निजी मुकाबले और आत्मिक मुकाबले से मिलता है बनिसबत थोड़ी जानकारी के?

लामाड, सिखाने की रीती :

दूसरे शब्द भी हैं। हम लामाड, के तराके से सीखेंगे। इब्रानी में लामाड का अर्थ है सिखाना या साखना। इब्रानी में सीखने और सिखाने के बीच कोई भेद नहीं है। यूनानी में ऐसा नहीं है। यूनानी में दिदासको का अर्थ है सिखाना और मनथानो का अर्थ है सीखना। पुराने नियम की अध्यात्म विध्या के शब्द कोश में यूँ बताया गया है: "यूनानी सीखने और सिखाने के लिए दो अलग शब्दों का प्रयोग करते हैं परन्तु इब्रानी दोनों के लिए एक ही शब्द का प्रयोग करते हैं क्योंकि ये परमेश्वर के भय से प्राप्त होती है। (व्यवस्था ४:१०; १४:२३; १७:१९; ३१:१२, १३)। इसे सीखने का मतलब है की परमेश्वर की व्यवस्था के साथ समझोता करना। (पृष्ठ ४८० ग्रंथ १)।

लामाड के सिखाने का तरीका जीवनचरिया और प्रयोग पर आधारित था। इस्राएलीयों को यह आदेश था की वे परमेश्वर की आज्ञाओं और विधियों को सिखाएँ (लामाड - व्यवस्था ६:१)। "तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ

प्रेम रखना। और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें। और तू इन्हें अपने बालबच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बाँधना, और ये तेरी आँखों के बीच टीके का काम दें। और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।" (व्यवस्था ६ : ५ - ९)। यह जीवन चर्या की शिक्षा थीजो की रिश्ते से निकल रही थी। इस में वस्तुओं का प्रयोग था (निर्गमन १२:२६; यहोशू ४:६), गीत (भजन ६०) और कहानी (व्यवस्था ६: २० - २५)।

छोटे समूह में लमाड के द्वारा परमेश्वर के अनुभव को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। छोटे समूह को निजी मुकाबलों के लिए ही तैयार किया गया है। परमेश्वर के साथ निजी मुकाबले और उसका अनुग्रह प्राप्त करना।

बारह चेलों को शिक्षा देने का यीशु का तरीका :

यीशु ने बारह के समूह को लिया और उन्हें अपने साथ रखा की वे उसे कार्य करते हुए देखें और उस का प्रयोग करें। हमें भी छोटे समूह में यही करना है। छोटा समूह शिक्षा देने, शिक्षा प्राप्त करने और उन्नती करने का स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ आप एक दूसरे के साथ और पवित्रात्मा के साथ और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रेम और शक्ति के साथ घनिष्ट परिचय रख सकते हैं।

दाहिना और बाँया दिमाग का अर्धगोल :

हाल ही में जो दिमाग के कार्य करने की रीती पर जो खोज हुई है, उससे भी यही पता चला है की यह लामाड के सिखाने के तरीके को अपनाता है। विज्ञानों ने यह खोज निकाला है की हमारे दिमाग के दोनों अर्ध गोलों का एक निश्चित कार्य है। बायें दिमाग के कार्य हैं, त्रकशास्त्र, विघटन, युक्ति, वाणी और परमपरा प्राप्त विचार। दाहिने अर्ध गोल के कार्य हैं, विचार, स्वपन, दर्शन, सहजज्ञान, भावना, स्पर्श, संगीत और दृष्य। पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए, हमें दिमाग के दोनों अर्ध गोलों का प्रयोग करना सीखना होगा। पिछले ५० वर्षों में हमने केवल अपने बायें दिमाग को काम करना सिखाया है, और दाहिने भाग को पूरी तरह छोड़ दिया था। अब हमें संतुलन बनाना है। नीचे चित्रों में बायें और दाहिने दिमाग को कार्य करते हुए दिखाया गया है।

दाहिना और बाँया दिमाग का अर्धगोल :

वाणी,	दीहिने शरीर पर काबू,	बायें शरीर पर काबू,
संगीत की पहचान,	गिनती में निपुण,	तीन दिशाई चित्र
लिखित भाषा	चित्र कला की पहचान	पढना विचार करना
भावना	सहजज्ञान	

क्या संसार कलीसीया को शिक्षा दे रहा है? :

मुझे ऐसा लगता है की संसार, कलीसीया को पूरी दिमाग की शिक्षा दे रहा है, (क्योंकि कलीसीया के कई भाग लड रहे हैं)। शिक्षा के क्षेत्र में हम आगे क्यों नहीं हैं? ऐसा क्यों है की ज्योती के बच्चों की तुलना में अंधकार के बच्चे, अधिक ज्योति पाते हैं?

मैं इन अध्यायों को जल्दि समाप्त कर रहा हूँ, क्योंकि मैं इस छोटी पुस्तक में विशेष बात तक पहुचना चाहता हूँ, और वह यह है की, "हम छोटे समूह में परमेश्वर से किस तरह मुलाकात कर सकते हैं?" यदी आप इन तीन अध्यायों पर अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो, मेरी इन पुस्तकों को पढिए, परमेश्वर से बंधुत्व, परमेश्वर से बातचीत, और शिक्षा ग्रह में आत्मिक जीवन उण्डेलना।

अध्याय तीन के कुछ मुख्य विचार :

१. छोटा समूह वह स्थान है जहाँ हम परमेश्वर का अनुभव करते हैं, वैसे तो बड़े समूह को भी ऐसा ही होना चाहिए।
२. यादाह और जिनोसको का अरेथ यह है की हमें परमेश्वर को करीब से जानना है।
३. हमें सीखना है की हम परमेश्वर, आत्मा, प्राण और शरीर के साथ कैसे कीबी बना सकते हैं।
४. सच्चे ज्ञान का अर्थ है की आत्मिक ज्ञान, विध्योपार्जक नहीं।
५. लामाड की शिक्षा सिखाने और सीखने से सम्बंधित है, जिसमें जीवन चर्या और प्रयोग से कार्य किया जाता है। विध्योपार्जक नहीं, यह कुछ और अधिक है।
६. चले बनाना, यीशु का तरीका था। इस में देखने और करने की आवश्यकता थी।
७. दिमाग के बाँये और दाहिने अर्ध गोलों का प्रशीक्षण कर के यह पता चला की हमें दिमाग के दोनों अर्ध गोलों का प्रयोग करना है, किसी एक का नहीं।
८. हम इस बात पर कैसे पहुँचे की संसार कलीसीया को सिखा रहा है? क्या अंधकार में ज्योति से अधिक रौशनी हो सकती है?
९. इस अध्याय से कुछ और विचारों को जोड़ो जो आप को विषेश लगते हैं।

कार्य :

"मैं इस बात का पश्चताप करता हूँ की मैंने इस बात पर विश्वास किया की बाईबल केवल पढ़ने के लिए है, बजाए अनुभव करने के। परमेश्वर मैं आपको इमानुएल मानता हूँ, परमेश्वर हमारे साथ, जो मेरे मन में रहता है, और लगातार, नदी की तरह बहता है। इस बहाव के लिए आप का धन्यवाद है।"

विचार करें और बैहस करें :

१. क्या हमें परमेश्वर की आवाज प्रति दिन सुननी है?
२. क्या तुम परमेश्वर की आवाज प्रति दिन सुनते हो?
३. क्या हमें अपने मसीही जीवन के एक भाग के रूप में परमेश्वर का अनुभव करना है, या हमें केवल उस के बारे में सीखना है?
४. यदी हमें उस का अनुभव करना है तो हम अपने अनुभव को कैसे पहचान पाएँगे? क्या हम उन पर भरोसा कर सकते हैं? क्या हम उन से ईश्वरज्ञान पा सकते हैं? क्या हम अनुभवों के कारण, पवित्रवचन का सही अनुवाद कर सकते हैं? सच को ढूँढने में ये कितने कीमती साबित होंगे? क्या सच को स्थापित करने के लिए यह सतंब का कार्य कर सकते हैं?
५. क्या आप परमेश्वर का अनुभव करने के लिए भावनाओं से मुक्त हैं? क्या आप को परमपरा या अध्यात्म विध्या उसका अनुभव करने से रोक रही हैं?
६. क्या हमें आराधना करते समय, स्वतंत्रता से शरीर का प्रयोग करना चाहिए? यानी क्या हम परमेश्वर के सामने नाच सकते हैं, ताली बजा सकते हैं, छुक कर आराधना कर सकते हैं, खुशी से चिल्ला सकते हैं? क्या आप यह सब करने के लिए स्वतंत्र हैं?

क्या होगा यदी कलीसीया, अपने डर, परमपरा और ईश्वरज्ञान से बंधी रहेगी, और संसार किसी फुटबाल मैच को स्वतंत्रता से देख रहा होगा और अपने अनुभव का स्वतंत्रता से प्रदर्शन कर रहा होगा, अपनी पसंदीदा टाम की जीत की खुशी में चिल्ला रहा होगा? कौन अधिक खुशी, आनंद, जीवन, विश्वास, उम्मीद, जता रहा है, वह मसीही जो गिरजाघर में बैठा हुआ है या वह गैर मसीही जो उस मैच खेल को देख रहा है? क्या हम उस गैर मसीही को यह बता सकते हैं की हम वो हैं जिन के पास प्रचूर जीवन है, यदी हम उसे शारीरिक रूप में, या भावना से या आत्मिक रूप में न बता सकें तो, कैसे बताएँगे?

७. मुझे यह बात ठीक लगी की मैं एक प्रयोग करने वाले समूह के साथ जुड़ गया और आराधना करने के लिए कुछ शारीरिक हिलना डुलना सीख लिया। हम ने कुछ आसान नाच साखे और हाथों और शरीर का हिलाना भी, जिस का प्रयोग परमेश्वर की आराधना करने के लिए स्वतंत्रता से करने लगा। क्या आप इसे लाभदायक समझते हैं? क्या आप को ऐसा समूह चाहिए? क्या आप की कलीसीया में कोई ऐसा व्यक्ति है जो आप को आसान नी से हिलना डुलना सिखा सके, ताकी आप इस का अनुभव कर सको? हमारे पास कलात्मक आराधना पर एक पुस्तक है, जिसे आप खरीद सकते हैं।

८. प्रश्न उत्तर - "प्रभु आप मुझ से इस अध्याय के विचार के बारे में क्या कहना चाहते हैं?"

अध्याय चार

आज रात हम क्या सिखाएंगे?

प्रश्न: हम इस सप्ताह क्या सिखाएंगे?

उत्तर: वही जो हमने पिछले सप्ताह सिखाया था, और उससे पिछले सप्ताह और उससे पिछले सप्ताह।

तुम क्या कह रहे हो, क्या तुम पागल हो? नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है की हमें एक विषय को कई सप्ताह तक या कई महिनों तक पढ़ना चाहिए, क्योंकि हमारे जीवन में बदलाव लाने में समय लगता है।

एक वर्ष में एक अध्याय :

मुझे यह पता चला है की मुझे किसी क्षेत्र में उन्नती करने के लिए एक वर्ष का समय लगता है। इसलिए मैं अपने निजी जीवन में किसी एक विषय पर एक वर्ष लगाता हूँ। मैं उसे हर दिशा से देखता हूँ। मैं उससे सम्बंधित पवित्रवचन को खोजता हूँ। मैं प्रार्थना करता और प्रश्न उत्तर लिख लेता हूँ (परमेश्वर से बात चीत)। मैं उस विषय पर दस से बीस किताबें पढ़ लेता हूँ। मैं उन से प्रयोग करता हूँ। मैं कोशिश करता हूँ और विफल होता हूँ तो अपनी गलतीयों को लिख लेता हूँ और उन से जो सीखा है उसे भी लिख लेता हूँ। मैं अपनी उन्नती के लिए एक लेखा रखता हूँ। मैंने जो सीखा है और अपनी उन्नति को दूसरों के साथ विवाद करता हूँ और मैं यह सब तब तक दौहराता हूँ जब तक मैं उस विषय में निपुण नहीं हो जाता और मेरा जीवन बदल नहीं जाता।

जो मैं किया करता था यह उस से बिल्कुल अलग है। पहले मैं किसी एक विषय पर केवल एक दो दिन या एक सप्ताह बिताता था, और फिर आगे बढ़ जाता था। इस का नतीजा? केवल दिमागी ज्ञान प्राप्त होता था, पर जीवन नहीं बदलता था। मैं इस से ऊब गया था। यह किसे चाहिए? परमेश्वर को इस कि आवश्यकता नहीं। दिमागी ज्ञान से केवल शैतान संतुष्ट होता है।

मेरी मसीहत शैतानी बनते जा रही थी, जहाँ गुस्सा, और संघर्ष और जलन और भेद भाव उत्पन्न होने लगे। यह २३०० मसीही संस्थाओं कि लड़ाईयों से पता चलता है।

इसलिए मैंने दिमागी ज्ञान को त्याग दे कर स्वयं कि उन्नति पर ध्यान देने लगा, ताकी मैं परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा अपने जीवन में बदलाव ला सकूँ। मैंने परम्परा और सभ्यता को

तोड आया और कहने लगा, मसीहत दिल से दिल का रिश्ता है, बजाए दिमाग से दिमाग के, और आप के मन में जो परिवर्तन हो रहा है उससे मुझे मतलब है।

इसलिए जब मैं छोटे समूह का नेतृत्व करता हूँ तो मैं ईश्वरज्ञान को परम्परा के रूप में नहीं सिखाता। मैं परमेश्वर के बारे में बताने नहीं आता बरन परमेश्वर से मुलाकात करवाने आता हूँ। यदी हमने इसे सफलता पूर्वक कर लिया है तो हमारी छोटे समूह की सभा सफल हुई है। यदी छोटे समूह के लोगो ने परमेश्वर की आत्मा को बहते हुए अनुभव नहीं किया है, इस का यह मतलब है की हमारी सभा असफल हुई है।

हर रात का विषय है, "परमेश्वर से मुलाकात" :

आज रात का हमारा विषय क्या है? परमेश्वर से मुलाकात। एकत्रित हुए लोगो में पवित्रात्मा का बहना और उस के जीवन को हमारी आत्माओ में समाना। जब हम पवित्रात्मा से मिलते हैं तो हम उसकी आत्मा में भर कर बदल जाते हैं। (१ कुरिं ६: १७)।

क्या हमारे जीवन में ऐसा कोई क्षेत्र है जहाँ हमें पवित्रात्मा की शक्ति को का अनुभव कर के बदलाव लाना है? यदी हाँ, तो इसी विषय पर हम बात करेंगे। हम इस पर कितना समय बिताएंगे? जब तक हम में बदलाव नहीं आ जाता। क्या यदी हम को इस पर छः महिने लग जाते हैं? तो जल्दि क्या है? ऐसे विषय को पढ कर क्या करना है, यदी हम उसे पढ कर अपना जीवन नहीं बदल सकते? तुम्हें अपना जीवन को बदलने के लिए और इस संसार को बदलने के लिए परमेश्वर की शक्ति की आवश्यकता है।

ईश्वर ज्ञान दो दिन में पा सकते हैं परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए दो दिन नहीं, दो महिने या दो वर्ष भी लग सकते हैं।

हर विषय के लिए तीन से छः महिने का समय :

निजी तौर से मैं यह कहूँगा की दूसरे विषय पर जाने से पहले, हर विषय पर तीन से छः महिने तक का समय बिताईये। और यह भी अच्छा होगा की अगला विषय जो आप ने चुना है उस का ताल मेल पिछले विषय से हो।

जल्दि किस बात की है? परमेश्वर ने कहा है की उस का राज शक्ति या ताकत से नहीं बरन उस की आत्मा से स्थापित होता है। इसलिए मैं अपनी ताकत या तेजी या शक्ति या ज्ञान से मतलब नहीं रखता । मुझे दिलचस्पि केवल परमेश्वर की शक्ति पर है जो उपस्थित छोटे समूह के लोगो पर होनी चाहिए।

मेरी शिक्षा देने के तरीके पर दोष भवना से संघर्ष :

मुझे जो सिखाया गया उससे कितना अलग है। मुझे यह बताया गया की हम सूचना, विषय, दिनांक, बाइबल ज्ञान, धर्म पर शिक्षा देते हैं। जब मैं इन बातों को पीछे रख कर, कक्षाग्रह में सीधे पवित्रात्मा लाने की कोशिश करने लगा, तो मैं दोष भवना से भर गया। मुझे यह लगता की यह लोग पैसे दे कर परमेश्वर के बारे में जानने के लिए आ रहे हैं। फिर मुझे ऐसे लगता की यह इसलिए आ रहे हैं की ये परमेश्वर का अनुभव कर सकें। औन सा विचार सही था? कौन सा विचार परमेश्वर की ओर से था? कौन सा विचार शैतान की ओर से था? मैंने यह निर्णय लिया की शैतान चाह रहा था की मैं केवल सूचना देता रहूँ। परमेश्वर चाहता था की मैं उन को उसका अनुभव करवाऊँ।

बाइबल में सब से पहले ज्ञान शब्द का प्रयोग :

पहली बार ज्ञान शब्द का प्रयोग बाइबल में उत्पत्ति २: १७ में पाया जाता है, जहाँ परमेश्वर कहता है, "पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" क्या यह दिलचस्प बात नहीं की हमें अच्छे बुरे के ज्ञान का वृक्ष का फल नहीं खाना है? उस वृक्ष के फल को खाना मना था। परन्तु मेरी सारी आत्मिक शिक्षा में मुझे प्रतसाहित किया गया की मैं उस में से खाऊँ।

हमारी शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है आत्मिक सच्चाई :

१ तिमोथियुस १: ५ के द्वारा परमेश्वर ने मुझे यह दिखाया, "आज्ञा का सारांश यह है की शुद्ध मन और अच्छे विवेक और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।" मैं इसलिए सिखाता हूँ की इससे प्रेम, अच्छा विवेक और गहरा विश्वास उत्पन्न होता है। यह सब आत्मिक सच्चाईयाँ हैं, सर की नहीं। यह आत्मा से बहती हैं, दिमाग से नहीं। मुझे दिमाग को नहीं पढ़ाना था, बरन हृदय को पढ़ाना था। मसीहत दिल से दिल का मेल है। परमेश्वर मुझे बता रहा था की हर बाइबल शिक्षा का लक्ष्य यह है की जितने लोग एकत्रित हुए हैं, उन में आत्मा की सच्चाईयों को उत्पन्न करना है।

अब दोष भावना नहीं रही :

मैंने झूठ को त्याग कर उन लोगों को जो सूचना प्राप्त करने आए थे, उन्हें परमेश्वर से मुलाकात करवाने लगा। अपनी दोष भावना को उतार भेंकने लगा। यदी मैं यह बात मान लूँ की जो मैं सिखा रहा हूँ वह सच है तो मुझ में कोई दोष भावना नहीं। मैं कालेज गया और कई डिगरीयाँ हासिल कीं, परन्तु जैसे एक व्यक्ति ने मुझ से कहा था की, "कालेज से निकल कर ही सच्ची पढाई प्रारम्भ होती है। "

अधिकतर बातें की परमेश्वर किसी विश्वासी के जीवन में क्या कार्य करता है, यह मैंने कक्षा के बाहर ही जाना है। जो मैंने सिखा, उस में से अधिकतर बातें जिन के कारण मैं सफल हुआ हूँ, वह मैंने कक्षा के बाहर ही सीखा है।

परम्परागत पढाई, आत्मा को मारती है :

स्कूल में क्या होता है? मुझे बैठने को कहा जाता है, खामोश होकर अध्यापक या अध्यापिका, जीवन के बारे में जो पढा रहे हैं, उसे सुनने को कहा जाता है। परन्तु मेरे मन के अन्दर के जीवन के बारे में क्या? क्या इस का कोई तात्पर्य नहीं? यदी मुझे जीवन के बारे में जानना है, तो मेरे जीवन से क्यों न प्रारम्भ करें? मेरे जीवन की क्यों न उन्नती करें? मुझे शांत रहने को क्यों कहते हो, जबकी आप उस जीवन के बारे में बता रहे हो जिसका आज के रिश्तों से कुछ लेना देना नहीं है? क्या इससे मेरा लाभ होगा? क्या इससे मैं उन्नती पाऊँगा?

मैं आप को आंकडे बताता हूँ। पाँच वर्ष की आयु में, इससे पहले की कोई बच्चा स्कूल जाने लगे, उसकी उत्पादक शक्ति बहुत अधिक होती है। सात वर्ष की आयु में, जब वह कक्षा में दो वर्ष बिता लेता है, तो केवल १०% की उत्पादक शक्ति अधिक होती है। जब तक हम युवा बनते हैं, केवल २ % की उत्पादक शक्ति अधिक होती है। मुझे इसलिए स्कील नहीं पसन्द था। यह मेरे अंदर के उत्पादक को मार दिया था। इसने मेरे मन और आत्मा को मार दिया था। मैं नाष हो गया। मैं मर गया। मैं एक वस्तु था, जिसे सूचना से भरा जा रहा था। मैं कोई व्यक्ति नहीं था, मैं एक वस्तु बन गया था। तो हमारी परम्परा में ५० वर्षों से क्या होते आ रहा? हम ने हर स्थर पर हर क्षेत्र में अपने आप को मार डाला है।

मैं इस झूठ को नाकारता हूँ की मेरे विध्यार्थि परमेश्वर के बारे में जानने को लिए आते हैं। नहीं, मेरे विध्यार्थि उस हृदय को लेकर आते हैं, जिस में इच्छा है, ऐसी इच्छा जो केवल परमेश्वर की आत्मा ही पूरा कर सकती है। मैं जवाबदेह हूँ, यदी मैं उनके हृदय की इच्छा को पूरा नहीं कर पाता हूँ और उन्हें उन के जीवन के उत्पादक से मिलाकर उन के जीवन को

चंगा और उसकी उपस्थिती से गर्म न कर दूँ तो। क्या बुलावा है। क्या मकसद है। लोगों को सप्ताह दर सप्ताह पवित्र में पवित्र का स्पर्श कराना ताकी वे जीवते परमेश्वर का स्पर्श कर सकें।

इसलिए यह प्रश्न की, "आज रात मैं क्या सिखाऊँगा?" को बदल कर, "प्रभु, आज रात आप हम में किस तरह समाने वाले हैं? आप क्या कहना चाहते हैं? आप क्या करना चाहते हैं? यह प्रश्न है।

आध्याय चार के कुछ मुख्य विचार :

१. हमें एक विषय पर तब तक टिके रहना है, जब तक हम उसे पूरी तरह सीख न लें। इसकेलिए तीन महिने से एक वर्ष लग सकते हैं।
२. हमें सीखने के लिए जल्दबाजी नहीं करनी है। हम जीवन भर शिक्षा पाने में विश्वास करते हैं।
३. स्कूली शिक्षा से अधिक लाभ नहीं। जीवन के बदलाव से अधिक लाभ है।
४. हर लक्ष्य और जीवन के हर पल का मकसद और हर उपदेश और हर बाईबल कि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है, "परमेश्वर का अनुभव करना।" परमेश्वर के अलावा कुछ भी कार्य करना मरा हुआ कार्य है।
५. बजाए उसके बारे में सीखने के लोग सच में परमेश्वर का अनुभव करना चाहते हैं।
६. बाईबल भी यही बताती है की शिक्षा का लक्ष्य है आत्मा की सच्चाई।
७. पारम्परिक स्कूली शिक्षा, आत्मा को मारती है।
८. अध्याय के कुछ और विचार लिखीए जो आप को मुख्य लगते हैं।

कार्य

"मैं इस बात का पश्चताप करता हूँ की मैंने यह माना की लोग परमेश्वर के बारे में पढने आते हैं। प्रभु, मैं इस सच को अपनाता हूँ की लोग आप का अनुभव करने आते हैं, सीधे और निजी स्तर पर। मुझे मेरे पापों से साफ करो और मुझे बदल दो, यही मेरी प्रार्थना है।"

"मैं पश्चताप करता हूँ की मैंने विषयों को जल्दबाजी से पढ़ा और उन पर उतना समय नहीं बिता पाया की वे मेरे जीवन में बदलाव लाते। प्रभु मुझे और आगे बढ़ाएँ। आप की तरह मुझे हमेशा के जीवन में रहने दें। मैं यह बात समझ पाऊँ की जल्दबाजी की आत्मा, मसीह की आत्मा नहीं हैं। मैं इस सच को मानता हूँ की कार्य का प्रारम्भ करना लक्ष्य के जितना ही मुख्य है।"

"मैं इस बात से पश्चताप करता हूँ की मेरा शिक्षा देने का लक्ष्य स्कूली ज्ञान था। प्रभु, मैं अब जान गया हूँ की विश्वास, उम्मीद, प्रेम और साफ विवेक ही लक्ष्य हैं। प्रार्थना करता हूँ की मुझे बदलीए। मैं केवल इन लक्ष्य की ओर बढ़ने की शिक्षा दूँ।"

विचार करें और बैठस करें :

१. जब आप किसी विषय में डूब जाते हैं तो आप को उस क्षेत्र में बदलाव लाने के लिए कितना समय लग सकता है? तीन महीने, छः महीने या एक वर्ष?
२. आप क्या इस बात से सहमत हैं की दूसरे विषय पर जाने से पहले, किसी एक विषय में डूबना चाहिए? क्या आप ऐसा करना चाहते हैं? यदि हाँ, तो आप को आप के जीवन में किस तरह के बदलाव लाने होंगे? क्या आप इन बदलाव को लाने के लिए तैयार हैं? यदि आप बदलाव लाना नहीं चाहते, तो आप का परमेश्वर के प्रति आत्म स्मर्पण का क्या और उसके रास्तों और आप के जीवन के बारे में उसकी योजनाओं का क्या?
३. क्या आप इस बात से सहमत हैं की हमारी शिक्षा का लक्ष्य आत्मिक सच्चाईयों को जानना होगा, जैसे की १तिमोथियुस १:५ में बताया गया है? आप इन को छोटे समूह में किय तरह होते हुए देख सकते हैं?
४. क्या आप इस बात को अपनाने में दोष या संघर्ष की भावना अनुभव करते हैं? क्या प्रेम, शुध मन, अच्छा विवेक और एक निष्कपट विवेक और स्वच्छ विश्वास काफी है, बैईबल की पढ़ाई के लिए? क्या हमें इन से अधिक लक्ष्यों को पाना है? यदि हाँ, तो कौन से? इन जोड़े हुए लक्ष्यों का क्या नतीजा होगा?

५. शिक्षा का आप पर और आप की आत्मा पर क्या असर हुआ?

समूह के चारों ओर घूमो और अपने जीवन से किसी साक्षी को बताओ, जिस से शुद्ध मन, अच्छा विवेक और एक निष्कपट विवेक और स्वच्छ विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो सके। अंत में एक समूह के रूप में परमेश्वर के लिए एक उत्साह गीत सुना कर करीए।

६. पत्राचार - "प्रभु, इस अध्याय के विचारों के विषय आप मुझ से क्या कहना चाहते हैं?"

अध्याय पाँच

आज रात परमेश्वर क्या करना चाहता है?

मैं कैसे जान पाऊँगा की परमेश्वर आज रात इस छोटे समूह में क्या करना चाहता है? मैं कैसे जानूँगा की अगले तीन से छः महिनो तक परमेश्वर हमारा ध्यान किस विषय पर डालना चाहता है?

हम उस से पूछ सकते हैं, यह समझ कर की हम उस से बातें कर रहे हैं। मैं उन से पूछता हूँ। मैं बैठ कर उन से अपने दिल खोल कर बातें करता हूँ, और जो बात चीत होती है, उसे लिख लेता हूँ। "प्रभु, हम कहाँ पर हैं? आप इस समय हमारे बीच क्या स्थापित करने जा रहे हैं? आप हमारे हृदयों में आज रात क्या स्थापित करना चाहते हैं?"

परमेश्वर इन प्रश्नों का उत्तर देगा और देता है, उनको जो विश्वास से मांगते हैं। उसे जो लिखना नहीं जानते, वे इस पुस्तक को पढना छोड दें और परमेश्वर से बंधुत्व और परमेश्वर से बात चीत नामक पुस्तक पढीए।

भविष्यवाणी की सच्चाई को कक्षा में बाँटना :

हर सप्ताह मुझे इन प्रश्नों को जवाब मिलते हैं। उदहारण के लिए, यदी कक्षा में भजन संहिता के १५ अध्याय आज रात पढाने हैं, तो मैं प्रार्थना पूर्वक उन को पढता हूँ, और परमेश्वर से कहता हूँ की वह मुझे उन पर दैवी दर्शन दें। हम पूरे १५ नहीं कर पाते हैं। परमेश्वर उन में से तीन या चार को चुनता है, जो हमारे मनो से भविष्यवाणी कर रहे हैं। मैं इन को कक्षा के साथ बाँटूँगा। मैं विध्यार्थियों से भी कहूँगा की वे अपने विचार इन पर डालें।

मैं उन के साथ अपना जीवन बाँट रहा हूँ, और वे अपना जीवन मेरे साथ बाँट रहे हैं। हम कक्षा में अपने जीवन बाँटते हैं। परन्तु क्या यदी हम पूरे १५ भजन संहिता नहीं कर पाते हैं? ठीक है। हमने वह पढा जो परमेश्वर ने इस दिन हम पर उजागर किया है। हमें यही करना है। हम नदी के जीविते पानी को पीते हैं, किसी पुराने सडे हुए घडे का नहीं। हम उस सच को हमारे बीच इस पल में पूरा करते हैं, सारा सच नहीं।

बाँयें दिमाग की माँगों को अपने ऊपर डालना :

बाँया दिमाग, अलग, विश्लेषण सम्बंधि मांगे हम पूरी करते हैं। हृदय कभी मांगता नहीं, हम सब सच जानते हैं, केवल वही सच जो हमारे जीवन में इस समय हैं। यही सच हमारे मनो में रहता है। यह अच्छा है की हम लाभ दायक, जीवन बदलने वाला, स्वतंत्र सच को पाएँ। आज नए सिधांतों को शायद खोजना पडे। हो सकता है की पुराने सिधांतों को नए विचारों की आवश्यक्ता है। यह हमें कौन देगा? हमारे मनो में रहने वाला जीवीता सिर्जनहार, यदी हम अपने आप को उसे सौंपें। वह हमारा हाथ पकड कर हर दिन हर कदम हमारी अगुवाई करेगा।

बजाए सिधांतों की सूची के, शायद जीवन का अर्थ सिर्जनहार के साथ हमारा रिश्ता है। कक्षा के विध्यार्थि एक जीवीत मुलाकात है पवित्रात्मा, हमारे मनो, और हमारे चारों ओर के लोगों के मनो के साथ और यह केवल एक पढने की रीती नहीं है। कक्षा शायद किसी व्यक्ति के साथ एक मुलाकात है। हो सकता है की कक्षा उस व्यक्ति को अनुमती दे रही है की वह हमारे बीच आ कर हमारे जीवन के साथ मुलाकात करे।

जब हम क्रम से बंध जाते हैं तो हमारी उत्पादक्ता मर जाती है, जीवन समाप्त हो जाता है, उत्सुक्ता गायब हो जाती है। जब हम उसे आमंत्रित करते हैं की वह आकर हमारी अगुवाई करे, तो जीवन लौट आता है, स्वैच्छिक्ता लौट आती है, पवित्रात्मा का अभिषेक लौट आता है।

परमेश्वर, क्या मैं आप की नदी पर विश्वास कर सकता हूँ? :

क्या हम उस पर विश्वास कर सकते हैं? क्या हम उस के बहाव पर विश्वास कर सकते हैं? उस ने मुझ से कहा, "मार्क, यदी तुम अपना ध्यान मुझ पर लगा कर स्वैच्छिक्ता में बने रहो, तो मैं तुम्हारे ध्यान लगाने के लिए वह बात बताऊँगा जो मैं चाहता हूँ की तुम उस पर ध्यान लगाओ।" क्या मैं इस पर विश्वास कर सकता हूँ? क्या मैं उस पर विश्वास कर सकता हूँ? मुझे अपने दिमाग पर, जीवन की ओर मेरे दृष्टिकोण पर और मेरी शिक्षा पर इतना विश्वास करने की आदत पढ गयी है। क्या मैं उस पर विश्वास कर सकता हूँ? उसने मुझ से फिर बात करी, "मार्क, तुम अपनी आत्मविध्या से कई अधिक गुणा मेरे पवित्रात्मा के बहाव पर जो तुम्हारे मन में हो रहा है, उस पर विश्वास कर सकते है।" यदी मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ, तो इस के कारण मेरे जीवन में कई बदलाव आएँगे। क्या मैं इस बात पर विश्वास

करता हूँ की यह शब्द परमेश्वर की ओर से हैं? क्या मैं अपने मन पर विश्वास कर सकता हूँ? क्या मैं इस पर अपने दिमाग से अधिक विश्वास कर सकता हूँ? मैंने यह निश्चय किया की अपने विश्वास की ओर झुकता हूँ। "परमेश्वर का कार्य विश्वास करने योग्य है....।" मैं विश्वासी बनूँगा। वे मुझे मूर्ख कह सकते हैं, परन्तु मैं विश्वासी बनूँगा। सायद हमें इसलिए बनाया गया की हम जीवन के वृक्ष का फल खायें। शायद जीवन के वृक्ष के फल को खाने से हम अधिक सच्चाई को जाने, जितना की अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष के फल को खा कर न पा सकें। शायद मुझे अदन की वाटीका की रूप रेखा की ओर लौटना चाहिए।

नदीयों के बारे में कुछ सच्चाईयाँ :

हम मसीही के मन की वदी के बारे में जानते हैं की वह कहाँ से आता है। यूहन्ना ने कहा की वह पवित्रात्मा है (यूह ७: ३७ - ३९), और प्राकाशितवाक्य में उसने उसे परमेश्वर के सिंहासन से बहते हुए देखा (प्रका २२:१)। मैं विश्वास करता हूँ की यदी मैं नये नियम की आज्ञा को की अपनी आँखों को यीशु पर टिकाए रखूँ, को मानूँ (इब्र१२:१,२) और अपने मन में परमेश्वर की नदी के बहाव पर ध्यान लगाऊँ, तो मैं परमेश्वर को खोज लूँगा। यदी नहीं तो इस का अर्थ यह हुआ की मसीहत एक झूठ है। क्या मेरी आत्मा में उस की अपनी कोई छोटी नदी है? हाँ, इसी के कारण, मैं यीशु के साथ रहने के लिए ध्यान लगा सकता हूँ। इसलिए मैं अपनी आत्मा की छोटी नदी के पार उसकी आत्मा की महान नदी की ओर जाता हूँ। क्या शैतान की नदी भी बहती है? हाँ, इसलिए मैं बहुत सावधान रहता हूँ की मैं अपना ध्यान शैतानी बातों पर न लगाऊँ, जैसे की गुस्सा, व्यभीचार, डर, बदला, विनाश वगैराह। यदी मैं इस ओर ध्यान लगाता हूँ, तो मैं शैतान के विनाशकारी बहाव में फंस सकता हूँ। इसलिए मैं बहुत सावधान रहता हूँ की मैं अपना ध्यान कहाँ लगता हूँ।

कई स्थानों पर नदी चौड़ी है और बहाव धीमा। कई बार नदी सकरी और बहाव तेज हो जाता है। परन्तु यह फिर भी वही नदी है, जो परमेश्वर के सिंहासन से निकलती है और तुम्हारे हृदयों के द्वारा इस धरती पर समाप्त हो जीती है, जिससे इस धरती को उसके और आप के जीवन से पानी मिलता है (१ कुरिं ६ : १७)।

स्थायी सच्चाईयाँ :

कक्षा को किस बात की आवश्यकता है? सूची में सब से उपर है, विश्वास, आशा और प्रेम। "पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।" (१ कुरिं १३ : १३)। जब कक्षा में विद्यार्थि कक्षा में प्रवेश करता है तो उस किस बात की आवश्यकता होती है? विश्वास, आशा और प्रेम में दृढ़ बनने की। जब हम एकत्रित होते हैं तो वह इसलिए है की हम एर दूसरे को परमेश्वर में प्रोत्साहित करें।

विश्वास करने की लड़ाई :

क्या मैं विश्वास करता हूँ? क्या मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ की वह हम में उपस्थित है? क्या मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ की वह एक नदी है जो मेरे मन में बह रही है? क्या मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ की मैं जीवन के वृक्ष के फल को खा कर जीवित हूँ और दूसरों को भी प्रोत्साहित करता हूँ की वे भी जीवन के वृक्ष के फल को खा कर जीवनत रहें? क्या मैं अविश्वासी हूँ? क्या मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ की परमेश्वर हमारे बीच में बह रहा है? क्या मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ की मैं और आप उस से मुलाकात कर सकते हैं और वह हमारा मार्ग दर्शन करेगा? यदी मैं इन सब बातों पर शक करता हूँ, तो मैं नहीं पढ़ा सकता, क्योंकि कक्षा को सब से अधिक इस बात की आवश्यकता है की वे विश्वास करें की वह इमानुएल है, परमेश्वर हमारे साथ।

जो प्रभु ने मुझे सिखाया, धर्म ने मुझे उस के विपरित सिखाया :

संसार कहता है की कोई हृदय नहीं है, केवल दिमाग है। धर्म कहता है, "अपने दिमाग की सोच के प्रकार से जीयो," "अपनी आत्मविध्या पर विश्वास करो पर अपने मन से सावधान रहो।" मेरा प्रभु कहता है, "मार्क, तुम, अपने दिमाग के द्वारा बनाई गयी आत्मविध्या से अधिक मेरी आत्मा के बहाव पर जो तुम्हारे मन में बह रहा है, विश्वास कर सकते हो।" मैं किस पर विश्वास करूँ? क्या मैं अपने समाज या धर्म पर विश्वास करूँ, या अपने मन की स्वेच्छिक बातों पर विश्वास करूँ?

मुझे प्रशिक्षण मिला है की मैं अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाऊँ। मुझे प्रशिक्षण दिया गया है की मैं अपने दिमाग से परखूँ, अपने दिमाग से स्थापित करूँ, अपने दिमाग से जीयूँ, और फिर भी परमेश्वर ने आदम और हवा को अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाने से मना किया था। यह सोचना की मैं सही और गलत, अच्छा और बुरा, सही आत्मविध्या और गलत आत्मविध्या, सच और झूठ को पहचान सकूँ....। परमेश्वर कहता है, "उस वृक्ष का फल मत खाना - अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष।" हम नहीं जानते क्यों कि उसके रास्ते हमारे रास्तों से उच्च हैं और उस के विचार हमारे विचारों से बुद्धिमान हैं। वह मेरे विचारों से कई अधिक महान और श्रेष्ठ हैं।

हव चाहता है की मैं जीवन के वृक्ष का फल खाऊँ... जो मेरे अंदर बहता है (यूह ७ : ३७ - ३९)। वह चाहता है की मैं बहाव में जीयूँ। मेरा जवाब। "यह बहुत आसान और बहुत खतरनाक हो सकता है।" परन्तु वह जवाब देता है की जब तक मैं बच्चा जैसा नहीं बन जाता, मैं मैं उसके राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। बच्चे स्वैच्छिक जीवन जीते हैं। कम से कम तब तक जब तक मैं उन्हें ऐसा करने से मना न करूँ (शायद सात वर्ष की आयु तक)। शायद मुझे उस स्वैच्छिता पर लौटना चाहिए। शायद वहीं पर जीवन है। क्या मैं उतना मासूम बन सकता हूँ? क्या जीवन उतना मासूम हो सकता है? शायद मैं बहुत कोशिश करता हूँ। शायद मैं बातों को कठिन बना लेता हूँ। शायद मुझे मेरे परिश्रम को त्याग देना चाहिए और उस के विश्राम में प्रवेश करना चाहिए। शायद वह सच में अलफा और ओमेगा है, प्रारम्भ और अंत है। शायद वह सच में वह जूवन है जो मैं जी रहा हूँ और वह साँस है जो मैं ले रहा हूँ। शायद वह सच में इमानुएल है, परमेश्वर हमारे साथ। शायद मुझे विश्वास करना चाहिए।

शायद मेरी परम्परा गलत है। शायद मुझे झूठ ने घेर रखा है। शायद मैं एक फरीसी का जीवन जी रहा हूँ, जो हवा पर भरोसा नहीं करता, क्योंकि मैं नहीं जानता की वह कहाँ से आती है और कहाँ को जाती है। यदी मैं हवा का पीछा करूँ तो लोग मुझे पागल कहेंगे और मेरी हँसी उड़ाएँगे। शायद इस से मुझे अच्छी संगती मिले। येशु को आत्मा बहा कर ले गयी थी।

झूठ को त्यागना :

मैंने झूठ को त्याग दिया है, उस झूठ को जो मुझ से कहती है की मैं अपने दिमाग पर विश्वास करूँ और अपने मन को अस्विकार। मेरे प्रभु ने मुझे विपरीत बताया है - अपने मन पर विश्वास करो और अपने दिमाग पर अविश्वास। मेरी परम्परा ने मुझ से झूठ बोला। धर्म ने मुझ से झूठ बोला। झूठ पर विश्वास करने पर मैंने पश्चैताप ड़िया है और परमेश्वर से कहा है

की वह मेरे मन को चंगा करे। यदी आप भी करना चाहते हैं तो अभी करीए। इस पुस्तक को नीचे रखें और परमेश्वर के सामने पश्चैताप करें और उससे क्षमा मांगें और चंगाई मांगें।

मैंने इस झूठ को त्याग दिया है की पढा हुआ ज्ञान शिक्षा नहीं होती। मेरे प्रभु ने कहा की यह निजी मुलाकात है। इसलिए मैं वही पढाऊँगा जिस का मेरे जीवन और मन के साथ निजी मुलाकात हुई हो और यह मैं इस तरह सिखाऊँगा की मेरे विध्यार्थियों के जीवन और मनो के साथ मुलाकात हो। इससे मैं एक शिक्षक के रूप में धीमा पड जाऊँगा। मैं उतना न पढा सकूँ। परन्तु जो मैं सिखाऊँगा उससे मेरे विध्यार्थियों का जीवन बदलेगा और वे पवित्रात्मा से मुलाकात कर सङ्गते हैं। मेरी परम्परा और मेरा धर्म गलत थे। मैंने पश्चैताप ड़िया है।

पश्चैताप का उत्साह मनाना - बदलाव की बुनियाद :

पश्चताप करना क्यों आवश्यक है? मैं उन झूठों के लिए क्यों पश्चताप करूँ जो मुझे सिखायी गयी थीं? क्योंकि पश्चताप बदलाव की बुनियाद है। बिना पश्चताप के कोई बदलाव नहीं है। इसलिए मैं पश्चताप का उत्साह मनाता हूँ क्योंकि मेरे जीवन के बदलाव में यह बुनियाद है। मैं अपने विध्यार्थि के जीवन में भी इसका उत्साह मनाता हूँ, क्योंकि यह उसके जीवन में बदलाव की बुनियाद है। इसलिए यदी आप ने झूठ को स्विकार किया है, तो उसे त्याग दो ताकी वह आप के जीवन पर नियंत्रण न कर सके, केवल पवित्रात्मा और पवित्रशास्त्र की सच्चाई आप के जीवन पर नियंत्रण करे।

अब मैं स्वतंत्र हूँ - विभिन्नता के लिए स्वतंत्र हूँ। मुझे केवल वही सच को बताना है, जो हमारे जीवन में है। मसीह में स्वतंत्रता है। हल्लेलूईया। मैं स्वतंत्र हूँ।

क्यों की हम सच में रहते हैं तो हम अगली पीढी को शिक्षा दे सकते हैं। हम महान उत्पादकों और अविष्कारियों को शिक्षा देंगे क्योंकि हमने उन्हें अपने मनो द्वारा जीना सिखाया है। हम अगली पीढी के नेताओं को शिक्षा देंगे क्योंकि हम ने उन्हें स्वयं को खोजना, बाँटना, सिखाया है। इसलिए हम सच में जीने का उत्साह मनाते हैं। हमें भिन्न रहना है।

अब हम उस प्रश्न की ओर लौटते हैं जो इस अध्याय के प्रारम्भ में बताया गया है, "परमेश्वर क्या चाहता है की आज रात हम क्या सिखायें?" जवाब है, "हव जो मेरे मन ओर उन लोगों के मनो में जीवनत है, जो समूह के रूप में उपस्थित है।"

अध्याय ५ के कुछ मुख्य विचार :

१. जब अपनी पढाई करें तो हमेशा पूछें, "आज रात आप किस बात को पूरा करना चाहते हैं? आज रात आप क्या करना चाहते हैं?"
२. हर बात को कक्षा में पूरा होना आवश्यक नहीं। इसलिए ग्रह कार्य दिया जाता है। कक्षा में हम केवल भविष्यवाणी के जीवीते सच पर ध्यान देते हैं।
३. हमारे दिमाग से अधिक हम नदी पर विश्वास कर सकते हैं।
४. हमें जीवन के वृक्ष के फल को खा कर जीवित रहना है, अच्छे और बुरे के वृक्ष के फल को खा कर नहीं।
५. इस अध्याय में से कुछ और विचार लिखिए जो आप के लिए मुख्य हैं....।

कार्य :

"प्रभु, मैं इस बात का पश्चताप करता हूँकी मैंने इस बात पर विश्वास किया की मुझे कक्षा में सब कुछ पढाना है। मैं आपके पास आकर यह पूछूँगा की आप क्या चाहते हैं की मैं पढाऊँ।"

"प्रभु, मेरे मन के बजाए मेरे दिमाग पर विश्वास करने के लिए मैं पश्चताप करता हूँ। मैं मानता हूँ की आप नदी हैं जो मेरे मन में बह रही है और मैं इस का आदर करूँगा। अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाने के लिए मैं पश्चताप करता हूँ और मैं आप के पास आता हूँ, जो जीवन का वृक्ष है, ताकी आप का दैवी दर्शन पा सकूँ।"

विचार करें और बैहस करें :

१. क्या यह सही है की जो पढने के लिए तैय किया गया है, वह पूरा न किया जाए? यदी हाँ, तो क्यों? उन बातों का क्या जो छोड दी गयीं हैं?
२. आप यह कैसे पहचानेंगे की आज शाम परमेश्वर क्या पढवाना चाहता है?
३. जो हमारे अंदर बह रहा है, क्या हम उस नदी पर विश्वास कर सकते हैं? क्या हम उस पर उतना विश्वास कर सकते हैं जितना हम अपने दिमाग पर करते हैं? अधिक? क्या कुछ सुरक्षाकवच है? यदी हाँ, तो वह क्या हैं?
४. क्या आप अपने अंदर की नदी पर विश्वास करते हो? यदी नहीं तो क्या आप समझते हैं की आप को करना चाहिए? यदी हाँ, तो आप कैसे करेंगे?
५. इस का अर्थ क्या है की अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाओ? क्या तुम यह फल खाते हो? यदी हाँ, तो आप क्या समझते हैं की आप को यह बंद करना है? यदी हाँ, तो आप कैसे बंद करेंगे?
६. इस का अर्थ क्या है की जूवन के वृक्ष का फल खाओ? क्या तुम इस में से खाते हो? यदी हाँ, तो आप कैसे करते हो? क्या कोई तरीके हैं जिससे इस खाने को बढाया जा सकता है? यदी हाँ, तो ये कौन से तरीके हैं? क्या आप को इस वृक्ष के फल को खाने की अपकी गती को बढाना चाहिए?
७. पश्चताप आप के लिए, सीधा या विपरीत शब्द है? क्या आप पश्चताप का उत्साह मनाते हैं? क्या आप पश्चताप करना चाहते हैं? क्या आप को पश्चताप करना है? क्या इस अध्याय को पढ कर आप को ऐसा लगा की आपको अपने जीवन के किसी क्षेत्र में पश्चातप करना है? यदी हाँ, तो कौन से क्षेत्र में? क्या आप ने बुलावे को सुना? क्या आपने पश्चताप किया? यदी नहीं, तो क्या आप इस समय पश्चताप करना चाहते हैं?
८. पत्राचार - "प्रभु, इस आध्याय के विचारों के बारे में आप मुझ से क्या कहना चाहते हैं?"

अध्याय छः हम सच को कैसे खोजेंगे?

मैं सोचता था की सच ईश्वरज्ञान के डिब्बों में मिलता है। अब परमेश्वर बोलता है की इस पर विश्वास न करूँ। वह किसी डिब्बे में नहीं रहता, वह एक नदी है, एक बहाव है। मुझे सिखाया गया कि बहती हुई नदियों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। लोग बह कर ऐसे स्थान पर पहुँच जाते हैं कि वहाँ से वे फिर कभी लौट कर नहीं आते। जो उन के पास है उसे किसी के साथ बाँटना नहीं चाहते। वे धमण्डी हैं और विनाश की ओर जा रहे हैं। प्रभु, मैं उन में से एक न बनूँ।

मैं कैसे वच सकता हूँ? मैं अपने समूह को बहने से कैसे बचा सकता हूँ? परमेश्वर की स्तुती हो की बाईबल में कुछ ऐसे वचन हैं जो इस परेशानी का जवाब हैं, और यह हमें सुरक्षित रखेंगे।

पहले सच को साबित करने के लिए मैं दिमाग और बाईबल का प्रयोग करता था। मैं बाईबल के वचन पर अपनी अध्यात्मविध्या बना कर सच को स्थापित करता था। परन्तु मैं हर समय एक दोष भावना से घिरा रहता था और अपने और मसीह की देह के बीच एक भाग बना रहता था। मैंने देखा की मसीह की देह के भागों में उतनी शुद्धता नहीं थी जितनी मेरी आध्यात्मविध्या में थी। सो मैं उन से दूर हट गया। क्या इसे मसीह के प्रेम में बने रहना कहते हैं? परमेश्वर ने कहा, "मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उन से प्रेम रख (यूह १७: २३)।" क्या मजाक है। संसार हम पर हँसता है, क्योंकि हम आपस में लडते रहते हैं। हम एक दूसरे को मारने के लिए भी तैयार हैं। एक दूसरे के विरुद्ध हम किताबों में विष भरते हैं। हम जिस का नाम लेते हैं उस के लिए हम अपमान का कारण हैं।

मन के बहार का

लोगोस

दिमाग

**मेरा दिमाग संसार से सच साबित करता है
सच साबित करने के लिए एक नया उदाहरण :**

यदी बाईबल और मेरे दिमाग का प्रयोग कर यदी अध्यात्मविध्या से सच साबित करना ठीक नहीं है, तो क्या मैं एक और अच्छा रास्ता बता सकता हुए? वह यह है: सच तब स्थापित होता है जब मेरा मन और मेरा दिमाग पवित्रात्मा को सुनते हुए, दूसरों की सलाह ले कर और जीवन के अनुभवों के साथ पवित्रवचन को पढता है।

जीवन और समाज के क्षेत्र में, मन से बाहर का और आत्म चेतना सम्बंधि, दोनों का एक साथ बहना

दिमाग

लोगोस

दूसरे

जीवन का अनुभव

हृदय: स्पर्श, अनुभव

मेरा दिमाग सच को पहचानता है और मेरा हृदय पवित्रात्मा को सुनते हुए, दूसरों की सलाह ले कर और जीवन के अनुभवों के साथ पवित्रवचन को खोजता है।

इसलिए केवल मेरे दिमाग का प्रयोग कर के बाईबल को खोजने से यह नया उदाहरण ठीक है। इस मैं इन सब का प्रयोग कर रहा हूँ:

- मेरा दिमाग
- बाईबल
- मेरा हृदय
- मेरे मन में जो पवित्रात्मा है, उसे

- दूसरों की सलाह
- जीवन के अनुभव

पवित्रात्मा को सुनते हुए, दूसरों की सलाह ले कर और जीवन के अनुभवों के साथ पवित्रवचन को उजागर करते हुए।

अब सच को साबित करने के लिए केवल दो बातों का प्रयोग करने के बजाए (मेरा दिमाग और वचन), मैं कम से कम छः साधन का प्रयोग कर रहा हूँ। क्योंकि मैं एक चौड़ी बुनियाद पर स्थापित कर रहा हूँ, तो क्या सच को पाने में मेरे पास अच्छा अवकाश है? हाँ, अवकाश है।

हम इन छः साधनों को विस्तार से देखते हैं और देखते हैं की पवित्रशास्त्र के अनुसार यह सही हैं की नहीं। एक साथ प्रयोग करने से मुझे लगता है की यह केवल अध्यात्मविध्या या वचन को पढ़ने से कई अधिक गुणा बेहतर है। हम यह भी देखेंगे की इन को एकत्रित कर के छोटे समूह में कैसे बहाया जा सकता है। सब से पहले हर एक का वचन के द्वारा साबित करना:

दिमाग :

"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सतय के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (२ तिमु २ : १५)।"

बाईबल :

"स्मपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरमा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। (२ तिमु ३ : १६)।"

पवित्रात्मा :

"परन्तु जैसा लिखा है, "जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की

है।" परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है। मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।" (१ कुरि २ : ९ - ११)।"

दूसरों की सलाह :

"सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।" (नीति ११ : १४)।

जीवन का अनुभव :

"उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।" (मत्ति ७ : १६)।"

हृदय :

"यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया की वे अपने अपने मन से ऐसा विचार कर रहे हैं, और उस ने उन से कहा ।" (मार्क २ : ८)।"

उपर्युक्त में से कितनों को ले कर मैं जान पाऊँगा की सच स्थापित हु है? सब से। फिर बी मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं धुँधले काँच से देख रहा हूँ, और इस कारण मेरे पास पूरा सच नहीं मिल सकता, केवल एक छोटा सा दृष्य।

सच को खोजने का एक उदाहरण :

इसलिए जब मैं सच को खोजता हूँ तो मैं उस विषय से प्रारम्भ करता हूँ जो मेरे मन में जल रहा है और जिस का जवाब मुझे ढूँढना है। मैं कहाँ से प्रारम्भ करूँ? मैं वचन से प्रारम्भ करूँगा, जो कहता है की उन के लिए जो मसीह यीशु में हैं कोई दण्ड नहीं। (रोम ८ : १)। या तो यह वचन गलत है, या मैं कहीं भटक गया हूँ। क्योंकि मैं विश्वास करता हूँ की परमेश्वर का वचन सच है, तो मैं समझता हूँ की मैं भटक गया हूँ। मैं किस रास्ते पर भटक गया हूँ? यह सब दोष कहाँ से आता है?

मैं शब्दकोष निकालता हूँ और दोष शब्द खोजने लगता हूँ, और पाता हूँ की शैतान दोष लगाने वाला है (प्रकाशित १२ : १०)। शायद यह दो, वह नहीं है जो पवित्रात्मा मुझे बता

रहा है। शायद यह शैतान मेरे अंदर बोल रहा है। शैतान के क्या नाम है, क्योंकि इब्रानी में एक नाम एक एक चरित्र को दर्शाता है? यूनानी में शैतान "डायाबोलिस" है, जिस का अर्थ है "दोष लगाने वाला।"

मुझ पर दोष लगाने के लिए शैतान किस का प्रयोग करता है? मैं अपने मन और जीवन को टटोलने लगता हूँ। वहाँ क्या हो रहा है? अधिकतर यह सिधांत होते हैं, पवित्रशास्त्र का कोई वचन है, जिस का प्रयोग शैतान करता है मुझ पर दोष लगाने के लिए। उस ने यीशु के साथ भी ऐसा ही किया था। उस से मैंने यह सीखा की पवित्रशास्त्र का प्रयोग कर के दूसरों को नीचा दिखाया जाए। तब मैंने पवित्रशास्त्र को खोजा तो पाया की वचन से लोगों को उठाया जोतो है। "जितनी बातें पहले से लिखी गई वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं की हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।" (रोम १५ : ४)। पवित्रशास्त्र का प्रयोग लोगों को आशा में प्रोत्साहन दिलाने के लिए करना चाहिए। क्या मैं बाईबल का गलत प्रयोग कर रहा था। धार्मिक लोग जो मुझे बाईबल की शिक्षा देते थे, क्या वे पवित्रशास्त्र का गलत प्रयोग कर रहे थे। मुझे फिर से पश्चताप करना चाहिए, उस झूठ से पश्चताप की मैंने दोष लगाने वाले की आवाज को शांति देने वाले की आवाज समझा। इसलिए मैं पश्चताप करता हूँ। मैं परमेश्वर से कहता हूँ की वह मुझे इन झूठ से मुक्त करे और मये रास्ते पर स्थापित होने में मेरी मदद करे।

रोमियों ७ का दोषी उस समय आया जब पौलुस सिधांतों के दायरे में जीना चाह रहा था और रोमियों ८ की "दोषी नहीं" की स्वतंत्रता उस समय आई जब पौलुस ने मसीह की आत्मा में जीवन को तलाश लाया था। अब मुझे मसाह में और परमेश्वर की आत्मा में रहना सीखना है। मैं वचन को खोजने लगा और प्रार्थना करने लगा की दैवी दर्शन प्राप्त हो जाए। जो परमेश्वर से दर्शन पाता हूँ मैं उसे लिखने लगता हूँ। उन पर प्रयोग करने लगता हूँ। मैं उन्हें अपने जीवन में लागू करता हूँ। यह कार्य करता है। कोई दोष नहीं। महिमा, हल्लेलूईया। क्या किसी और ने इसे खोजा है? मैं इसे अपने शिक्षक के साथ बाँटता हूँ। मैं कई पुस्तकें पढ़ने लगा। मैंने बिना दोष का जीवन पा लिया।

मैंने इसे कैसे खोजा? मैं एक समस्या से जूझ रहा था। मैं उस पर कार्य करने लगा। मैंने वचन खोज डाला, उस पर प्रार्थना करने लगा की दर्शन पाऊँ। मेरा मन जो अनुभव कर रहा था, मैं उसे जाँचने लगा। परमेश्वर मुझ से जो कहना चाह रहा था, मैं उस पर ध्यान देने लगा और जो प्रश्न उत्तर मैंने लिखा था उसे अपने आत्मिक सलाहकार को लौप दिया। और कई पुस्तकों के द्वारा मैंने कई मसीहों से इस विषय में सम्मति ली।

मैं जो करता हूँ उसे अधिक विशेष रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ :

१. मैं प्रारम्भ उस समस्या से करता हूँ जो इस समय मैं सामना कर रहा हूँ।
२. मैं उस विषय पर बाईबल का हर वचन खोज लेता हूँ।
३. मैं हर वचन पढ़ता हूँ, विशेष रूप से वह वचन जो मेरे विश्वास के विपरित है।
४. मैं इस पर प्रार्थना करता हूँ। मैं परमेश्वर से कहता हूँ की वह मुझे बताए की वह उस से मुझे क्या सिखाना चाहता है। परमेश्वर वह परमेश्वर है जो अपने को गुप्त रखता है (यशा ४५ : १५), राजाओं की महिमा गुप्त बात का पता लगाने से होती है (नीति २५ : २)।
५. मैं खुश हूँ की मैंने अपना विचार बदला। मुझे सब कुछ जानने की आवश्यकता नहीं। मुझे सच साबित करने की आवश्यकता नहीं। मैं सच का खोजी हूँ। जब मैं किसी वचन को पछड़ता हूँ जो मेरे विश्वास के विपरित है तो मैं विचलित हो जाता हूँ। क्या मैं केवल उन वचनों को पकड़े रहूँ जिन्हें मैं वर्षों से जानता हूँ और दूसरे वचनों को छोड़ दूँ? या मैं उन्हें अपना लूँ, और फिर से सारा क्रम प्रारम्भ करूँ, उस पर प्रार्थना कर के परमेश्वर से कहूँ की वह मेरी समझ को और बड़ाए? परमेश्वर ने सुलेमान को बुद्धि दी और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई और उसके हृदय में समुद्र तट की बालू के किनकों के तुल्य अनगिनत गुण दिए (१ राजा ४ : २९)। मैं विशाल हृदय चाहूँगा। क्या मैं बदलाव लाने के लिए तैयार हूँ? परमेश्वर कियी बक्से में नहीं रहता। परमेश्वर ने मुझ से कहा, "मार्क, मैं नदी हूँ, एक बक्सा नहीं।"

जब मैंने अपने हृदय के अंदर के वचन को अपनाया तो, जो मेरे अंदर था वह टूट गया। अब मुझे नदी पर विश्वास करना सीखना है। कुछ बातें थीं जो नहीं बदलीं, जैसे यीशु मसीह है, जीवते परमेश्वर का बेटा और मुक्ति उस के बहे हुए खून पर विश्वास करने से मिलती है। और यह भी की बाईबल परमेश्वर का कभी न बदले वाला वचन है। मुझे वचन के बारे में सीमित ज्ञान पर विश्वास नहीं करना है। यदी मैं अपने आप को मसीह की देह की उन्नती के लिए सौंप दूँ तो मैं सुरक्षित रहूँगा। बड़ते हुए व्यक्ति के साथ बदलाव हमेशा रहेगा। परमेश्वर को किसी बक्से में नहीं डालना है, परन्तु किसी मनुष्य में डालना है, जो उस के साथ एक निजी रिश्ता बनाना चाहता है। उसने परदे को फाड़ डाला ताकी उसकी पवित्रात्मा के द्वारा हम परमेश्वर को पा सकें। हृदय से हृदय के मुलाकत के बजाए, हम ने मसीहत को एक दिमागी कार्य बना दिया है।

६. मैं विषय पर हर वचन को खोजता हूँ ताकी सच पा सकूँ। कई पवित्रशास्त्र को खोजते हैं, ताकी वे अपने आप को सच्चा साबित कर सकें। कई पवित्रशास्त्र को खोजते हैं, ताकी वे अपने विरोधियों को गलत साबित कर सकें। बिरीयों ने भी पौलुस के उपदेशों का सच पता लगाने के लिए पवित्रशास्त्र को खोजते थे (प्रेरित १७ : ११)। शैतान गलत साबित करना चाहता है। पवित्रात्मा, शांति देने वाला प्रोत्साहन देने आता है। मैं हमेशा दोष लगाने वाले का स्थान लेता था, ताकी अपने को सही और दूसरों को गलत साबित कर सकूँ। जब मुझे पता चला की ऐसा करने से मैं शैतान का प्रतिनिधी बन रहा हूँ, तो मैंने क्या किया? मैंने पश्चताप किया और परमेश्वर से मुझे बदलने को कहा।

मैंने देखा है की धर्म में कई लोग दूसरों को गलत साबित करना चाहते हैं। यदी आप इस श्रेणी में आते हैं तो शायद आप बाहर निकल कर पश्चताप करना चाहेंगे, "प्रभु, मुझे क्षमा करें और मुझे बदलें। मुझे चंगाई देने वाला बनाएँ बजाए विनाश करने वाले के, जो आप के शरीर की एकता को नाश करता है।"

७. मैं पवित्रशास्त्र के हर वचन पर प्रार्थना करता हूँ।

८. मैं उन वुष्यों पर पुस्तकें पढता हूँ और जो मुझे मिलता है उसे अपने चरवाहे के साथ बैहस करता हूँ। क्योंकि मैं एक खोजी हूँ, मैं उस विषय पर २० - २५ पुस्तकें पढता हूँ। मुख्य बातों के नीचे रेखा खींचता हूँ, उन्हें उजागर करता हूँ और लिख लेता हूँ।

९. मैं जो सच सीख रहा हूँ, उन पर प्रयोग करता हूँ। क्या मसीह का जीवन और अनुग्रह मेरे मन के अंदर छोड़ी गयी हैं?

१०. मैं फल को जाँचता हूँ। क्या मैं प्रेम, खुशी, शांति, विश्वास, आशा, दृढता, शक्ति, अनुग्रह, चंगाई, अनुभव कर रहा हूँ? यदी हाँ, तो मैं संतुष्ट हो जाता हूँ।

११. जब तक की परमेश्वर का अनुग्रह मेरे मन में न आ जाए, मैं इस क्रम में घूमता रहता हूँ। अब आप समझे की मुझे एक क्षेत्र में बढने के लिए एक वर्ष क्यों लगता है। यदी कोई व्यक्ति, अपने जीवन के क्षेत्र में परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए एक वर्ष का समय लगाता है, तो सोचीए की २० वर्षों में वह कहाँ पहुँचेगा।

क्या आप को याद है की हमने इस अध्याय का प्रारंभ कहाँ से किया था? वह इस प्रश्न से था, "हम सच को कैसे खोजते हैं?" क्योंकि हम दिमाग पर विश्वास नहीं करने वाले हैं और बहाव में बहने वाले हैं, तो हम कैसे विश्वास करें की हम कहीं और बह कर नहीं निकल जाएंगे? यह मेरे विचार है। क्या आप समझते हैं की यह मुझे धोखा खाने से बचा सकता है? मुझे विश्वास है, ऐसा ही होगा।

क्योंकि मैं अपने दिमाग पर भरोसा नहीं करता, तो मुझे मसीह की देह पर भरोसा करना है :

मेरा सब से शक्तिशाली सुरक्षा कवच हैं, मसीह की देह, मेरे शिक्षक, मेरे चरवाहा, और आप में से हर एक व्यक्ति। कई विषयों को तो मैंने इसलिए छोड़ दिया क्योंकि मसीह की देह का कवच उन्हें प्राप्त नहीं था। यह आवश्यक नहीं की मैं हमेशा सही हूँ. गलत होना भी ठीक है। क्यो पता आज से १०० वर्ष के बाद मसीह की देह इसे स्विकार करेगी। परन्तु क्योंकि इस समय वे इसे नहीं स्विकार करते इसलिए मैं इन्हें अलग रख देता हूँ।

मसीह की देह में मुझे किस को स्मर्पित होना है :

मसीह की देह क्या है जो मैं उस को स्मर्पित होऊँ? पहले, चार पादरी रूपी चरवाहा हैं, जो मेरी निगरानी करते हैं। दूसरा, जो मैंने माना की मसीह देह का पडता हिस्सा है, वह भाग जो बाईबल पर विश्वास करता है और उसी को कोजता है, और उसी के कारण जीवित है। मैं उन के आधीन नहीं होता जो यह नहीं मानते की बाईबल को जीया जा सकता है। यह याद रखीए की शैतान यह मानता है, इसलिए वह काँपता है।

अध्याय छः के कुछ मुख्य विचार :

१. केवल आप का दिमाग और बाईबल सच साबित करने के लिए परयाप्त नहीं है।
२. सच को खोजने के लिए, दिमाग, हृदय, बाईबल, दूसरों की सम्मति, जीवन के अनुभव, पवित्रात्मा का सीधा दैवि दर्शन और उपर्युक्त में पवित्रात्मा का कार्य, इन सब की आवश्यकता होती है।
३. फिर भी हमें नम्रता से चलना है, क्योंकि हम धूँधले काँच से देखते हैं।

४. हमें यह जान लेना है की परमेश्वर कियी डिब्बे में नहीं रहता, वह एक नदी है, इस कारण सच भी एक नदी ही की तरह रहेगा, किसी बंध डिब्बे में भरे सिद्धांत की तरह नहीं।
५. हमें कभी भी कियी पर दोष नहीं लगाना है। हमें उन्हें सही साबित करना है, गलत नहीं।
६. क्योंकि हम दिमाग पर विश्वास नहीं करते इसलिए हमें मसीह की देह को स्मर्पित करना है।
७. इस अध्याय में से किसी और बात को लिखीए जो आप को मुख्य लगी हो।

विचार करें और बहस करें :

१. सच खोजने के लिए आप कौन सा रास्ता अपनाते हैं? यदि आप को किसी क्षेत्र में सच साबित करना है, तो आप क्या करते हैं? आप क्या करते हैं, उसकी सूची बनाईए। क्या आप समझते हैं की यह जो आप कर रहे हैं वह परयाप्त है?
२. क्या आप इस आध्याय में बताए गये छः बुनियाद से सहमत हैं (दिमाग, हृदय, परमेश्वर का वचन, दूसरों की सम्मति, जीवन के अनुभव और पवित्रात्मा)? क्या यह सब ठोस हैं? क्या इन में से कोई भी अकेले प्रयाप्त है? क्या आप सब छः को प्रयोग करते हैं? क्या आप समझते हैं की आप को करना चाहिए? क्या इन में से किसी एक को अधिक महत्व देना गलत हो सकता है? हम इन में कैसे संतुलन बना सकते हैं?
३. जब हम सब कर लेते हैं तो हम सच तक पहुँचते हैं, तो क्या हमें विश्वास है की हमारे पास सब कुछ है, या हमें दूसरों के सामने नम्रता पूर्वक चलना चाहिए, ताकी सब से साख सकें, उन से भी जो सहमत नहीं हैं? यह बात की हमें सब धँधला दिखता है, क्या यह इस कारण है की हम दीन नहीं हैं? मत्ती ५ : ३ पढ़िए।
४. यदि किसी विषय पर कोई व्यक्ति परमेश्वर का पूरा ज्ञान खोज रहा हो, तो यह कितना मुख्य है की वह उस विषय पर बाईबल के हर वचन को ढूँढे? यह करने में कितना समय लग सकता है? क्या सच इस योग्य है की उस पर इतना समय व्यतीत करें?

५. बडती हुई मसीह की देह को स्वयं को सौंपना कितना आवश्यक है? मसीह की देह को न सौंपना कितना खतरनाक है? पवित्रशास्त्र के अनुसार घमण्ड और अभिमान कितनी बड़ी समस्या हैं? यह आप के जीवन में कितनी बड़ी समस्या हैं?

६. पत्राचार - "प्रभु, आप मुझे इस अध्याय के विचारों के बारे में क्या कहना चाहते हैं?"

आध्याय सात

हम जीविते सच को कक्षा तक कैसे पहुँचा सकते हैं?

आखिरकार मुझे मिल गया। मैंने उसे पा लिया। मैंने मेहनत करी। मैं व्याकुलता और गलती से लडा हूँ जब तक की मुझे ज्योति नहीं मिली, (या वह - उसने- मुझे ढूँढ लिया है)। सच मिल गया है। जो मैंने चाहा वह आखिरकार मैंने पा लिया है। अब इसे दूसरों के साथ बाँटना है।

मैंने अपना मंच बिछाया, अपने खोजे हुए सच को अच्छी तरह पेश किया और सामने अच्छी तरह कतारों में बैठे विध्यार्थियों को सिखाया। कोई प्रश्न नहीं, क्योंकि मेरे पास बताने के लिए बहुत कुछ है और यह सब मुझे जल्दी जल्दी बताना है। जल्दी से मैं इसे बता दूँ, फिर मुझे दूसरे सच के बारे में बताना है। मेरे विध्यार्थि बैठ कर उबासीयाँ लेते हैं और मेरी कही हुई बात में से कुछ भी उन के जीवन से सम्बंध नहीं रखती। तो वे इसे लिक लेते हैं और याद कर लेते हैं ताकी मेरे प्रश्न पूछने पर मुझे जवाब दे सकें। और फिर यह सच जो मेरे हृदय में इतनी शक्तिशाली रूप में रह रहा है वह उन पर कुछ असर नहीं कर पाता, वे बिना किसी बदलाव के और बिना किसी चुनौती के चले जाते हैं। क्यों?

कोई चाँदी की थाली की आवश्यकता नहीं :

"प्रभु, जो मेरे अंदर जीवित है, उसे उन के अंदर कैसे जीवित करूँ? मैंने उस के लिए जीवन भर संघर्ष किया है। उन्हें मैं उस को चाँदी की थाली में परोस रहा था। तो मैंने क्या गलत किया?"

सब कुछ। मैंने उन्हें मौका नहीं दिया की वे सच से स्वयं मुलाकात करते। मैंने उन्हें अपने संघर्ष के बारे में नहीं बताया। मैंने केवल तैयार वस्तु उन को पेश करी। सच को जीवन की कहानी के बाहर से बताया गया। मैंने उन्हें इस के साथ संघर्ष करने का या प्रश्न पूछने का मौका नहीं दिया। मैंने उन से कोई प्रश्न नहीं पूछा, क्योंकि इस में समय लग जाता। और किसे पता, यदी वह मुझ से प्रश्न करते तो शायद मैं उस का जवाब न जानता, या हम उस विषय से हट जाते और उस को समाप्त न कर पाते।

हम ने प्रार्थना नहीं करी। हम ने आराधना नहीं करी। हम रोये नहीं। हम ने पश्चताप नहीं किया। हम ने जश्न नहीं मनाया। प्रारम्भ से ले कर अंत तक यह साफ सुथरी बैठक थी। इसलिए कुछ नहीं हुआ।

हम कक्षा में जीवन कैसे भर सकते हैं? वह सच जो मेरे अंदर जीवित है, उसे मैं उन के अंदर कैसे जीवित रखूँ? मैं जो करता हूँ, उसे बताना चाहूँगा।

पहले, इस बात को मान लीजिए की इब्रानि में ज्ञान का अर्थ है, निजी मुकाबला, इधर उधर से मिली हुई सूचना नहीं, जैसे की यूनानी लोगो ने सोचा था। इसलिए, हमें छोटे समूहों को स्थापित करना चाहिए, ताकी सदस्य, निजी मुलाकात कर सकें, अपने मनों से, पवित्रात्मा से, एक दूसरे से, शिक्षक के मन और जीवन से और अपने जीवन की कथा से। इसे कक्षा में करना थोड़ा कठिन होता है। इब्रानी सभ्यता में कक्षा ग्रह नहीं थे, जब तक वे कारावास से नहीं लौटे।

एक मुख्य बात जो मनुष्य के जीवन की है, वह यह की वह एक कथा है, एक लम्बी कहानी, जो कई छोटी कहानीयों को जोड़ कर बनाई गयी हो। इसलिए, यदी हम किसी व्यक्ति को जीवन के बारे में बताना चाहते हैं, तो हमें उसे कहानियों में जीवन बताना होगा।

एक साथ रह कर कहानीयाँ बताना :

सब से शक्तिशाली रूप में इस को बताने का तरिका कहानियों द्वारा है, कई कहानीयाँ बता कर और उन के बीच में कहानीयों को इस तरह दर्शाना की उन्हें ऐसा लगे जैसे यह सब उन के बीच में हो रहा है और वे कहानी को बडाने में मदद करें। यह शिक्षा देने का सब से बडीया तरीका है। यही तरीका यीशु ने अपनाया था, "बिना दृष्टान्त वह उन से कुछ न कहता था (मत्ति १३ : ३४)।" वह चित्र कहानी का प्रयोग करता था।

यीशु न केवल कहानीयों के बहाव में सिखाता था, परन्तु, वह चेलों के मध्य कहानी में जीवित रह कर उन से कहा, "मेरे पाछे हो लो।" उसकी कक्षा का समय कक्षा ग्रह में नहीं था। वह जीवन के मार्ग पर होता था। मैं ऐसे शिक्षकों की तलाश में रहता हूँ जो उस क्षेत्र में जिस में मैं उन्नती चाहता हूँ, मुझ से आगे हैं, ताकी मैं उन्हें पूरी तरह सोक सकूँ।

यदी मैं शिक्षा देने के लिए कक्षा ग्रह का प्रयोग कर रहा हूँ तो हम सच का कक्षा ग्रह में प्रयोग करेंगे, केवल उस के बारे में जानेंगे नहीं। हमें यह बताया गया था की कक्षा ग्रह

सीखने की जगह है, प्रयोग की नहीं। फिर हम संसार में बाहर निकल कर जो सीखा था उस का प्रयोग करने लगे। सब से बुरी बात यह है की यदी आप कक्षा ग्रह में इस का प्रयोग नहीं कर सकते तो आप कहीं भी नहीं कर सकते। हमें सच को कक्षा में प्रयोग करना है।

कक्षा ग्रह में सच का प्रयोग करना :

कक्षा का समय प्रयोग का समय है - जो भी हम सीख रहे हैं, उस का प्रयोग करना। उदाहरण के लिए जब मैं मसीह में बने रहने के बारे में बताना चाह रहा था तो मैं एक रात कक्षा में आया और संसार में जो हो रहा था वह सारी बुराईयाँ बताने लगा, केवल यह देखने के लिए की उन पर विपरित प्रभाव डलता है या नहीं। असानी से डाल पाया। फिर हम ने आत्मा को दूसरे पर डालने के बारे में बात की, और जब दूसरे हम पर आत्मा डालते हैं तो हम कैसे बच सकते हैं, आशा, विश्वास और प्रेम की आत्मा को छोड़ कर, क्योंकि यह सब तब उपस्थित होती है, जब मसीह उपस्थित होता है। मैंने उस रात घूमते हुए हर एक से उस का अनुभव पूछा, की उन पर क्या बीत रही थी जब मैं विपरित बातें कर रहा था। उन्होंने मेरे साथ अपने अनुभव बाँटें। हम कक्षा में जीवन जी रहे थे।

हम जिस जीवन के बारे में बता रहे हैं वह हमारे बीच में है :

मैं जब शिक्षा दे रहा था तो मैं इस भ्रम में था की मैं एक जीवन के बारे में बता रहा हूँ, जो वहाँ है। परन्तु उस जीवन का क्या जो इस समय हमारे बीच में है? क्या इस का कोई महत्व नहीं? क्या यह भी जीवन नहीं? जीवन शणों से भरा हुआ है। मैं ने फिर पश्चताप किया की मैंने यह सोचा की जीवन वहाँ है और मैंने यह माना की जीवन कक्षा में है। इसलिए हम सच को कक्षा में प्रयोग करेंगे।

कक्षा ग्रह में करीए :

जो भी सिखाऊँगा, वह हम कक्षा में करेंगे, व्यभीचार और इस तरह की कुछ और बातों को छोड़ कर। यीशु कहते हैं की यदी हम ने मन में लालसा कर ली तो इस का अर्थ यह है की हम ने व्यभीचार कर लिया। क्या मैं लालसा पर काबू पाने के बारे में बता सकता हूँ - यदी उस पर काबू पाना मुमकिन हो तो? यदी मैं उस पर बात करूँ, तो क्या मुझे कहानी बतानी चाहिए? किसकी कहानी? मेरी। मजाक कर रहे हो? क्या मैं विध्यार्थियों को बता सकता हूँ की मैं निर्दोष नहीं हूँ। यदी वे जान जाएंगे की मैं एक इंसान हूँ, तो वे मेरा आदर नहीं करेंगे। मुझे मेरा दिखावा बनाए रखना है। हम राजा दाऊद की लालसा के बारे में बात

कर सकते हैं। यह हमारे जीवन से दूर है। उन्हें बताओ की यह गलत था और वह आज्ञा बताओ की तुम लालसा न करना। परन्तु इस से किसी का मन नहीं बदलेगा। क्यों? क्योंकि हम ने अभी पवित्रात्मा की शक्ति के बारे में बात नहीं की जो हृदयों का परिवर्तन करता है। हम ने उन बातों के बारे में नहीं कहा जो मन को बदलती हैं। हम ने केवल सिद्धांत बताए हैं। और सिद्धांत क्या करते हैं? पौलुस रोमियों ७ में कहता है की यह एक लड़ाई और संघर्ष को प्रारंभ करती है जो इतनी दुखमय है की मैं दर्द से चिल्लाता हूँ। "मैं कैसा आभागा मनुष्य हूँ। मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" क्या अच्छा स्थान है, मैं अपने विध्यार्थियों को अंदरूनी पीडा और गुस्से में चीखता और चिल्लाता छोड़ जाऊँ।

मैं उन्हें इस से बाहर कैसे ला सकता हूँ? मैं उन्हें पवित्रात्मा की शक्ति कैसे दिला सकता हूँ? हम साफ, स्वतंत्र और इमानदार और तैयार कैसे बन सकते हैं, ताकी अपने मन और प्राणों के अंदर जो हो रहा है उसे बाँट सकें?

समुदाय, स्पष्टता और विश्वास को स्थापित करना :

सब से पहले तो हमें प्रेम और स्पष्टता भरा समुदाय बनाना है। हम यह कैसे कर सकते हैं? मैं इसे कई प्रकार से करता हूँ। मैं कुर्सियों को अर्ध गोल आकार में, यै कई अर्ध गोल आकार में या एक बड़े गोल चक्कर के आकार में लगवाता हूँ। जब हम एक दूसरे के आनम सामने हैं, तो हम यह बताते हैं की जीवन हमारे बीच में है। हम में से हर एक के पास बाँटने के लिए उसका जीवन है। यदी समूह में केवल १२ - १५ लोग हैं, तो मैं उन के साथ गोल आकार का घेरा डाल कर बैठना पसन्द करता हूँ। ऐसा करने से मैं अपने स्तर को उन के बराबर ले जा रहा हूँ। मैं भी उन्हीं की तरह एक व्यक्ति हूँ। यहाँ ऊँच, नीच या जानकार की भवना नहीं, हम सब ने एक साथ उन्नति करनी है।

मुझे देखना है की स्पष्टता और प्रेम और शुद्धता को समूह में देखना है। मैं यह कैसे कर सकता हूँ? कई तरह से। पहले मैं अपने विध्यार्थियों के साथ बात चात करूँगा और सहचर्य करूँगा। हम उन विषयों के बारे में बात करते हैं जो उन के जीवन में हो रही है। हम एक साथ डँसते हैं, और यदी कोई गंभीर बात है तो उसके लिए प्रार्थना भी करते हैं। इस के बाद हम कक्षा का प्रारंभ करते हैं। प्रारंभ के पाँच से दस मिनट का समय हम स्तूती और आराधना करने में और स्वर्गिय पिता को प्रेम करने में, उस के सिंहासन के समक्ष आने में उसकी उपस्थिती में अपने हृदयों को खोलने, और उसके प्रेम और चंगाई की शक्ति का स्पर्श करने में बिताते हैं। जब हम उसके समक्ष शांति से उपस्थित रहते हैं तो हम उसकी

भविष्यवाणी को पाते हैं। आराधना करते समय हम ने उसके समक्ष अपने हृदयों को प्रेम से भरने के लिए खोल दिया है। हम अपने चारों ओर की दीवार को हिलते हुए अनुभव करते हैं। हम चंगाई पाते हैं। हमें अच्छा अनुभव होता है, जब हम उस पर ध्यान लगाते हैं और उसकी उपस्थिति से भर जाते हैं। हम बैठने से पहले आपस में प्रेम बाँटते हैं। मैं सब से कहता हूँ की वे एक दूसरे के गले मिलें और प्रभु का आशिर्वाद दें। जब आप कुछ लोगों के गले मिल लेते हैं, तो हम अपने अंदर स्वस्थ अनुभव करते हैं। यीशु ने भी चंगाई देते समय उन्हें छूआ था। हम कक्षा में स्पष्टता और प्रेम भर रहे हैं।

यदी मैं विश्वास या प्रेम का अनुभव न कर सकूँ, तो मैं अपना जीवन उन के साथ कैसे बाँट सकता हूँ। शिक्षक होने के नाते यह मेरा कर्तव्य है की मैं हर कक्षा में स्पष्टता और विश्वास स्थापित करूँ। बिना इस के तो सब दिमागी ज्ञान होता है।

प्रसन्नता के उपहार के लिए प्रार्थना :

दूसरा तरीका जिससे मैं स्पष्टता और सफाई लाता हूँ वह प्रसन्नता से है। मैं प्रसन्नता के उपहार के लिए प्रार्थना करता हूँ, क्योंकि बाइबल कहती है की, "प्रसन्न चित हृदय दवा का कार्य करता है।" हँसी चागाई देती है। आत्मिकता के लिए प्रसन्नता आवश्यक है। इसलिए हम डैन्सी बाँटते हैं। जीवन एक खुशी है। धर्म इसे भार बना देता है।

हम बात कर रहे हैं की हमें लालसा को कैसे संभालना है। मैं स्पष्टता से इस विषय में अपना जीवन का संघर्ष बाँटना चाहता हूँ। परन्तु पादरी होने के नाते मैं आदा दैवी हूँ और इस कारण मुझे लालसा की कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। मैं ऐसा कह कर लोगो में हँसी पैदा करता हूँ। या मैं स्थिति को नाटकिय रूप में पेश करता हूँ। जैसा की ऐलिय्या के नौकर सुबह उठते हैं, बाहर जाने के लिए दरवाजा खोलते हैं और देखते हैं की घर को दुश्मनों के रथों ने घेर रखा है। वह दरवाजा बंद करता है, बिस्तर पर लोट आता है और कहता है, "आज का दिन प्रचार के लिए उदासी का दिन है।" यदी हम अपनी बातों में कुछ नाटक डाल दें तो लोग इसे याद रखते हैं।

जू हम संतुष्ट और प्रसन्न होते हैं, तब हम गहराई से बाँटते हैं। मैंने अभी अपने जीवन में लालसा के साथ के संघर्ष के बारे में नहीं बताया है। अब हम पवित्रात्मा की शक्ति के बारे में बात करेंगे जिस ने एक जीवन को इस तरह काट कर दुबारा पटरी पर डाला है की वह इस लायक बन गया की परमेश्वर के समक्ष चल सके। अब हम कक्षा में सच का अनुभव कर रहे हैं।

कक्षा में चार आवाजों को बोलना चाहिए :

कक्षा में जीवन का अनुभव करने के लिए समूह में से चार आवाजों को बोलना चाहिए। एक आवाज परमेश्वर की है, दूसरी विषय की, तीसरी आध्यापक की और चौथी आवाज विद्यार्थी की। विषय की आवाज का अर्थ है की समस्या को बाईबल के उदाहरण के साथ बताना और आत्मा में चलने के बारे में बताना। अध्यापक की आवाज का अर्थ है की वह उस विषय पर अपने अनुभव को बताए। परमेश्वर की आवाज का अर्थ है की विद्यार्थी जो अनुभव कर रहे हैं, उस को लिख लें और परमेश्वर से पूछें, "प्रभु, आप मुझ से व्यभीचार और मेरे जीवन के बारे में क्या कहना चाहते हैं?" और विद्यार्थी की आवाज, प्रश्नों के माध्यम से, बैहस और अपने पत्रचार को बाँटते हूँ आयेगी।

एक बात का ध्यान रहे की किसी को अपने फत्राचार को पढ़ने के लिए मजबूर न किया जाए, क्योंकि यह बहुत निजी और सचेतन हो सकता है और वह इस बारे में समूह को बताने के लिए उस समय तैयार न हो। मौका उन्हें दिया जाता है, जो बाँटना चाहते हैं। मैं कक्षा में कुछ प्रश्न पूछता हूँ, जैसे, व्यभीचार क्या है? क्या व्यभीचार और परमेश्वर की सृष्टि की सुन्दरता का अन्नद लेने में कुछ अंतर है? जब आप व्यभीचार में घिर गये तो आप ने उस में से निकलने के लिए क्या किया?" इस तरह के प्रश्नों से कक्षा में कुछ बात चीत हो सकती है। परन्तु क्योंकि लिङ्ग भेद इतना उत्तेजित विषय है, इसलिए कक्षा में शांति रहेगी।

सच स्थापित करना :

एक अंतिम विषय: "तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा? वह जो खराई से चलता है और हृदय से सच बोलता है।" जब हम सच बोलते हैं, तब परमेश्वर का अनुग्रह और शक्ति प्राप्त होती है। परमेश्वर की उपस्थिती में कौन ठहर सकता है? वह जो सच बोलता है। आवश्यकता के समय अनुग्रह के सिंहासन के पास आओ। हमें अपने आप को या अपनी कमीयों को परमेश्वर से नहीं छुपाना है। हमें इन्हें ज्योती दिखानी है, और उस सच्चाई का अनुभव कराना है, "ज्योति अंधेरे को दूर करती है।"

अब हम थोड़ी देर उन बातों पर ध्यान देते हैं, जो कक्षा ग्रह में आत्मिक जीवन लाती हैं। कुर्सियों को अर्ध गोल आकार में बिछाना, आराधना से प्रारंभ करना, गले मिलना, कहानी का प्रयोग करना, कक्षा में सच का प्रयोग करना, स्पष्टता, इमानदारी, शुद्धता, प्रेम, अन्नद को

प्रोतसाहन देना और धोंगीपन को दूर रखना। इन में से हर एक मुख्य है। जब मैं शिक्षा देता हूँ, तो मैं इन का प्रयोग करता हूँ। मैं चाहूँगा की आप भी इन का प्रयोग करें। मैं यह भी चाहूँगा की सभा के मध्य और अंत में कुछ खाने पीने का भी आयोजन किया जाए।

स्वयं को खोजने का मार्ग दर्शन करने से विध्यार्थि सच के लिए लदने लगता है :

स्वयं को खोजने को लिए जिस बात की अवश्यता है वह है प्रश्नोत्तर का समय। सच पाने के लिए विध्यार्थियों को लदना होगा, जिस से उन का जीवन बदल जाएगा। मैं उन के सामने एक सामान्य जीवन की स्थिती रखता हूँ, और उन से उस पर टिपणि करने के कहता हूँ। मैं उन से पूछता हूँ की कितने ऐसा करेंगे? या कितने वैसा करेंगे? इस तरह वे उस स्थिती का अनुभव करने लगते हैं, और सोचने लगते हैं की यदी वे उस स्थिती में होते तो क्या करते? इस तरह हर एक उस समस्या में उलझ जाता है। मेरे साथ हर एक उस कहानी में प्रवेश कर लेता है। क्या यह अच्छा तरीका है? आप क्या सोचते हैं? या मैं उन से यह कहूँ की मैंने उस स्थिती को कैसे संभाला? ऐसा करने से वे मेरे साथ उस कहानी को जी रहे हैं। वे उत्सुक्ता का अनुभव कर रहे हैं। हम कक्षा ग्रह में सच के साथ जी रहे हैं।

मैं चाहता हूँ की आप स्वयं खोजें। यह नहीं की मैंने कह दिया की इस से आप का जीवन बदलेगा। आप का जीवन तब बदलता है जब आप स्वयं लड कर आपना निर्णय लेते हैं। यदी आप किसी स्त्री को देख कर कहते हैं की बहुत अच्छा काम किया परमेश्वर, तो सुन्दर पहाड को देख कर ऐसा क्यों नहीं कहते? यदी पहला गलत है तो दूसरा क्यों नहीं, क्या भेद है? यीशु कहते हैं की सदी तुम व्यभीचार कर रहे हो तो अच्छा है की अपनी आँख फोड लो। क्या आप इस से सहमत हैं? यदी हाँ, तो क्या आप ने अपनी आँख फोड ली है? क्यों नहीं? क्या फुँटी आँख तुम को व्यभीचार करने से रोकेगी? तो आख फोडने का महत्व क्या है? यीशु का क्या मतलब था? आप ने व्यभीचार को रोकने के क्या तरीके अपनाये जो वेकार रहे? कौन से तरीके कामयाब रहे? आत्मा में चलने का क्या अर्थ है? आत्मा में चलने से क्या मदद मिलती है? मैं जानना चाहता हूँ की आप के लिए क्या कामयाब रहा।

कक्षा को स्वयं को खोजने के लिए मार्ग दर्शन देना :

मैं उन से यह नहीं कह रहा की मैं क्या समझता हूँ की सच क्या है। मैं उन के स्वयं को खोजने में मार्ग दर्शन कर रहा हूँ, जिस में वे सोच रहे हैं और संघर्ष कर रहे हैं। वे अपने

मनों में सच को स्थापित कर रहे हैं बाइबल की मदद से। वे जो विश्वास करते हैं, मैं उसे खोजने में उन की मदद कर रहा हूँ। मुझे उस विषय में पूरी जानकारी होनी चाहिए, जो मैं सिखाने जा रहा हूँ। मुझे अपने स्वार्थ को छोड़ना होगा, तोकी मैं केवल अपनी बुद्धि उन पर न थोपूँ। मुझे उन का एक नौकर बनना है।

मुझे सही प्रश्न पूछने का तरीका सीखना पड़ेगा, सही प्रश्न, सही समय पर। मुझे यह जानकारी होनी चाहिए की हम कब विषय से भटक गये हैं, और फिर से धीरे से वापस पटरी पर लौटना पड़ेगा। केवल कोई एक या दो व्यक्ति जवाब देते रहें, ऐसा होने से रोकना पड़ेगा। हर एक ने भाग लेना है। यीशु ने भी प्रश्न पूछे, कई प्रश्न, जिससे लोग अपने आप को अंदर से पहचानने लगे। हमें प्रश्न पूछने में माहिर होना चाहिए - सही प्रश्न पूछने में माहिर होना चाहिए।

मैं जब किसी कक्षा को बैहस की ओर ले जाता हूँ तो मैं स्वयं को जहाज का कप्तान समझता हूँ, जो अपने जहाज को तूफानी रास्तों से निकाल कर किनारे पहुँचाता है। कई बार तो कक्षा में बहस इस हद तक छिड़ जाती है की मुझे कहना पड़ता है की अब बस करो और अपने प्रश्नोत्तर को लिख लो। जब खामोशी से प्रश्नोत्तर लिख लिए जाते हैं, तो जो पढ़ना चाहता है मैं उसे उसकी लिखी हुई बातें पढ़ने देता हूँ। इस रीती से सही अंत होता है।

नियंत्रण बनाये रखना :

कई बार ऐसा होता है की कोई व्यक्ति ऐसा प्रश्न करता है जो उस समय की स्थिती से हट कर होता है, तो उस समय आप को चाहिए की आप बीच में उसे रोक कर बोलें, "यह अच्छा प्रश्न है, परन्तु हम इसे अभी नहीं परन्तु, कक्षा समाप्त होने पर बात करेंगे।" ऐसा न करने से कक्षा का संतुलन बिगड़ जाता है। परन्तु कक्षा समाप्त होने पर उस व्यक्ति के साथ कुछ समय बिताना मत भूलीए।

कई बार जब कोई विध्यार्थि आप से प्रश्न करता है तो आप उसी प्रश्न को कक्षा के सामने रख कर उन से पूछ सकते हैं की, "इस बारे में आप का क्या विचार है?" इस से सारी कक्षा में उत्तेजना पैदा हो जाएगी। आप सब कुछ जानने वाला, जवाब देने वाला व्यक्ति, अभिनेता, आदी कहलवाने से अपने आप को रोकीए। आप वहां अपने अहंकार को बड़ावा देने नहीं आए हैं। आप वहां पर विध्यार्थियों की सेवा करने आए हैं ताकी उन्हें उन के हृदयों में मसीह के अनुग्रह का अनुभव करवा सकें। यह आप का लक्ष्य है।

कक्षा में बातचीत कैसे करवायें :

क्या होता है जब आप की कक्षा में कोई बोलता नहीं, और कुछ बाँटना भी नहीं चाहता है? मैंने देखा है की एक या दो सप्ताह तक मैं बोलता रहता हूँ, उसके बाद धीरे धीरे विध्वार्थि बाँटना शुरू कर देते हैं। मुझे सब से बड़ी चुनौती इंगलैण्ड में मिली। अग्रेज लोग इतने सुलझे होते हैं की वे कुछ बोलते ही नहीं हैं। जिन गिरजाघरों में मैंने उपदेश दिया, कोई भी व्यक्ति खुल कर अपने अनुभव नहीं बताना चाहते थे। आखिरकार मैं मैंने प्रश्न करना छोड़ दिया और केवल अपने जीवन के बारे में बता कर चला जाता था। ऐसा करके मैंने कम से कम उन लोगों में बाज तो बो ही दिया था।

कई समीह मुझ से सीख कर मेरी तरह करने लग जाते हैं। कई समूह दूसरे समूह से अधिक सपष्ट होते हैं। और अपनी प्रतिष्ठा खोने के बारे में क्या, क्योंकि आप ने अपने संघर्ष को बाँटा है और आप भी एक मनुष्य बन गये हैं? मैं केवल यही कह सकता हूँ की लोग मेरे पास आकर कहते है की मैं एक ताजी हवा की सर्वाँस हूँ। "किसी को इतना सही पाना बहुत अच्छा लगता है।" कोई जिस से वे बात चीत कर सकते हैं। कोई जो उन के स्तर का है।

"प्रभु, हमारे डरों और असुरक्षित क्षेत्रों को चंगा कर, ताकी हम गहराई से बाँट सकें।"

शब्दों के बारे में कोई झगडा नहीं :

एक आखरी खतरा, समीह की बैहस का होता है। हमें उलटे अर्थों को नहीं उठने देना है और न ही हमें किसी व्यक्ति को उस के शब्दों के बारे में झगडा करना है। बाईबल सपष्ट है। २ तीमुथियुस २ : १४ कहता है, "इन बातों की सुधी उन्हें दिला और प्रभु के सामने चिता दे की शब्दों पर तर्क वितर्क न किया करें, जिनसे कुछ लाभ नहीं होता वरन सुनने वाले बिगड जाते हैं।" कैहने वाले के दिल की बात को सुनिए। यदी उन की कही हुई बातों के कारण लोगो में तनाव या गलत अर्थ निकल रहा है तो उन के विचारों को सही करीए। आत्मा शब्दों से अधिक महत्वपूर्ण है।

अध्याय ७ के कुछ मुख्य विचार :

१. केवल वही सच जिस के लिए विध्यार्थि लड़ते हैं, उसी को महत्व दिया जाएगा और याद रखा जाएगा।
२. हम विध्यार्थियों को मगर्ग दर्शन कर, स्वयं को खोजने में, कहानी, नाटक और निजी मुलाकात के लिए लड़ना सिखाते हैं।
३. जीवन और शिक्षा के लिए कहानी प्रमुख है।
४. यीशु ने लगातार कहानीयों का प्रयोग किया। जीवन की भी यही माँग है की हम कहानी का प्रयोग करें।
५. इब्रानी शिक्षा देने के तरीके की माँग निजी मुलाकात है।
६. कक्षा में जीवन होता है। हम उस जीवन के साथ प्रारंभ कर सकते हैं।
७. शिक्षा देने का मतलब है की सच का अनुभव कक्षा में करना।
८. जीवन के गहरे अनुभवों को बाँटने से पहले, समुदाय, सपष्टता और सच को स्थापित करना चाहिए।
९. हँसते रहो। प्रसन्नता से जीवन आसान हो जाता है।
१०. कक्षा में चार आवाजें आवश्यक हैं: विषय की, अध्यापक की, विध्यार्थि की और परमेश्वर की आवाज।
११. बात चीत होनी चाहिए।
१२. लड़ाई नहीं होनी चाहिए। शब्दों का तर्क वितर्क नहीं होना चाहिए।
१३. आप को जो कुछ विषय मुख्य लगते हों उन की सूची बनाईये...

कार्य :

१. शिक्षा देते में गहराई से बाँटिये।
२. शिक्षा देते समय समूदाय को स्थापित करीए।
३. शिक्षा देते में कहानीयाँ बताईये।
४. शिक्षा देते समय कक्षा में बात चीत जारी रखीए।
५. परमेश्वर से कहीए की शिक्षा देते समय वह आप को आत्मा से भर दे।

विवाद करें और बैहस करें :

१. क्या आप ने छोटे समूहों का अनुभव किया है जो मृत हैं? क्या आप ने छोटे समीह की सभाओं का अनुभव किया है जो विध्युत से भरी हैं? क्या भेद थे? एक में क्या हो रहा था जो दूसरे में नहीं हो रहा था? क्या यह संभव है की हर छोटे समूह की सभाओं को विध्युत से भरा हुआ बनायें? यदी हां, तो कैसे?
२. क्या आप इस बात से सहमत हैं की जीवन के लिए कहानी मुख्य है? यदी हाँ, तो कितनी प्रमुख?
३. कहानी के साथ तुलना करने पर परमेश्वर के वचन का क्या स्थान है?
४. कक्षा को संम्भोदित करते हुए कैसे कोई आत्मा में भर सकता है? क्या वह उसे सही नहीं कर सकेगा? क्या सही नहीं करना थीक है? क्या वह गलतियों से सीख सकते हैं? क्या वह प्रयोग कर के बैहतर हो सकते हैं? भविष्यवक्ता रूपी शिक्षकों की कितना आवश्यकता है जो कक्षा को आत्मा से भर सकते हैं? यदी हम इस तरह के शिक्षकों को नहीं बना सकते तो इस का नतीजा क्या होगा?

५. शिक्षा देते समय क्या आप उतना समय लेते हैं की कक्षा आत्मा से भर जाए? यदी आप गलती करते हैं, तो क्या आप फिर से उठ कर कार्य करने के तैयार हैं जब तक मसीह की आत्मा आप में भर नहीं जाती? इस तरह प्रचार करने के लिए आप को कितना समय लग सकता है? क्या आप इतना समय देने के लिये तैयार हैं? यदी नहीं, तो आप को अपनी कक्षा और सभाओं का भविष्य कैसा दिखता है? क्या कलीसीया में आत्मिक जीवन से कुछ कम मिलता है? यदी हम इसे न दें लोग अपनी आत्मा को तृप्त करने कहाँ जाएंगे? शायद नये युग और पूर्वि गूढ विध्या की ओर?
६. सच्चे बनने की आवश्यकता, ताकी हम दैवी अनुग्रह पा सकें: यह परमेश्वर के लिये कितना आवश्यक है की आप उस के समक्ष सपष्टता से और इमानदारी से और सच्चाई के साथ, बिना किसी कवच के आएं? क्या कलीसीया में इस तरह का दबाव है की आप अपनी कमजोरियों को बताने के बजाए उन्हें छुपाएं? मुझे पता चला है की कई लोग शराबखाने में जाना इसलिए पसन्द करते हैं, क्योंकि वे वहाँ पर अपने सही रूप में रह सकते हैं। क्या हम इस तरह में रह सकते हैं? क्या यह आपके छोटे समूह में है? प्रेरितों के काम में हनन्याह और सफीरा की कहानी पर ध्यान दीजिये। वे आत्मा से भरी कलीसीया के आत्मा से भरे सदस्य थे, और दसवाँ अंश से अधिक देते थे। परन्तु वे सच्चे नहीं थे। हम जब उसके समक्ष जाते हैं तो परमेश्वर हमारी सच्चाई की कमी के बारे में क्या अनुभव करता है?
७. पत्राचार का जवाब - "प्रभु, इस आध्याय के विचारों के बारे में आप मुझ से क्या कहना चाहते हैं?"

अध्याय ८

छोटे समीह में कहानी का स्थान

हम यह पहले ही कह चुके हैं की जीवन एक कहानी है जो कई छोटी कहानीयों को जोड़ कर बनी है। इसलिए यदी मैं जीवन को बदलने वाला उपदेश देता हूँ, तो उस का मुख्य आधार कहानी होती है। यीशु ने ऐसा ही किया। बाईबल कहती है की, "बिना दृष्टांत वह उन से कुछ न कहता था।" मत्ति १३ : ३४।

पहले मुझे कहानी की शक्ति के बारे में पता नहीं था। मैं दाहिने दिमाग का बना हुआ हूँ, जो तार्किकता पर विश्वास करता है। बायां दिमाग कहानी, विचार, सोच, स्वपन, दर्शन और स्पर्श से संबंधित होता है। इसलिए यदी मुझे उस व्यक्ति को पूरी तरह स्पर्श करना है, तो मुझे दाहिने दिमाग की तार्किकता से अधिक कुछ करना होगा। मुझे ऐसी कहानीयाँ बनानी होंगी जो उस व्यक्ति को पूरी तरह आकर्षित करे। उस की सोच, उस का विचार, भावनाएँ, दिमाग, शरीर, आत्मा, सब को आकर्षित करना है।

क्रमिक ईश्वरज्ञान का चलन :

कॉलेज में मुझे क्रमिक ईश्वरज्ञान सिखाया गया की सच कहाँ है। मुझे सिखाया गया की मेरे उपदेशों में तीन विचार होने चाहिए और एक कविता। विचार उपदेशों की मुख्य बातों को बताएँगे और कविता को अंत में कहा जाए जिससे वह लोगों की भावनाओं पर असर कर उन्हें रुला दे।

यीशु के सिखाने का तरिका कहानीयों द्वारा था ;

वे कहानीयों को दृष्टांत के रूप में बताते थे। वे दृष्टांत तो बताते थे परन्तु उस का अर्थ नहीं बताते थे। वे दृष्टांत तो बताते थे परन्तु उस का अर्थ बताना अवश्य नहीं समझते थे। दृष्टांत बता दिया और उसका मुख्य विषय बताया ही नहीं, क्या ऐसा आप सोच सकते हैं? चले उन के पीछे आकर पूछते थे की "इस का अर्थ क्या है?"

कहानी की शक्ति :

उन्होंने यह क्यों नहीं समझा की लोगों के लिये विषय आवश्यक था? क्या मैं यह कह सकता हूँ की यह इसलिए था, क्योंकि कहानी में सैकड़ों मुख्य बातें होती हैं और इस पर निर्भर होता है की आप अपने जीवन में उस समय किस स्थान पर हैं। इसलिए जब आप एक अच्छी कहानी बताने वाले बन जाते हैं, तो आप के प्रचार से सैकड़ों लोगों पर सैकड़ों प्रकार से असर होता है। कहानी की शक्ति इस पर निर्भर होती है की आप क्या हैं। हम अपने जीवनों को कहानी की तरह अनुभव करते हैं। कहानी रिश्ता बनाती है, क्योंकि कहानी के कलाकार और आप के रिश्ता बन जाता है।

मैंने यह अनुभव किया की बाईबल तो लोगों के जीवनों की कहानीयों से भरी पड़ी है। बाईबल का ८०% कहानीयाँ हैं। हम अपने उपदेशों में ८०% मुख्य बातें कहते हैं और २०% कहानी, जबकी परमेश्वर ने ८०% कहानी डाली है और केवल २०% मुख्य बातें। मैं कई वर्षों तक इस बात की शिकायत करते रहता की परमेश्वर ने बाईबल में कैसे लिखा, क्योंकि जब मैं सिखाने लगा तो मैं एक लिखें हुए नमूने पर लिख लेता ताकी सच को सही तरह सुनने वालों को बता सकूँ।

आप को पता है:

अ) स्वर्ग लोक कैसे जा सकते हैं?

१. पश्चताप
२. विश्वास
३. बपतिस्मा ले कर

ब) पीछे की ओर कैसे फिसलते हैं?

१. _____
२. _____
३. _____

यदी उस ने सही तरह लिखा होता तो मुझे दुबाराह लिखने की आवश्यकता नहीं पडती। एक दिन मुझे परमेश्वर ने कहा, "मार्क, मैंने पहले इसे सही लिखा था।" मैं जब इस

पर विचार करने लगा तो मुझे लगा की वह सही था। मुझे उसे दुबाराह लिखने की आवश्यकता नहीं। जो मैं कर रहा था, वह परमेश्वर की योजना नहीं थी। दिल की भाषा शायद, स्वपन, दर्शन और चित्र होती है। यदी मैं किसी के मन को छूना चाहता हूँ, तो मुझे कहानी और दृष्टांतों का प्रयोग करना चाहिए, जैसे की यीशु ने और परमेश्वर ने किया है।

यदी हम अपनी बुद्धि और अपने परिश्रम से सच साबित करना चाहें, तो नतीजा हमारे सामने आज २३०० लडते हुए समूदाये के रूप में है। शायद हम गलत वृक्ष का फल खा रहे थे। हमें ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना है। शायद हमें जीवन के वृक्ष का फल खाना है।

मैंने इस पुस्तक में क्या किया। केवल पश्चताप, उस झूठ के लिये जो मेरी परम्परा ने मुझे सिखाया। मैंने पश्चताप किया। मैंने परमेश्वर से क्षमा माँगी की मैं दाहिने दिाग की आराधना करता था। उस ने मुझे दोनों करफ के दिमाग का प्रयोग करने को कहा। अब वह मुझे उन का प्रयोग करना सिखायेगा।

मेरे कुछ पत्राचार :

अब मैं कहानीयाँ बताता हूँ। परमेश्वर ने मुझ से कहा, "मार्क, मैं जो कह रहा हूँ, उस पर ध्यान लगा। सामान्य रूप से जीवन जीने के लिये, हमें जीवन के बारे में बताना है, बजाए इसके की विचारों के क्रम में जीने के लिये, विचारों के क्रम को बताया जाये। तुम्हारे जीवन के रहन सहन के अनुसार तुम्हारे शिक्षा देने का तरीका भी बदलता है।"

"जितने स्वतंत्रता से जीवन जीयोगे, उतनी स्वतंत्रता से, हर समय और हर स्थिती में, तुम जीवन के बारे में बता सकोगे: सच्चा जीवन, पूर्ण जीवन, लगातार जीवन। तुम विचार से जीवन के बीच कूदते नहीं रहोगे, परन्तु सर्वदा अपना जीवन बाँटते रहोगे और उस में से शिक्षा देते रहोगे। अब से केवल उपदेश मत देना। परन्तु अपने जीवन को बाँटना और उस के द्वारा शिक्षा देना। आज से शिक्षा देते समय अपने जीवन के बारे में बताते हुए शिक्षा देना। इस से शिक्षा देने का तरीका बदलेगा। पहले जीवन की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करो, बाद में जो तुम को जवाब मिले हैं, उन पर ध्यान केंद्रित करो।"

इस तरह की आज्ञा का पालन करने में कितना समय लग सकता है? शायद तीन वर्ष। मुझे इतना समय लग गया था। परन्तु अब मैं केवल कहानीयाँ सुनाता हूँ। मेरे लिखने का तरीका बदला है।

क्या इस पुस्तक में आप को नाटक और संघर्ष और जीवन की कहानी मिली? मुझे उम्मीद है की मिली होगी। मैं अब इस तरह पढ़ाता हूँ। मैं चाहूँगा की आप लोग भी इसी तरह पढ़ाएँ। यह बदलाव रातों रात नहीं होता। आप को परमेश्वर के समक्ष पश्चाताप करना है और जैसा मैंने पिछले अध्याय में बताया है, इस बदलाव के क्रम को अपनाना है।

मैंने बाइबल के शिक्षा देने की रीता को अपना कर प्रारंभ किया। मैंने कहानीयों पर आधारित ईश्वर ज्ञान की १० से १५ पुस्तकें पढ़ीं। मैंने उन पर प्रयोग किया और मुख्य बातों को लिख लिया। इन मुख्य बातों पर मैंने एक पुस्तक लिखी है जिस का नाम है, "कक्षा में आत्मिक जीवन डालना।" अब मुझे यही तरीका अच्छा लगता है। सुनने वाले भी आकर्षित होते हैं। मेरे सुनने वालों ने तो मुझ से कहा है की जो मैं करता हूँ, उस पर एक पुस्तक लिखूँ। यही वह पुस्तक है।

सच क्या है? :

परन्तु सच के बारे में क्या? क्या इस के लिये कोई स्थान है? हाँ है। इस सच पर बाइबल में कई पुस्तकें हैं, जैसे, लैव्यवस्था, व्यवस्थाविवरण, रोमियों, इब्रानियों और दूसरी पुस्तकों के कई भाग। पवित्रशास्त्र का केंद्र कहानी है और इस कर के प्रचार और शिक्षा देने का केंद्र भी कहानी ही होनी चाहिए। परन्तु मेरे अंदर कुछ चिल्लाता है, "परन्तु सच क्या है?" मैं इसे पूरी तरह समझ लेना चाहता हूँ। पिलातुस ने यही प्रश्न यीशु से पूछा था, "सच क्या है?" क्या आप इस का उत्तर जानते हैं? क्या यीशु ने उन्हें तीन बातें कहीं या ३३ बातें या एक बात या कोई रीती या कोई उपदेश दिया? मैं होता तो कहता। परन्तु यीशु ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने कहा, "मैं सच हूँ।" इस का क्या अर्थ है, "मैं सच हूँ? सच कोई व्यक्ति नहीं, वह सच्चाई है, जिसे मैं प्रेम में डाल कर कील से दिवार पर टाँग दूँ या लोगों के गलों से नीचे उतार दूँ।" परन्तु यीशु के लिए नहीं। सच मनुष्य में था, जो दिवार पर नहीं परन्तु क्रूस पर टाँगा गया। सच निजी था।

अब मैंने उसे खो दिया। मुझे यह मत कहो की सच निजी है। सच वह है जिस के लिए मैं लड़ सकता हूँ? परन्तु इस का फल क्या मिलेगा? २३०० लड़ते हुए समुदाय। परमेश्वर, क्या मैं गलत हूँ? मैं विश्वास करता हूँ की बाइबल परमेश्वर का अटल वचन है। मैं स्वर्ग और नरक में विश्वास करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ की मुक्ति केवल यीशु के खून से मिलती है। मुझे कुछ हो रहा है, अब मैं वह व्यक्ति नहीं रहा जो पहले था। मैं बदल रहा हूँ।

प्रधानता, एक प्रतिकार करने वाली संघठन? :

फिर मैंने पाया की प्रधानता, जिस चाल में मैं बड़ा हुआ था, वह बीसविं सदी में स्वतंत्र विचार के सिद्धांत में एक प्रतिकार करने वाली संघठन को रूप में उभरी थी। क्या मैं सच में प्रतिकार करने वाली संघठन का भाग बनना चाहता हूँ? प्रतिकार करने वाले के पास सारा सच होता है, इस बात का क्या यकीन है? मुझे प्रतिक्रिया के द्वारा जीना है या राजाओं के राजा के साथ रिश्ता जोड़ कर जीना है? मुझे राजाओं के राजा के साथ रिश्ता जोड़ कर जीवित रहना है। इसलिए मुझे अब बदलना होगा। मुझे फिर पश्चताप करना होगा। "प्रभु, मैं क्षमा चाहता हूँ की मैं एक प्रतिकार करने वाले संघठन का भाग था। प्रभु, मुझे क्षमा करीए। मुझे आप के द्वारा जीने दीजीए। परन्तु प्रभु, अब मैं डर रहा हूँ। मैं कौन हूँ? मैं किस पर विश्वास करता हूँ? वह कबूतरखाना कहाँ है जो मेरे लिए बना है? मुझे एक नाम दीजीए। यदी मैं सिद्धांतवादी नहीं हूँ, तो मैं कौन हूँ?"

"मार्क, तुम मेरे बच्चे हो, मेरे बेटे, मेरी देह का हिस्सा हो। तुम्हें अध्यात्मविध्या की तरह नाम देने की क्या आवश्यकता है? तुम्हें अध्यात्मविध्या की तरह नाम देने की क्या आवश्यकता है? तुम्हें अध्यात्मविध्या के कबूतरखाने में रहने की क्या आवश्यकता है? इस से तुम्हें क्या लाभ है? इस से तुम्हें सुरक्षा मिलेगी या तुम्हें सुरक्षा मेरे साथ रिश्ता रखने में मिलती है या मेरे साथ बात चीत करने में मिलती है या मेरे साथ अनुभव में मिलती है? निश्चय कहाँ है, तुम्हारे हृदय में या तुम्हारे दिमाग में? जो बीत गया, उस के पीछे मत भागो। मैं तुम्हें बुला रहा हूँ, की तुम आओ और पानी पर चलो, वादा किये हुए देश में प्रवेश करो। पीछे मत हटो। अपनी बीती हुई जिन्दगी की ओर मत जाओ। मैं तुम्हारा जीवन हूँ। मैं मार्ग, सच और जीवन हूँ। कोई व्यक्ति मेरे बिना पिता के पास नहीं आ सकता। अपने कार्यों और ईश्वरज्ञान के साथ आने का प्रयत्न मत करो। मेरे बेटे, मेरे पास आओ। इस बात से मत डरो की आगे क्या है। आगे मैं हूँ। मैं ने तुम्हें अपने दाहिने हाथ में उठा रखा है, मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। मत डरो, पिता की अच्छी इच्छा है की वह अपने बच्चों को अच्छे उपहार दे। इसलिए सेनाओं का प्रभु कहता है की मेरे पास आओ।"

धन्यवाद प्रभु। आपने मेरे डर को दूर किया। आप मेरा जीवन हैं। आप मेरी शक्ति हैं। मैं आप ही के पास आता हूँ। मैं आप के सिंहासन के पास आराधना करता हूँ।"

मैं कैसे जानूँगा की यह सब सच है? मैं कैसे जानूँगा की मैं धोखा नहीं खा रहा हूँ? मुझे सुरक्षा कैसे मिलेगी? आप मेरी सुरक्षा करेंगे। मैंने यह सीखा है की मैं अपने मन या दिमाग पर विश्वास न रखूँ, परन्तु मसीह के शरीर के बडते भागों के मन और दिमाग पर विश्वास करूँ। पहले मेरे पास चार स्थापित पादरी हैं, एक जो की महान ईश्वरज्ञानी है और जो यूनानी और इब्रानी का विध्वान है, जिसे मैंने यह पुस्तक छपने से पहले दिखाई थी। उन को इसे पढ कर कहना होगा, "हाँ मार्क, यह परमेश्वर है," वरना मैं इसे छोड कर फिर से प्रारंभ करूँगा। मैं गलत हो सकता हूँ। पता नहीं मैंने इस पुस्तक में कितनी बार पश्चताप किया है। और मैं हजारों बार अपने जीवन में पश्चताप करता रहूँगा। मुझे अपनी गलती स्विकार करने में कोई आपत्ति नहीं।

इस अध्याय का शीरशक है, "कहानी का अध्याय।" क्या आप समझ पाए की जीवन एक कहानी है? क्या मैं इस समय भी अपने जीवन में कई कहानीयों के सध्य हूँ? जब मैं अपनी कहानी बाँट रहा हूँ, तो क्या आप को कहानी की शकत्ि समझ में आ रही है? क्या आप यह बात समझ पाए की बाईबल अधिकतर कहानीयों से बनी है और यीशु बिना दृष्टांतों के नहीं सिखाता था? जब आप यह सब समझेंगे तब आप का अगला प्रश्न होगा, "परमेश्वर को कहानी में कक्षा के मध्य कैसे मुलाकात कर सकते हैं?" परन्तु, इस का जवाब जानने से पहले हम छोटे समीह में पवित्रात्मा के स्थान के बारे में बात करेंगे।

अध्याय ८ के कुछ मुख्य विचार

१. क्रमिक ईश्वरज्ञान जीवन के बारे में बताता है। जीवन एक कहानी है।
२. शिक्षा देते समय हमें कहानी के रूप में सिखाना चाहिए। कहानी में शक्ति है की वह जीवन बदल सकता है। क्रमिक ईश्वरज्ञान लोगों में बदलाव नहीं लाता।
३. सच, "क्या", नहीं है। वह "कौन" है।
४. हमें बाँयें दिमाग के सच की आराधना करना छोड देना चाहिए।
५. इस अध्याय में आप को जो बातें मुख्य लगती हैं, उन्हें लिख लीजीए।

कार्य :

आप के जीवन में परमेश्वर का जो अनुग्रह हुआ है उस की कहानी अपने छोटे समूह में बताईए। इस तरह बताईए की सुनने वाले प्रेम और अच्छे कार्यों से भर जाएं।

विचार करें और बैहस करें :

१. जीवन में कहानी कितनी मुख्य है? ईश्वरज्ञान के बक्से बनाना कितना मुख्य है? ईश्वरज्ञान के बक्सों का क्या स्थान है? क्या मुझे पने जीवन को उन ईश्वरज्ञान के बक्सों में भरना है, जिन्हें मैंने बनाया है?
२. क्या आपने क्रमिक ईश्वरज्ञान पढ़ा है? क्या आप ने उस तरह जीने की कोशिश की है? ईश्वरज्ञान से जीने का फल क्या मिला? क्या यह अच्छा था, या बुरा या मिला जुला? ईश्वरज्ञान के अनुसार जीवन व्यतीत करने के अलावा क्या कोई और अच्छा रास्ता है? यदी हाँ, तो वह क्या है?
३. क्या सच निजी है? क्या वह मन से बाहर का है? क्या वह दोनों है? क्या यह हमारे बीच में है? क्या आप जानते हैं की व्यज्ञानिक अब पुस्तक लिख रहें हैं जिस का शीरशक है, निजी ज्ञान? क्या आप यह जानते हैं की केवल किसी घटना को होते देखने से, उसे बदल सकते हैं? क्या इस तरह की बातों के बारे में सोचना आप को व्याकुल कर देती हैं? अनिश्चित? व्याकुल? यदी हाँ, तो क्यों? आप का यकीन कहाँ है? आपने अपने दिमाग में जो ईश्वरज्ञान बना रखा है, उस पर या उस व्यक्ति में जो आप के मन में है? आपका यकीन कहाँ होना चाहिए? क्या आप को यह सिखाया गया की आप अपने मन पर अविश्वास करें और दिमाग पर विश्वास? क्या यह यीशु का रास्ता है?
४. ईश्वरज्ञान के कबूकरखाने में रहना आप के लिए कितना मुख्य है? क्या यह जितना होना चाहिए उससे भी मुख्य है? आप कैसे जानेंगे?

५. क्या आप जीवन को एक कहानी के रूप में जीते हुए आराम अनुभव करते हैं, या आप जीवन को ईश्वरज्ञान के बक्से में जीते हुए आराम अनुभव करते हैं? परमेश्वर कहाँ चाहता है की आप रहें? आप बक्से से कहानी की ओर कैसे जाएंगे?
६. मत्ति ११: २-६ में यीशु ने यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाले को जो कहानी के रूप में जवाब दिया था, उसे देखीए। क्या आज के धार्मिक लोग यीसु ने जो जवाब दिये हैं, उसे अपनाएंगे? क्या आप अपनाएंगे? क्या आप का जवाब इस के बदले यह होगा की, "क्या आप नहीं जानते की शैतान इस तरह के कार्यों को कर सकता है? इस से कुछ साबित नहीं होता।"
७. पत्राचार का जवाब - "प्रभु, आप इस अध्याय के विचारों के बारे में मुझ से क्या कहना चाहते हैं?"

अध्याय नौ पवित्रात्मा अध्यापक है

यह ठीक है की कहानी जीवन का केंद्र है। कहानी जीवन है। जीवन कहानी है। शिक्षा देना भी कहानी है। कक्षा में कहानी होनी चाहिए।

मैंने जो शिक्षा देने के बारे में पहले सीखा है, उसे मैं फेंक दूंगा। मैं एक शुद्ध वातावरण में साफ जगह पर बैठ कर सुनता रहता और तब तक नहीं बोलता था, जब तक की मुझ से कुछ पूछा न जाए। मैं जो सीख रहा था उसका मेरे जीवन से कुछ सम्बंध नहीं था इस कारण मैं बोर हो जाता था। मेरी उत्पादता समाप्त हो चुकी थी, क्योंकि मेरा मन और जीवन अब मेरे जीवन या शिक्षा से कुछ रिश्ता नहीं था और मुझे ३० अंश जवानों के साथ एक साँचे में डाल दिया था। मैं इन सब को फेंक कर कहने लगा, "यह वह नहीं है जो मुझे चाहिए।" यह वह नहीं है जो मैं दूसरों को नहीं देना चाहता। यह वह नहीं है जो यीशु ने किया। उसने बारह को चुना और उन को अपने साथ चलने दिया। मैं भी बारह को चुनूंगा और उन को अपने साथ चलने दूंगा। यदी मैं ऐसा कक्षा ग्रह में करता हूँ तो यह कठिन होगा, परन्तु, मैं फिर भी उन्हें अपने साथ चलने दूंगा। हम अपने जीवन की कहानीयों को बाँटेंगे। हम एक दूसरे से एक गहरे स्तर पर मुलाकात करेंगे। हम बदलाव को अपने मनों के अंदर एक गहरे स्तर पर अनुभव करेंगे, क्योंकि कहानीयाँ गहराई से छूती हैं। हम पूर्ण हो जाएंगे क्योंकि हम स्पष्टता से और गहराई से बाँटेंगे।

कक्षा में कहानीयों को प्राप्त करने के रास्ते :

हम कक्षा में कहानीयाँ प्राप्त करने के रास्तों को देखते हैं। पहले, हमें यह जान लेना है की समूह में कई कहानीयाँ हैं। परमेश्वर की कहानी है, जो बाईबल में लिखी हुई है। और बाईबल के अंदर के पात्रों की कहानीयाँ भी हैं। मेरी कहानी शिक्षक के रूप में है, आप की कहानी विधार्थि के रूप में है, कक्षा की एक साथ ुन्नति की कहानी या नाटक भी है और कक्षा में जो पुस्तकें पढ़ते हैं, उन लेखकों की कहानी या नाटक भी है। कई कहानीयाँ हैं जो एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं ताकी अधिक से अधिक बहाव हो सके। इसी से सर्वशक्तिमान परमेश्वर की अधिक से अधिक शक्ति और अनुग्रह छोटे समूह में प्राप्त होता है।

आत्मा के बहाव को पहचानना सीखना :

मुझे उसे पहचानना सीखना है। कैसे? पहले, मुझे यह जानना है की आत्मा का बहाव का अहसास कैसा होगा। मेरे मन में क्या होगा? मैं दूसरे व्यक्ति के मन का अनुभव कैसे

करूंगा? मुझे पवित्रशास्त्र से मन को पहचानना होगा और इस के लिए मुझे कुछ समय व्यतीत करना होगा। मुझे ऐसा करने में एक वर्ष लग गया था। मैंने बाइबल की सारी १४०० वचन जो मन और आत्मा के बारे में बताते हैं, उन के पढ़ा, उन पर प्रार्थना करी और परमेश्वर से पूछा, "प्रभु मुझे मेरे मन का अनुभव करने दो। इस का अनुभव कैसे लगता है?" आखिरकार एक वर्ष के बाद मैं सर के जानकार के बजाए मन का जानकार बन गया। मुझे अपने मन और आपके मन और उन के भीतर की आत्मा के बारे में पता चला। अब मुझे पता है की अपने भीतर और समूह के भीतर आत्मा के बहाव का अनुभव कैसे किया जाए। अच्छा लगता है। यह विध्युत की तरह लगता है। यह जीवन दान देने वाली है, विश्वास उत्पन्न करने वाली, प्रेम पैदा करने वाली, चंगाई देने वाली। मुझे उसकी उपस्थिति या अनउपस्थिति का अनुभव होने लगता है। जब वह उपस्थित होता है तो मुझे अच्छा लगता है। मुझे अच्छे अहसास का अनुभव होता है। जब वह उपस्थित नहीं होता तो मुझे लगता है की मैं कक्षा को छोड़ कर घर चला जाऊँ और दूरदर्शन देखने लग जाऊँ। वहाँ कम से कम मुझे एक कहानी मिलेगी जिस के भीतर मैं प्रवेश कर सकता हूँ।

अब शिक्षक होने के नाते, मैंने अपने मन और आत्मा के अनुभव को एक पुस्तक में लिख छोड़ा है जिस का नाम है, मसीह में स्थिर रहना - भाग २। मैं चाहूँगा की आप इसे पढ़ें ताकी आप मन में बहाव और जीवन में आत्मा का बहाव का अनुभव कर सकें।

मैं सोचता रहा, "क्या मैं तुम्हें बताऊँ की क्या प्रश्न पूछने हैं, किस क्रम में पूछने हैं, यह हम कितना करते हैं और वह हम कितना करते हैं?" मैं यह बता सकता हूँ परन्तु, "इस विषय के बारे में आत्मा क्या कहता है? वह हमें कहाँ ले जा रहा है? जीवन का बहाव हमें कहाँ ले जा रहा है? क्या मैं जीवन के बहाव का अनुभव कर सकता हूँ?" यदी नहीं, तो इस का यह अर्थ है की हम मन की गहराई तक नहीं पहुँच पाए हैं या हम रास्ता भटक गये हैं। "प्रभु, कहाँ? मेरी सहायता करीए, मैं प्रार्थना करता हूँ। मेरा मार्ग दर्शन करीए। हमें आपके मन और आत्मा की ओर भी गहराईयों में ले जाईए। आप क्या चाहते हैं की हम कहाँ जाएँ? मैं अपना शिक्षा चित्र को अलग रखना चाहता हूँ। विध्यार्थियों के हृदय कहाँ हैं? मेरा मन कहाँ है? परमेश्वर, आप का मन कहाँ है?"

पवित्रात्मा की लहर पर तैरना :

मैं जब पढ़ाता हूँ, तो इन प्रश्नों को पूछता हूँ। मैं आत्मा की लहर पर तैर रहा हूँ। और हाँ, मैं गिर सकता हूँ और अचक सकता हूँ। जब शाम विनोदहीन हो जाती है, तो मुझे यह पसन्द नहीं आता।

अब तक यह बात साफ हो जानी चाहिए की हमें पवित्रात्मा से मुलाकात करनी है और वही हमारा मार्ग दर्शन करेगा और हमें हमारे भीतर की कहानी बताएगा। मैं कैसे मान लूँ की पवित्रात्मा उपस्थित है? क्या वह हमेशा उपस्थित नहीं रहता? क्या मुझे उसे बुलाना होगा? एक लेखक ने उसके घर के दरवाजे पर लिख रखा था, बुलाओ या न बुलाओ, परमेश्वर उपस्थित रहता है।" ईमानुएल, परमेश्वर हमारे साथ, तो क्या मुझे उसे बुलाना होगा? हाँ, बुलाना होगा। हर कक्षा जो तुम लेते हो, तुम्हें पवित्रात्मा को उपस्थित रहने के लिए बुलाना होगा, की वह आकर तुम्हारा अध्यापक बने, तुम्हारे मन को खोले, कक्षा में उपस्थित समीह में अत्मा भर दे।

आत्मा की लहर का अनुभव मेरे लिए क्या है :

मैं आप को कक्षा में आत्मा के बहाव के अनुभव के बारे में बताता हूँ। यह उस वक्त होता है जब हम उस कार्य में जो हम कर रहे हैं, उस में पूरी तरह से डूबे हुए हों। स्पष्टता, ईमानदारी और बाँटने के गहरा स्तर होता है। लोगों के मनो में गहरी बातें होती हैं। मुझे एक बहाव का अनुभव होता है। जो होता है उसके बारे में हम मानसिकता के स्तर पर नहीं बता सकते। जब मैं बोल रहा हूँ तो मेरे सामने एक दर्शन हो सकता है।

मैं अपने शब्दों को नहीं चुनता। वह अपने आप मेरे मूँह से निकलते हैं। समूह में एक जीवन की चिंगारी है। हर कोई दिलचस्पी ले रहा है और उस में डूबा हुआ है। विश्वास, आशा और प्रेम को हवा में छोड़ दो। हमें लगता है की हम अस्तित्व से बड़ कर हैं। यह इसलिए है क्योंकि हम निजी सचेतता से परमेश्वर की सचेतता की ओर जा चुके हैं। यह एक मुख्य बात है। हम मसीह में खो गये हैं, जो हमारा जीवन है। हमारे भीतर एक परमेश्वर की भावना है। हम एक साथ दैवी दर्शन का अनुभव करते हैं। हमारी आँखें खुल रही हैं। हमारे मन खुल रहे हैं। मैं ऐसी बातें देखता हूँ और कहता हूँ, जो मैंने पहले न देखा और कहा हो। "तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा। वह जो हृदय से सच बोलता है।" (भजन १५ : १, २)।

पवित्रात्मा को शोकित करना :

बाइबल बताती है की पवित्रात्मा को शोकित किया जा सकता है (इफि ४ : ३०)। हम यह कैसे कर सकते हैं? कई तरीके हैं। दो बातें जो मेरे दिमाग में आती हैं, वह यह है की मैं बिना पापों का पश्चताप करे कक्षा में अध्यापक के रूप में आऊँ। इसलिए इससे पहले की मैं कक्षा में आऊँ, मुझे मेरे सारे पापों का पश्चताप करना होगा ताकी यीशु के खून से साफ हो जाऊँ। ऐसा हर कियी को करना होगा।

दूसरी बात जिससे हम पवित्रात्मा को शोकित करते हैं वह यह है की हम हमारे बीच में उसकी उपस्थिती को स्विकार न करें। यदी आप हर दिन कक्षा में आते हैं, और कोई आप को नमस्कार न करे यह आप की उपस्थिती को स्विकार न करे, तो क्या आप को दुख नहीं पहुँचेगा? मुझे तो बुरा लगेगा। क्या हम चाहते हैं की पवित्रात्मा शोकित हो और चुप चाप एक कोने में बैठी रहे, क्योंकि हम ने उस का आदर नहीं किया? या हम यह चाहेंगे की वह हमारे मध्य स्वतंत्रता से घूमे? आप निश्चय करीये। परन्तु मैं पवित्रात्मा को शोकित नहीं कर सकता। मैं हर कक्षा का प्रारंभ करने से पहले उसे निमंत्रण देता हूँ की वह हमारे बीच में उपस्थित हो। मैं उससे कहता हूँ की वह हमारे बीच में अध्यापक बन कर रहे। मैं प्रार्थना करता हूँ की हमारे बीच में स्वतंत्रता से बहे, ताकी हम जान सकें की हम ने परमेश्वर का स्पर्श किया है।

क्या मुझे हर रात पवित्रात्मा की उपस्थिती का आदर करना चाहिए? :

क्या इस से कुछ फर्क पडता है? हाँ। यह फर्क ऐसे है, जैसे रात और दिन का, ज्योति और अंधकार का, स्वयं परिश्रम और सच्ची मसीहत का। बिना पवित्रात्मा के साथ संगती के, आत्मिक जीवन नहीं मिल सकता। यह सब के सामने करना कितना आवश्यक है? मैं हर कक्षा के प्रारंभ में यह प्रार्थना करता हूँ और इस से कक्षा में जीवन भर जाता है। पवित्रात्मा की जगाह कोई नहीं ले सकता। कक्षा में कहानी का प्रारंभ इसी तरह से करना होगा।

अब जब हमने परमेश्वर को अमंत्रित किया है की वह शाम को हमारे साथ रहे, तो अब हम आगे क्या करेंगे? हमने अपनी आराधना कर ली और गले भी मिल लिए। हम ने परमेश्वर के मन को छू लिया है, अपनी किलाबांदी को नीचे कर लिया है, हँसे हैं, गले मिले हैं, नाचे हैं और राजा के सामने उत्साह मनाया है।

मन में से पवित्रात्मा को बाहर निकालना :

नये नियम का सब से बडा वादा है की पवित्रात्मा के कार्य करने के कारण, परमेश्वर विश्वासी के मन में रहता है। निम्न दिये गये वचनों को लिखिये:

यिर्मयाह ३१ : ३४

लूका १२ : १२

यूहन्ना १४ : २६

इब्रानियों ८ : १०, ११

लिखीये की ये वचन कक्षा में पढ़ाने की रीती के विषय में क्या कह रहे हैं।

अध्याय ९ के कुछ मुख्य विचार :

१. इससे पहले की हम पवित्रात्मा की लहर पर तैरें, हमें यह साखना है की उसका अनुभव कैसा होता है।
२. यदी आप पवित्रशास्त्र में उन वचनों को नहीं ढूँढ पा रहे हैं जो आत्मा के बहाव के विषय में बताती हैं, तो शायद आप मसीह में स्थायी पुस्तक में मन और आत्मा के बारे में १४०० वचनों को पढ़ना चाहेंगे।
३. हम पवित्रात्मा को उस समय शोकित करते हैं, जब हम सब के समक्ष उस को स्विकार नहीं करते।
४. यदी हम पवित्रात्मा के बहाव को हमारे बीच में अनुभव करना चाहते हैं तो हमें लगातार उस का आदर करना होगा।
५. इस अध्याय के कुछ और बातों को लिखीए जो आप के लिये मुख्य हैं.....

विचार करें और बहस करें :

१. हर शाम पवित्रात्मा की उपस्थिती का आदर करना कितना आवश्यक है? क्या यह दौहराई प्रार्थना बन जायेगी? क्या हमें उस की उपस्थिती की आवश्याक्ता है? क्या उसके बिना हम कुछ कार्य नहीं कर सकते?
२. क्या आप ऐसी कक्षा में बैठे हैं जहाँ पर पवित्रात्मा की उपस्थिती नहीं थी? यदी हाँ, तो कैसा लगा? इस से आपके जीवन में क्या अनुभव हुआ? इससे आप पर क्या बदलाव आया?

३. क्या आप ऐसी कक्षा में बैठे हैं जहाँ पर पवित्रात्मा की उपस्थिति थी? यदी हाँ, तो कैसा लगा? इस से आपके जीवन में क्या अनुभव हुआ? इससे आप पर क्या बदलाव आया?
४. पवित्रात्मा का बहाव कैसा होता है? मन का बहाव कैसा होता है? क्या आप इसे बता सकते हैं? क्या आप का स्पर्श कर सकते हैं? यदी कर सकते हैं तो करीये।
५. बिना आत्मा के बहाव के हम क्या अर्पित कर सकते हैं? एक मरी हुआ ईश्वरज्ञान? एक धर्म? सिद्धांत? इस से क्या लाभ? यह संसार के लिये कितना आकर्शक है? क्या यह आप को हचा सकता है?
६. पत्रचार का जवाब - "प्रभु, इस अध्याय के विचारों के बारे में आप आप मुझे क्या बताना चाहेंगे?"

अध्याय दस

छोटे समूह के बीच परमेश्वर के साथ कहावी में मुलाकात के रास्ते

छोटे समूह में कहानी के बाच पवित्रात्मा को मिल कर बदलाव लाने के कई रास्ते हैं। इस अध्याय में कुछ पर बहस करेंगे।

कई कहानीयों को जोड़ना :

जब विध्यार्थि आते हैं, तो वे अपने जीवन की कहानीयों को साथ लाते हैं। हम पहले अपने जीवन में जो हो रहा है उस के बारे में बात कर सकते हैं। प्रारंभ हम स्तुती और आराधना से कर सकते हैं। प्रकाशितवाक्य ४ में यूहन्ना ने राजाओं के राजा के सामने स्वर्ग में आराधना का दर्श देखा। जब वह देख रहा था, तो वह सब हो रहा था। वह अभी भी हो रहा है। स्वर्ग में राजा की आराधना करना लगातार कार्य है। मैं यह भी मानता हूँ की जब मैं आत्मा में आराधना करता हूँ तो मैं आत्मा की दुनिया में प्रवेश करता हूँ और यूहन्ना के साथ राजा के सामने हो रही स्तुती को देखता हूँ। जैसे यूहन्ना ने उस नाटक में प्रवेश ले कर वहाँ के लोगों के साथ बात चीत करी थी, वैसे ही मैं भी उस नाटक में प्रवेश कर के वहाँ के लोगों से बात चीत करना चाहता हूँ। मैं उन के कार्यों को देख सकता हूँ। मैं पवित्रात्मा को कक्षा के लोगों में समाते हुए देख सकता हूँ। मैं उससे पूछता हूँ की यदी उसके पास कुछ उपदेस है हम सब को सुनाने के लिए तो वह मेरे द्वारा सब को बता सकता है, ताकी मैं उसे पा कर आराधना के अंत में अभिषिक्त प्रार्ना के रूप में बता सकता हूँ।

नाचक चल रहा है। हम परमेश्वर की कहानी में प्रवेश कर रहे हैं और वह हमें छू रही है। वह हमारी कहानी को उसकी कहानी से छू रहा है। आत्मिक जीवन बैह रहा है। परमेश्वर की महिमा हो।

अब आराधना और गले मिलना समाप्त हो चुका है, अब हमें मुख्य बात की ओर प्रवेश करना है। हम कहाँ से प्रारंभ करें? याद रखीये की पवित्रात्मा हमारा मार्ग दर्शन करेगा। मैं कुछ तैयारी कर के आया हूँ। परन्तु क्या मुझे वही कहना है? कई बार हाँ। परन्तु कई बार मेरा मन मुझ से कुछ और कहने को कहता है। मुझे लगता है की परमेश्वर कुछ कहना चाहता है, जो उस समय के पाठ से अलग है। क्या मैं उस राह को चुन सकता हूँ? मैंने जो पाठ की तैयारी करी है उसका क्या? क्या उन्हें पढ़ाने के लिए मुझे पैसे नहीं दिये गये? नहीं, यदी

उन्होंने पैसे दिये हैं, वह इस लिये है की मैं उन की अगुवाई कर के उनका परमेश्वर के साथ उन का रिश्ता बनाऊँ। तो हम उस ओर जाते हैं जो मेरा मन कह रहा है। हम एक या दो व्यक्तियों के लिए उन के कार्यों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। हम उस व्यक्ति के चारों ओर खड़े हो जाएंगे, और उस पर प्रार्थना करेंगे। हम इस बात का ध्यान रखेंगे की यीशु ने जब भी किया के लिए प्रार्थना करी. तो उस को छूआ था। क्या प्रार्थना करते समय वह हमारा अध्यापक नहीं है? जब हम प्रार्थना करेंगे तो हम दर्शन को खोजेंगे, और जो देखेंगे उस के बारे में बतायेंगे। आँसू बह सकते हैं। भावुक या शारीरिक चंगाई हो सकती है। प्रेम और प्रोत्साहन का बहाव हो सकता है। फिर हम वापस अपनी जगहों पर जाएंगे।

यदी कहानी की माँग है तो हम पाठ्यक्रम को छोड़ने के लिये स्वतंत्र हैं :

कई बार कक्षा में जब मैं किसी आत्मा का अनुभव करता हूँ तो मैं पाठ्यक्रम को छोड़ देता हूँ। मैं जो अनुभव करता हूँ उस के बारे में बोलने लगता हूँ और प्रार्थना करने लगता हूँ। कई बार मैं उस से सम्बंधित अपने जीवन के बारे में बताने लगता हूँ।

पाठ में अपने आप कहानी बनाने की क्षमता होनी चाहिए :

कई बार हम पाठ की ओर जोते हैं। क्योंकि विध्यार्थि अपना ग्रह कार्य कर के आये हैं, वे कुछ न कुछ बाँटना चाहेंगे। यदी उन के मन में कुछ बात आई है जिसे वे बाँटना चाहते हैं। वे जो कहते हैं, हम उसे सुनते हैं और उस पर बहस भी करते हैं। इस तरह विध्यार्थियों के साथ बहस करने से अधिक समय बीत जाता है। इसलिये यह तैयार किये हुए पाठ्यक्रम के रूप में नहीं होता। यह अधिक दिलचस्प होता है।

बाईबल की कहानी में प्रवेश करना :

अब समय है की मैं उन के साथ बाईबल में से हाँट सकता हूँ। हम बाईबल खोल कर कुछ वचन पढ़ते हैं। मैं उन वचन पर कई बार नाटक का रूप देता हूँ। इस तरह हम बाईबल में के चरित्रों में प्रवेश कर जाते हैं और उनकी तरह संघर्ष करने लगते हैं। मैं उस संघर्ष का अनुभव करता हूँ जो उस समय के उन बाईबल के चरित्रों के बीच हो रहा होगा। हम अपने जीवन में भी इसी तरह के संघर्ष का अनुभव करते हैं। क्या इस से छुटकारा मिलेगा? हाँ, उसी बाईबल की कहानी में समादान भी होता है। हम उस को बी नाटक में ले लेते हैं। मेरा मन शांत हो जाता है। मुझे लगता है की छुटकारा का रास्ता था। "धन्यवाद प्रभु, की आप मेरे साथ उस संघर्ष में चल रहे थे। धन्यवाद की आप ने मुझे छुटकारे का रास्ता दिखाया।"

बाईबल की कहानी के साथ जुड़ना :

वह रास्ता और सच से कुछ अधिक है। वह जीवन है। मैं प्रश्न और उत्तर का समय अलग रखता हूँ, जहाँ परमेश्वर हम में से हर एक के साथ बात चीत करता है। यूहन्ना कहता है की यीशु के "कहे हुए शब्द जीवन हैं।" वह हम से क्या कह रहा है, यह हम को सुनना चाहिए। वह क्या शब्द कहना चाह रहा है, जिससे हमारे अंदर आत्मिक जीवन भर जाएगा। हम पाँच मिनट के लिए शांत हो जाएँगे ताकी मसीह हमारे बाच में उपस्थित हो। फिर हम अपने मन की आँखों और कानों से यीशु की उपस्थिती को खोजने लगते हैं। वह हमें कई तरह से दिखाई देता है। किसी के साथ वह चलता है। किसी के साथ वह बैठता है और उन के हाथों को लेगा। फिर वह बोलेगा और हम लिख लेते हैं। कई लोग रोने लगते हैं।

जब वे लिखना बंद कर देते हैं तो मैं उन्हें फिर वापस ले आता हूँ। क्या कहानी कुछ आगे बढ़ सकती है? क्या आप अपने बगल में बैठे व्यक्ति के साथ, परमेश्वर ने जो आप से कहा है, उसे बाँट सकते हैं? यदी वह अधिक निजी है, जो आप किसी के साथ बाँटना नहीं चाहते, तो मत बताईये।

हमारी कहानीयों को साथ में बाँटना :

विध्यार्थि पाँच मिनट का समय लेते हैं और एक दूसरे काथ बाँटते हैं। फिर मैं उन्हें बुलाता हूँ और उन में से चार पाँच विध्यार्थियों से यह कहता हूँ की क्या वे सब के साथ वह बाँटना चाहेंगे जो प्रभु उन से कह रहा है। आधिकतर विध्यार्थि बताना चाहते हैं। मैं उन पर दबाव नहीं डालता। गहरी शक्तिशाली बातों से रोना आ जाता है। हमारे मध्य परमेश्वर अपना कार्य कर रहा है।

हम कहानी के बाद कहानी में प्रवेश करते रहते हैं। कक्षा में जो उन्नती हो रही है, वह भी एक कहानी है। मेरे विध्यार्थियों को जो हो रहा है, वह अच्छा लगता है उन्होंने पवित्रात्मा का अनुभव किया है।

कक्षा में सच का प्रयोग करना भी एक कहानी है :

मेरा आदर्श वाक्य है, "पढ़ाने का अर्थ है की सच का कक्षा में प्रयोग करना।" इसलिए हम जो कुछ भी सीखते हैं, उस का प्रयोग कक्षा में करते हैं। यदी हम परमेश्वर की आवाज को सुनने के बारे में सीख रहे हैं, तो हम उसकी आवाज को सुनने का प्रयोग भी करेंगे। हम अपने अनुभवों को एक दूसरे के साथ बाँटते हैं। यदी हम कहीं अटक जाते हैं तो कोई बात नहीं। हम गलतीयों का जश्न बनाते हैं। गलतीयाँ सफलता की सीडी हैं। कौन अटक गया?

किस के लिये यह कामयाब साबित हुआ? अपने अनुभव के बारे में बताईए। क्या शैतान आप के दर्शन के साथ मिल गया है? कोई बात नहीं, हम उसे डाँट सकते हैं। आज समूह ने सीखा की प्रयत्न करने से जीत मिलती है। उन्होंने रुकावटें देखी हैं। रुकावटों को दूर करना भी सीखा है।

मैं जीवन भर की शिक्षा में विश्वास करता हूँ। मैंने जीवन भर सीखने का निश्चय किया है। मुझे यह पता नहीं की मैं स्वर्ग में भी सीखूँगा या मुझे सब पता चल जाएगा। कहना मुश्किल है। मेरी कहानी उतनी दूर तक अभी नहीं गयी है। जब मैं इस दुनिया को पास करके जाऊँगा, तब जानूँगा। तब तक, किस को परवाह है? कई प्रश्न ऐसे होते हैं जिन पर समय बिताना व्यर्थ होता है। भविष्य में सब साफ हो जाएगा।

यदी हम सच का कक्षा में प्रयोग की ओर वापस लौटें: जब मैं दर्शन के बारे में पढ़ाता हूँ, तो हम दर्शन को खोजते हैं। जब मैं स्वर्गदूतों के बारे में पढ़ाता हूँ, तो हम स्वर्गदूतों के साथ मुलाकात की अपेक्षा करते हैं। जब मैं शारीरिक चंगाई के बारे में पढ़ाता हूँ, तो हम एक दूसरे की शारीरिक चंगाई के लिये प्रार्थना करते हैं। जब मैं भीतर की चंगाई के बारे में पढ़ाता हूँ, तो हम भीतर की चंगाई के लिए प्रार्थना करते हैं। जब मैं मुक्ति के बारे में पढ़ाता हूँ, तो हम मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। जब मैं अराधना के बारे में पढ़ाता हूँ, तो हम आराधना करते हैं। जब मैं भविष्यवाणी के बारे में पढ़ाता हूँ, तो हम भविष्यवाणी करते हैं। जब मैं पवित्रात्मा के फलों के बारे में पढ़ाता हूँ, तो मैं चाहता हूँ की हर विध्वार्ति पवित्रात्मा के फलों का अनुभव करे। जब मैं बाईबल सर्वेक्षण के बारे में पढ़ाता हूँ तो हम बाईबल के सिद्धान्तों को और बाईबल के चरित्रों को और कहानीयों को अपने जीवन के साथ जोड़ते हैं।

बाईबल कहानी में प्रवेश कर कहानी का अनुभव करना :

और क्या रास्ते हैं, जिन से हम बाईबल की कहानीयों को अपने जीवन से जोड़ सकते हैं? समीह में होने के नाते आप एक साथ बाईबल के चरित्रों में समा सकते हैं। इसे करने के लिये, एक गोला बना कर बैठ जाईये, एक दूसरे का हाथ पकड़ कर आँखें बंद कर लीजीए। फिर हर व्यक्ति अपने मन की आँखों को उस दृष्य पर लगायें और जो अनुभव कर रहे हैं, उसे दूसरों के साथ बाँटीये। यदी जो वह कहना चाहता है वह समाप्त हो जाता है तो वह अपने दाहिनी ओर बैठे व्यक्ति का हाथ दबा देगा ताकी वह व्यक्ति अपना अनुभव बता सके।

नाटक एक और तरिका है कहानी में प्रवेश करने का। कक्षा मिल कर बाईबल की किसी कहानी का नाटक कर सकती है। यह याद रखीये की चित्र, शब्दों से अधिक प्रभाव करता है। नाटक किसी भी दिन शिक्षा से बढ़ कर है। इसी कारण दूर दर्शन ने रेडियो को

मात दे दी। यदी हम प्रभावशाली वक्ता बनाना चाहते हैं, तो हमें चित्रों के माध्यम से प्रचार करना चाहिए।

जलूस और नाँच के द्वारा कहानी :

जलूस और नाँच के द्वारा भी कहानी में प्रवेश किया जा सकता है। मैंने एक कलात्मक आराधना सीखी है, जिस में हम ने कई प्रकार के नाँच सीखे जिस से हम आराधना कर सकते हैं। उस पर एक पाठ्यक्रम क्यों? क्योंकि मैं पहले इतना डरता था की मैं नाँच के द्वारा आराधना करने में संकोच करता था। मुझे एक स्थान चाहिए था जहाँ पर मैं स्वतंत्र हो कर साख सकूँ। यह एक अच्छा अनुभव था जब हम नाँचते हुए हमारे सिर्जनहार की आराधना कर सकते थे।

यदी कुछ पुस्तकों को पढ़ने के लिए कोई कहता है तो वे कहानी पर आधारित होनी चाहिए, जिससे पढ़ना रोचक बन सकता है। यदी मैं दो पुस्तकें पढ़ने को कहता हूँ तो एक उपदेशक और एक कहानी पर आधारित होगी। इस तरह मेरा मन और हृदय दोनों काम करेंगे।

क्या मैं पारितोषिक रीति में हूँ? शायद हाँ :

मुझे ताजुब हो रहा है की मैं इस तरह बोल रहा हूँ। मैं जब जवान था तो बाईबल के हर अध्याय का मैंने चित्र बनाया और इन चित्रों को मैं अभी भी बेचता हूँ, बाईबल के सर्वेक्षण क्रम में। अब मैं कहानी पर दबाव डालता हूँ। यह अच्छा है की परमेश्वर क्रमिक और कहानीकार है। मैंने किसी गार मसीही की लिखी किताब में पढ़ था, "हर जीवित चीज पूर्ण होने को लिए कष्ट उठाती है... यदी कोई वस्तु जो मुख्य है, वह अपना मूल खो बैठती है और जीवन के लिए समाप्त हो जाती है - तो सिद्धांत काम में आते हैं - तब सचेतना में पारितोषिक रीति आती है।" उसने बताया की बदलाव ३५ से ४५ वर्ष की आयु में होता है और तब हम अपने जीवन का दूसरा हिस्सा जान पाते हैं, जिस पर हमने अपने अब तक के जीवन में कभी ध्यान नहीं दिया और न ही उसकी उन्नति होने दी।" मैं ३७ वर्ष का हूँ। क्या आप समझ रहे हैं की यह मुझे हो रहा है? मुझे यकीन नहीं होता। क्या मुझे यह सिद्धांत अपने विधार्थियों को सिखाना चाहिए। मनुष्य के जीवन की इस जानकारी के बाद क्या मैं और अच्छा शिक्षक बन सकता हूँ? आप क्या समझते हैं? क्या यह अजीब बात नहीं की जो मेरे बक्से से बाहर हैं, वे इतना जानते हैं? मुझे अपने बक्से को बड़ा करते रहना चाहिए। मुझे इसे फेंक कर परमेश्वर के बताए नदी के सिद्धांत को अपनाना चाहिए। आप क्या समझते हैं?

एक अंतिम चेतावनी। मैं नहीं समझता की हर किसी को गैर मसीही की पुस्तकें नहीं पढ़ना चाहिए, क्योंकि उन में कुछ गलतियाँ भी होती हैं। भेड़ों को चाहिए की वे वही पढ़ें जो उनका चरवाहा उन से पढ़ने को कहता है। यदी कोई चरवाहा सोचता है की मसीहत, एक धर्म बन कर रह गयी है, और किसी एक क्षेत्र में, अंधकार के बच्चों के पास ज्योति के बच्चों से अधिक रौशनी है, तब बहुत स्थापित पादरी जो किसान के तैहत है, वह सच की खोज में जा सकता है, ताकी भटक न जाए।

अध्याय १० के कुछ मुख्य विचार :

१. यह पहचानीए की कक्षा का समय कहानीयों को मिलाने का समय है।
२. यदी कहानी की माँग है तो हम पाठ्यक्रम को छोड़ सकते हैं।
३. पाठ में बाईबल को नाटक का रूप देना, और इस से सम्बंधित अपने जीवन की कहानीयाँ बाँटने का समय होना चाहिए।
४. हम एक साथ बाईबल की कहानी में प्रवेश कर सकते हैं।
५. जलूस और नाँच के द्वारा कहानी में प्रवेश किया जा सकता है।
६. आत्मा के साथ आराधना करने से सारी कक्षा परमेश्वर की कहानी में प्रवेश कर सकते हैं।
७. प्रश्नोत्तर के द्वारा परमेश्वर की कहानी को हमारी कहानी से जोड़ा जा सकता है।
८. इस अध्याय के कुछ और विचारों को लिखिए जो आप को मुख्य लगते हैं....

विचार करें और बाहस करें :

१. छोटे समूह में क्या आपने कभी कहानी का अनुभव किया है? यदी हाँ, तो विस्तार से बताइये। यह कैसा था?
२. इस अध्याय में बताए रास्तों के अलावा क्या कोई और रास्ता है जिससे कहानी में प्रवेश किया जा सकता है? यदी हाँ तो वे क्या रास्ते हैं?
३. इस स्पताह समूह के रूप में कहानी में प्रवेश करें और प्रयोग करें। इस के बाद अपने अनुभवों को बाँटिये।
४. छोटे समूह में कहानी के प्रयोग के बारे में लिखिये।

अध्याय ग्यारह

हम आज की शाम क्या कार्यक्रम करेंगे?

मुझे लगता है की इस विषय पर मैंने पहले के अध्याय में बताया है। मैं इस अध्याय में थोड़े शब्दों में और जल्दी से बता देता हूँ।

१. अध्यापक अपनी तैयारी पाठ को पढ़ कर करेगा। इस में अच्छाई बुराई, दोनों करह से तैयारी करेगा और बोलने से पहले कई महिनों तक प्रयोग करेगा और पढ़ाते समय अपनी साक्षी भी देगा। आप हर बात को नहीं सिखाएंगे, केवल वही जो आपने आत्मिकता से सीखी हैं और जो जीवन बदल देगी। इस का अर्थ यह हुआ की आपको सुनने वाले केवल वही बातें जान पाएंगे जो आत्मा से भरी हुई हैं और जीवन बदल देंगी।
२. परमेश्वर से प्रार्थना करीए की वह आप को बताए की आज शाम वह कक्षा में क्या करना चाहता है। उसके सामने अपने आप को शांत रखीए। उसके दर्शन और उसकी आवाज की ओर ध्यान लगाईए। जो आप को पता चल रहा है, उसे लिख लीजीए।
३. कक्षा में प्रवेश करने से पहले, कुछ क्षण प्रार्थना और आत्मा में आराधना में बिताईये। यह आपको शांत करेगा और आप को दिमाग से हृदय की ओर ले जाएगा ताकी आप मन के बहाव के द्वारा सिखा सकें, जिससे आप बहुत अच्छे अध्यापक बन जाएंगे। यदी कक्षा में प्रवेश करने से पहले आप अपने दिमाग पर दबाव डाले रहेंगे तो तनाव के कारण आप अपने दिमाग से पढ़ाएंगे। अंत के १५ मिनट परमेश्वर के समक्ष आराधना और स्तुती और शांती में बिताईये।
४. इस बात का ध्यान दीजीए की कुर्सियाँ अर्धगोल आकार या गोलआकार में हों। हमें कुर्सियों को सीधे नहीं रखना है, क्योंकि हम यहाँ एक दूसरे से बाँटने आये हैं, अपने सामने वाले की गर्दन को घूरने नहीं आए हैं।
५. विध्यार्थि जब कक्षा में प्रवेश करते हैं, तो उन के साथ बातचीत करीए, हँसीए और मजाक करीए।

६. कक्षा का प्रारंभ करने से पहले दस मिनट आराधना में बिताभये ताकी विध्यार्थि दिमाग से मन की ओर आ सकें। आत्मा और सच्चाई के साथ आराधना करीए। तब तक आराधना और स्तूती करीए जब तक विध्यार्थि अरनी आत्मा और पवित्रात्मा को नहीं छू लेते। इस में पाँच मिनट से अधिक समय नहीं लगता, क्योंकि उन को पूरी जानकारी है की वे आराधना करते समय अपने मनो को पवित्रात्मा की ओर कैसे लगा सकते हैं।
७. खुले रूप से सब के सामने प्रार्थना करीए, पवित्रात्मा को निमंत्रण दीजीए की वह उपस्थित हो।
८. गले मिलने के लिए समय लीजीए। परमेश्वर का प्रेम बाँटते हुए, एक दूसरे को आशिर्वाद दीजीए।
९. वचन में से गहराई से बाँटीए - दैवी प्रेरणा का ज्ञान। अपने जीवन के अनुभवों को भी गहराई से बाँटीए - परमेश्वर ने आप के जीवन में क्या किया है। दूसरों को भी अपने जीवन के अनुभवों को बाँटने दें।
१०. प्रश्नोत्तर के लिए समय निकालीए और जो लिखा है उसे सब के साथ बाँटीए।
११. उत्साहपूर्ण प्रार्थना और जो भी आज रात उसने किया है उस के लिए, परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए अंत करीए। उत्साह का कोई गीत गाईए। अंत के गीत और प्रार्थना के लिए यह अच्छा होगा की एक घेरा बना कर सब खडे हो जाएँ और एक दूसरे का हाथ पकड लें।

यह सब आवश्यक हैं। इन्हें अवश्य करीए।

अध्याय बारह

पागलपन को काबू में रखना

मैंने छोटे समूह में कई पागलपन के कारनामों होते देखे हैं। जो व्यक्ति पागलपन कर रहा है वह यह कह कर वह सब करता है की, "परमेश्वर ने मुझ से कहा...." यह कुछ भी हो सकता है, जैसे, "परमेश्वर ने मुझ से कहा की मैं अपनी पत्नि को छोड़ दूँ," या "१३ दिनों में दुनिया का अंत होने वाला है।" आप अपने समीह को इस ओर जाने से कैसे रोकेंगे?

यदी नूह मुझ से कहता की परमेश्वर ने मुझ से कहा है की मैं एक नांव बनाऊँ (जब की पूरे इतिहास में वर्षा नहीं हुई थी) या अब्राहम मुझ से कहे की परमेश्वर ने उसे अपने बेटे की बली देने को कहा है, तो क्या मैं उन को पागल समझता? क्या आप उन्हें पागल समझते? मुझे न्याय नहीं करना चाहिए। क्योंकि परमेश्वर के विचार मेरे विचार नहीं और परमेश्वर के रास्ते मेरे रास्ते नहीं।

मैं बातों को एक स्तर पर कैसे रखूँ? पहले, मैं हर बातों को उसके फल से परिक्षण करूँगा। क्या समूह में जीवन, विश्वास, प्रेम और आनंद है? क्या नम्रता है, या आत्मिक घमण्ड, गर्व और किसी के तैहत न होना? यदी सब अच्छी बातें हैं, तो सब ठीक है।

एक बात जो सब से मुख्य है, वह यह है की क्या सब किसी के तैहत हैं या नहीं। हम सब अलग व्यक्ति हैं और परमेश्वर के साथ अलग स्थान पर खड़े हैं। हम वही करते हैं, जो परमेश्वर हमें करने को कह रहा है।

जो वचन के साथ नहीं जुडी है ऐसी बातों से स्तर्क रहें। उसे तब तक के लिए अलग रख दें जब तक उसके बारे में आपको पवित्रशास्त्र से कुछ नहीं मिल जाता। आप यह नहीं कह रहे की यह गलत है। आप केवल पवित्र वचन से उस विषय पर कुछ मिलने तक उसे अलग रख रहे हैं।

उन लोगों से स्तर्क रहीए, जो कहते हैं की, "मैं सही हूँ, बाकी सब गलत हैं।" उन लोगों से स्तर्क रहीए जो दूसरों पर हावी होना चाहते हैं। इस बात का ध्यान दें की जो हो रहा है, वह सब की भलाई के लिए है। ऐसा न हो की कोई समूह को अपनी बातों से उस ओर ले

जाए जो समूह के लिए ठीक न हो। हर समय संतुलन बनाए रखीए। यह आप प्रश्न पूछ कर सकते हैं, जिस से बात सही दिशा में बनी रहेगी। यदी कोई व्यक्ति अकेले जवाब दिये जा रहा है, तो आप यह कह कर उसे चुप करा सकते हैं की, "मैं उन से सुनना चाहूँगा जो अब तक कुछ नहीं बोले हैं। आप क्या समझते हैं?" यदी कोई ऐसे प्रश्न कर रहा है, जो कक्षा के लिए सही नहीं है तो यह कह कर उसे चुप कर सकते हैं, "बहुत बडिया प्रश्न है, परन्तु हम इस के बारे में कक्षा समाप्त होने पर बात करेंगे।"

आप अगुआ हैं। सच की लड़ाई मत होने दें। आप कह सकते हैं, "अच्छा अब आगे बडते हैं।" आप ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं, जिससे लोगों के आपस के मन मुटाव दूर हो सकते हैं। इस बात को स्पष्ट करीए की हम किसी के विरुद्ध दुश्मनी नहीं रखते। यह शैतान का स्थान है। लाभदायक विवाद सही हैं, परन्तु लड़ाई झगडे बिलकुल मना हैं।

इस बात को मान लीजीए की गलतीयाँ होती हैं, और अनुग्रह के साथ कहिए, "यह एक गलती है, मैं गलत था।" यह कहने से चोट नहीं लगती।

कक्षा में आप विध्यार्थियों में जानकारी न हो ऐसा नहीं चाहते, इसके लिए आप उन्हें ग्रहकार्य दीजीए। इस तरह विध्यार्थि कई घंटे खोजने में बिताएँगे जिस से उन को बाँटने के लिए कुछ विचार मिल जाएँगे। न जानकारी का अर्थ होता है थोडी जानकारी जो खतरनाक हो सकती है, इसलिए, इसे बाँटने मत दो। उसे रोक दीजीए और दूसरे विषय पर चले जाईए। यदी कोई विषय नहीं है तो घर चले जाईए, या प्रार्थना सभा प्रारंभ करीए। थोडी जानकारी रखने वाले जब बात करने लगते हैं, तो वे ऐसे बोलते हैं जैसे वे सब से बडे जानकार हैं। यह समय की बर्बादी है।

इस बात को स्पष्ट करीए की कोई भी एक किनारे पर बैठ कर भविष्यवाणी नहीं करेगा। यदी कोई कुछ कहना चाहता है तो उसे सब के सामने कहना होगा।

कोई भी क्सा की भविष्यवाणी को स्विकार नहीं कर सकता। वह तब स्विकार करेगा जब उसकी आत्मा उसे स्विकार करने को कहे। यही स्वन या दर्शन के अर्थ के बारे में भी है। अर्थ को जब मन स्विकार करे, तब ही उसे स्विकार करो।

हमें समूह की सम्स्या को कम से कम करना है। आत्मा के बहाव से या दर्शन से सम्स्या हो सकती है, परन्तु हमें इस का हल ढूँढना होगा।

यदी हम आत्मा के बहाव को समूह से दूर रखें तो यह एक गलती होगी। बिना आत्मिक बहाव के समूह में जागरिती नहीं होती और मसीहत नहीं होती। छोटे समूह में समस्या न हो ऐसा नहीं। कई आत्मा से मुलाकात नहीं करना चाहते, क्योंकि वे कष्ट नहीं उठाना चाहते। परन्तु ऐसा करने से वे शैतान के वश में आ जाते हैं। आत्मिक मुकाबला करना सही है।

यह मार्गदर्शन मुझे डेविड रूलमैन नामक व्यक्ति जो सैन डीगो का रहने वाला है, उसने मुझे बताया है और पागलपन को कम करने के लिए मैं इन्हें पूरी तरह छाप रहा हूँ। आप इन्हें अपने समूह में बाँट सकते हैं।

भविष्यवाणी के प्रचार के लिए कुछ मार्गदर्शन :

समूह में लोग अधिकतर बोलते हैं, गीत गाते हैं, वचन पढ़ते हैं, दर्शन को बाँटते हैं, परमेश्वर क्या कहना या करना चाहता है उन का अनुभव बताते हैं। भविष्यवाणी का यह अर्थ है की वही कहना जो परमेश्वर कह रहा है। प्रकाशितवाक्य १९ : १० कहता है, "यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है।" यह यीशु को दर्शाता है। यूहन्ना १० : २७ कहता है, "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे चलती हैं।" मैं हर सीखने वाले से यह अपेक्षा रखता हूँ की वह प्रभु की आवाज को सुनना सीखें और यीशु के साथ निजी रिश्ता बनाएँ। परमेश्वर की सुनने के बाद हमें लगता है की उस में से कुछ बातें सब को बताने लायक हैं, जैसे की पौलुस ने लिखा है, ".....तुम सब एक एक कर के भविष्यवाणी कर सकते हो, ताकी सब सीखें और सब शांति पाएँ।" (१कुरिंथ १४ : ३१)। हमारी हर सभा में निम्न बाती गयी बातें मार्गदर्शन करती हैं।

१. मेहमान: यदी आप किसी मसीही संस्था से जुड़े हुए हो और किसी पादरी के तैहत हो, और समझते हो की प्रभु तुम्हें कोई भविष्यवाणी की बात कह रहा है, तो उसे लिख लो और उसे अगुआ को दे दो।
२. भविष्यवाणी के प्रचार को बड़ावा देना चाहिए, प्रोत्साहन देना चाहिए या परमेश्वर के लोगों को शांति दो। १ कुरि १४ : ३, "जो भविष्यवाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है।"

३. ऐसा कोई भविष्यवाणी का शब्द न कहो जिससे दण्ड या न्याय मिले। रोमियों ८ : १, "अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।" यीहन्ना ३ : १९, "दण्ड की आज्ञा का कारण यह है की ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिये जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे।"
४. ऐसे प्रश्नों से बचीए जो व्याकुल कर दें। १ कुरि १४ : ३३, "परमेश्वर गडबडी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है।" आत्मा का बहाव शांतिपूर्वक होता है। सभा कि दिशा से सतर्क रहें। "अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है।" नितिबचन १५ : २३। वर्णा हम शोर मचाने वाले घण्टे बन जोएंगे।
५. भविष्यवाणी का शब्द, गीत या दर्शन पवित्रशास्त्र से जुड़ा होना चाहिए। बताये गये सच का विरोध पवित्रात्मा नहीं करेगी। आवाज परमेश्वर की होनी चाहिए और यीशु की स्तुती और प्रशंसा होनी चाहिए। हर शब्द में परमेश्वर की शांति को तलाशो। (फिल ४ : ७-९; भजन ८५ : ८; याकूब ३ : १७)।
६. पवित्रशास्त्र में से बड़े बड़े वचनों को पढना छोड दो और प्रार्थना या भविष्यवाणी के माध्यम से प्रचार या शिक्षा मत दो।
७. साफ और तेज आवाज में बोलीए की सब सुन सकें।
८. पवित्रात्मा हमेशा यीशु की साक्षी देता है और महिमा करता है (यूहन्ना १६ : १४) और हमारा कारण परमेश्वर का प्रेम होना चाहिए (१ कुरिंथ १३)।
९. कोई भविष्यवाणी तब तक नहीं करनी चाहिए जब तक दो या तीन लोग उस का अर्थ समझाने को न हों। यह निजी शब्दों के लिए विशेष कर सच है (१ कुरिं १४ : २९)।
१०. हर भविष्यवाणी अधुरी है (१ कुरिं १३ : ९) इसलिए हमें चाहिए की हम उस को जाँचें। १ थिसलोनिकियों ५:१९-२१, "आत्मा को न बुझाओ। भविष्यवाणीयों को तुछ न जोनों। सब बातों को परखो, जो अच्छि है उसे पकडे रहो।।"

विचार करें और बैहस करें :

१. क्या आपने आत्मा से भरे छोटे समूह में पागलपन होते देखा है?
२. क्योंकि आपने पागलपन की बातों को होते देखा है, तो क्या आप ने पवित्रात्मा को स्वतंत्रता से बहने से रोका है? पागलपन को दीर रखने के लिए क्या आप समझते हैं की कुछ मार्गदर्शन होना चाहिए ताकी हम पवित्रात्मा को स्वतंत्रता से बहने से न रोके?
३. यदि हम कमरे में पवित्रात्मा को स्वतंत्रता से बहने न दें तो क्या हो सकता है?
४. पागलपन को काबू में रखने के लिए क्या ऊपर बताए गये मार्गदर्शन सही हैं? यदि नहीं, तो और क्या मार्गदर्शन करना चाहोगे? क्या आप कुछ को हटाना चाहोगे?
५. जब कुरिंथियों की कलीसीया ने पवित्रात्मा के फलों को ठुकरा दिया तो पौलुस ने क्या उन्हें उन का प्रयोग करने से रोका या उन का प्रयोग करने के लिए मार्गदर्शन किया? उस के बताये गये मार्गदर्शन को छोटे समूह में लागू करीए।
६. पत्राचार - " प्रभु, इस अध्याय के विचारों के बारे में आप क्या बताना चाहेंगे?"

अध्याय तेराह

क्या आप सब जानते हैं?

इस अध्याय में हम छोटे समूह में नम्रता के बारे में बताएँगे। नम्रता कई रूप में दिखाई देनी चाहिए क्योंकि हम धुँधले काँच से देखते हैं।

अंधे पुरुष और हाथी :

हिन्दुस्तान के छः पुरुष थे,
शिक्षा की ओर उन का छुकाव था,
वे हाथी देखने गये
(सब के सब अंधे थे),
की देख कर वे
अपने दिमाग को संतुष्ट करेंगे।

पहला व्यक्ति हाथी के पास गया,
और उसके विशाल बगल के पास
जाकर गिर गया,
और एक दम चिल्लाने लगा:
"परमेश्वर मुझे आशिर्वाद दो। हाथी तो
एक दिवार की तरह है।"

दूसरा गया और उस के दाँत का स्पर्श कर के
चिल्लाया, "यहाँ क्या है,
यह इतना गोल, साफ और नोकिला है?
मुझे यह स्पष्ट हो गया हो की
यह अजीब हाथी
एक भाले की तरह है।"

तीसरा व्यक्ति उस पशु के पास गया,

और उसने अपने हाथों में
उसकी सूँड को लिया,
और हिम्मत से कहने लगा:
"मुझे दिख रहा है की यह हाथी
एक साँप की तरह है।"

चौथा व्यक्ति ने उत्सुक्ता से हाथ बड़ाया,
और घुटने के पास स्पर्श किया।
"यह पशु कैसा है
यह बात एक दम स्पष्ट है,
यह हाथी तो
एक पेड़ के समान है।"

पाँचवा व्यक्ति को उस के कान तक पहुँचने का मौका मिला,
वह कहने लगा, "एक अंधा भी बता सकता है की
यह किस की तरह लगता है:
चाहे कोई कितना ही इनकार करे,
पर यह चमत्कारी हाथी
एक पँखे की तरह है।"

छटवाँ व्यक्ति जब
स्पर्श करने के लिए जाने लगा
तो उसने गिरने से बचने के लिए
उसकी हिलती दुम को पकड़ लिया,
"मुझे पता है," उसने कहा, "यह हाथी
एक रस्सि की तरह है।"

तो यह हिन्दुस्तान के पुरुष
चिल्ला कर विवाद करने लगे,
हर कोई अपने को ही सही सिद्ध करने लगा,
चाहे हर एक अपनी जगह पर सही था,
और हर एक गलत भी था।" 1

1 - जॉन गौडफ्रे द्वारा लिखा गया

गलत? मैं? हो नहीं सकता। मुझे से पूछो। मैं तुम्हें बताऊँगा की मैं सही हूँ। मैं इसे दृढ़ता से सही कहूँगा। मेरी पत्नि कहती है की यह घमण्ड है। उसे क्या पता है?

मैं हमेशा सही रहा हूँ। मैं चाहे जिस स्थिती में रहा हूँ, मैंने उस स्थिती को पवित्रशास्त्र से स्पष्ट किया है। मैं यह फूल गया की मैं अपने इस गर्व के कारण सच के मुख्य अंश को खो दे रहा हूँ।

तनाव में सच :

सब से गहरा सदमा मुझे उस समय आया जब मैं क्रिस्टियन लिबर्ल आर्ट्स कॉलेज से बी. ए. कर रहा था। उन वर्षों में, कई महत्वपूर्ण विषयों पर, मैंने कई बार अपने विचारों को बदला। मैं एक से अधिक स्थितीयों को पवित्रशास्त्र से बता सकता था। यह कैसे हो सकता है? तब से मैंने जाना की यह इसलिए है क्योंकि पवित्रशास्त्र में तनाव है। अकसर सच तनावपूर्ण होता है। इस वाक्य को स्वीकार करना कठिन है, क्योंकि मैं चाहता हूँ की सच साफ बंधे हुए बक्सों में होना चाहिए। मैं इसे अपने से दूर नहीं करना चाहता। मैं उसे कील मार कर एक जगह पर रखना चाहता हूँ, ताकी जान सकूँ की की वह कहाँ पर है। यह कठिन है की परमेश्वर को दीर करें। जब सच की बात होती है तो मुझे नदी नहीं पसन्द। मुझे किसी भी दिन एक बक्सा दे दो। एक बार यदी मैंने परमेश्वर को कील ठोक दी है तो इस का अर्थ यह है की मैंने सच्चे परमेश्वर की आराधना करना छोड दिया है और मूर्ति पूजा कर रहा हूँ।

दोष लगाने वाले की या तसल्ली देने वाले का स्थान लेना :

कॉलेज में जाने से पहले मैं समझता था की अन्य भाषा बोलने वाले पहले से तैयारी कर लेते हैं। यह साफ था। वे शैतान के काबू में थे। मैं यह बात पवित्रशास्त्र से साबित कर सकता था। परन्तु मैंने पवित्र वचन को अन्य भाषा बोलने वालों को सही साबित करने के लिए नहीं खोजा। मैंने उसे गलत साबित करने के लिए पवित्र वचन का सहारा लिया था। वह कौन है जो दोष लगाने वाले की जगह लेता है और दूसरे को गलत साबित करता है? तुम ने सही पहचाना। यह शैतान है जो भईयों पर दोष लगाता है। मुझे शैतान का स्थान लेने के लिए सिखाया गया, ताकी मैं लोगों और उन के विचारोंको गलत साबित करूँ, बजाए इस के की मैं तसल्लि देने वाले का स्थान लूँ और उन के साथ आ कर उन्हें सही साबित करूँ। क्यों मुझे

इस के लिए पश्चताप करना होगा? मैंने यह वादा किया है की मैं अब कभी भी शैतान का चेला नहीं बनूँगा।

आप का क्या? क्या आप लोगों को और विचारों को सही साबित करते हैं? या आप लोगों को और विचारों को गलत साबित करना चाहते हैं?

हमें लोगों को सही साबित करना है :

छोटे समूह में हम एक दूसरे के विरुध नहीं आते। न ही एक विध्यार्थि को दूसरे विध्यार्थि के विरुध आने देते हैं। हम एक ही देह के सदस्य हैं। हम प्रेम और एकता से पहचाने जाते हैं। जब नये विचार हमारे सामने आते हैं, तो हम उन्हें सही साबित करना चाहते हैं। यदी उसे साबित करने के लिए कोई वचन नहीं मिलता, तो हम सिर्फ यह कहते हैं की इसे साबित करने के लिए कोई वचन नहीं है। परन्तु, इससे यह गलत नहीं हो जाता। वह गलत तब होता है, जब हमें बाईबल में उसके विरुध वचन मिलता है।

क्या बाईबल के बाहर भी सच है? :

मैं हर समय इस बात से सहमत नहीं होता की कुछ तब गलत होता है जब वह बाईबल के सिद्धान्त या पवित्रशास्त्र की आत्मा के विरुध है। कई लोग कहते हैं, की यदी बाईबल इसे नहीं बताती तो यह गलत है। या यदी यह शब्द वचन में नहीं है तो मैं इस का प्रयोग नहीं करूँगा। यह एक दम बेवकुफि वाली बात है। हर्ष (रैपचर) शब्द बाईबल में नहीं है, त्रिमूर्ति (ट्रिनिटी), या सण्डे स्कूल शब्द बाईबल में नहीं है। परन्तु हम इन सब पर विश्वास करते हैं। बाईबल में कहाँ लिखा है की वह शब्द का प्रयोग नहीं कर सकता जो उस में नहीं है?

परमेश्वर भी इस्राएल के बाहर जा कर अपने कहने के लिए भविष्यवक्ता को ढूँढा था। जब राजा बालाक वालन के पास जाते हैं, ताकी वे इस्राएलीयों को बददुआ दे सकें, तो परमेश्वर ने सफाई से वालन के मुख से बोला, "परमेश्वर ने बिलाम से कहा, तू इनके संग मत जा, उन लोगों को शाप मत दे, क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके हैं।" (गिनती २२: १२)

आश्चर्यजनक की परमेश्वर बिलाम के मुख से बोल सकता है, जो की एक मूर्तिपूजक था। निर्गमन १८ में भी एक उदहारण है जब परमेश्वर ने एक मूर्तिपूजक याजक को धर्मि

भविष्यवक्ता से कहने को कहा। मूर्तिपूजक याजक यित्री था जो मिद्धान का याजक था, (निर्ग १८ : १), जो मूसा का ससुर था और परमेश्वर का भविष्यवक्ता मूसा था। मूसा ऐसा भविष्यवक्ता था जिसने सर्वशक्तिमान परमेश्वर से बातें कीं और हमें दम आजाएँ दीं, पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकें और पुराने वाचा की बुनियाद। आप यह नहीं समझेंगे की ऐसे महान व्यक्ति को किसी मिद्धान के याजक से परिज्ञान मिलेगा? परन्तु यदी आप निर्गमन १८ पढ़ेंगे, तो आप जानेंगे की यित्री ने मूसा को किस तरह परिज्ञान दिया की वह अपने कार्य को कैसे पूरा करेगा। मूसा ने उसकी सलाह स्विकार करी और उसके मन से भारी बोझ उतर गया।

इसलिए यह मानना की एक मूर्तिपूजक से परमेश्वर अपनी बात कैसे कह सकता है विलकुल गलत है। परन्तु आज की कलीसीया में यही सिखाया जा रहा है। प्रभु हमें अपने डर और बेफकुफी भरी बातों से दूर रखीए।

नया नियम भी शक्युक्त लेखकों की ओर संकेत करता है। क्या आप विश्वास करते हैं की बाईबल में भी बाहर के लेखकों से कुछ लिया गया है? विध्वानों ने ८५ ऐसे वचन खोजे हैं जो शक्युक्त लेखकों द्वारा लिखे गये हैं। जैसे:

बरूच ४ : ७	-	१ कुरिंथियों १० : २०
बरूच ४ : ३५	-	प्रकाशितवाक्य १८ : २
इनौक १ : २	-	१ पतरस १ : १२
इनौक ९ : ४	-	प्रकाशितवाक्य १५ : ३
जुडित ११ : १९	-	मत्ति ९ : ३६
१ मेकाबीस १ : ५४	-	मत्ति २४ : १९
२ मेकाबीस ३ : २६	-	लूका २४ : ४
३ मेकाबीस २ : ५	-	प्रकाशितवाक्य १४ : १०
४ मेकाबीस २ : ५	-	रोमियों ७ : ७

डर की आत्मा का लेखक कौन है?

आज कलीसीया में एक डर की आत्मा है। वह मसीहों को सच को खोजने नहीं देता और उन के दिमागों को बंद कर देता है, ताकी वे धोखा न खा सकें। परन्तु वे धोखा तो खा चुके हैं। "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी

है।" (२ तिमोथियुस १ : ७)। "सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है (१ यूहन्ना ४ : १८)।"

मैं भय की आत्मा में नहीं जाना चाहता। मैं ज्ञान को हर जगह पढ़ूंगा और फिर उसकी तुलना पवित्र वचन से करूंगा और अपने जीवन के अनुभव से।

परमेश्वर, हमारे अनुभवों और विचारों से बड़ा है :

यह जानना नम्रता को जानना है। गर्व कहता है, "हम केवल वही पढ़ते हैं जो परम्परागत लिखा गया हो।" भय कहता है, "यदी हम बाहर निकलें तो हम धोखा खाएंगे, इसलिए हमें बंद रहना है।" हम में से कोई भी पूरी तरह नहीं जानता। हर अंधे व्यक्ति ने हाथी का एक भाग स्पर्श किया था। समूह के लोग भी जो मसीह की देह में हैं, वे परमेश्वर का कुछ भाग देखते हैं और उस को बताते हैं। हमें हर समूह से सुनना होगा। इस तरह हम परमेश्वर के कई विभिन्न अंशों को जान पाएंगे।

क्या दोनों प्रतिकूल सही हो सकते हैं? :

मुझे याद है की एक वर्ष पहले परमेश्वर ने मुझे पुनरजन्म के बारे में अमेरिका में प्रचार करने को कहा। मैंने बस यह कहना प्रारंभ ही किया था की परमेश्वर अमेरिका में बदलाव लाना चाहता है, की दाऊद विलकरसन ने भविष्यवाणी की पुस्तक लिखी जिस में अमेरिका के नष्ट होने के बारे में बताया। मैंने कहा, "प्रभु कौन सही है, दाऊद विलकरसन या मैं?" परमेश्वर ने कहा, "तुम दोनों।" मैंने कहा, यह कैसे हो सकता है?" उसने मुझे बताया की वह दाऊद विलकरसन का प्रयोग शहर कि गलीयों में जो मुक्ति न पाए हुए समूह हैं उन के लिए कर रहा है। मुझे इसलिए बुलाया गया की मैं उन मसीहों को भविष्यवाणी दूँ जो अपना शनिचर छोड़ कर परमेश्वर की आवाज को सुनने आते हैं।

मैं आप से यह कह सकता हूँ की आप अपने भाई और बहन और माता और पिता से नफरत कर सकते हो, यदी तुम स्वर्ग जाना चाहो तो, और मैं इस को साबित करने के लिए लूका १४ : २६, का सहारा लूँगा। मैं आप से यह भी कह सकता हूँ की यदी तुम अपने भाई से प्रेम नहीं रखते तो आप परमेश्वर के नहीं हैं और स्वर्ग नहीं जा सकते (यूहन्ना ४ : २०)। कौन सा सही है? दोनों।

क्या सच निजी है? :

यीशु ने सच को निजी बनाया। जब पिलातुस ने उससे पूछा की, "सच क्या है?" उसने उत्तर दिया, "मैं सच हूँ" परमेश्वर के साथ हमारे अनुभवों में पवित्रात्मा के द्वारा सच पाया जाता है। जैसे जैसे हम बड़ते हैं, रिश्तेदारी बदलती है। जब मैं दो महिने का हूँ, तो माँ मुझे दूध पिलाती है, जब मैं दो वर्ष का होता हूँ, तो अपने आप खाता हूँ। जब मैं २२ वर्ष का होता हूँ तो मैं खाना खरीदने के लिए काम करने लगता हूँ, तब खाना खाता हूँ। परमेश्वर के साथ मेरे रिश्ते में भी ऐसा ही होता है। प्रारंभ में मैं एक समुदाय से जुड़ जाता हूँ फिर जब थोड़ा सीख जाता हूँ तो दूसरा समुदाय अच्छा लगने लगता है, जो दूसरे स्तर का है। फिर मुझे एक और अच्छा लगने लग जाता है यह २२ वर्ष का स्तर है।

क्या सही है? सब। हमें कौन से समुदाय की आवश्यकता है? सब की। क्या उन्हें अलग होना चाहिए? मुझे नहीं लगता। हमें एक दूसरे के भेदों का आदर करना चाहिए और एक दूसरे को अपनाना चाहिए।

क्या मुझे यह सिद्ध करना होगा की मैं सच हूँ? नहीं, क्योंकि इस समय केवम मैं अपने लिए सही हूँ। जब मैं स्वयं दूसरी ओर चला जाऊँगा, तो मैं दूसरों को इस स्तर पर स्थिर रहने को कैसे कहूँ? मैं साबित करने वाला नहीं हूँ। कौन है? आपने सही पहचाना पवित्रात्मा (यूहन्ना १६ : ८)। यदी मैं किसी को कुछ भी साबित नहीं कर सकता तो मैं क्या कर सकता हूँ? साक्षी दे सकता हूँ (प्रेरित १ : ८)। एक साक्षी क्या करता है? वह अपनी कहानी बताता है। तो मैं एक कहानी बताने वाला हूँ जो यह बताता है की परमेश्वर ने मेरे जीवन में प्रवेश कर के क्या किया। यीशु ने कहा, "मेरा वचन जीवन है" (यूह ६ : ६३)। मुझे आप का नहीं पता पर इस तरह के विचार मुझे पूरी तरह बदल देते हैं।

नास्तिकता की तरह लगता है :

नास्तिकता का क्या? हम इस के बारे में बात करते हैं। अपने सारे इतिहास में कलीसीया नास्तिकता के बारे में चिल्लाती आ रही है। वे यह उसके लिए कहते हैं जिसके साथ वे सहमत नहीं होते और दूसरे को पूरी तरह अपना अधिकार जता कर हटा देना चाहते थे। जब यूहन्ना अपनी पूरी उम्र में पहुँचे और उसने नये नियम का अंतिम पत्र लिख रहा था तो वह एक बहुत महत्वपूर्ण विषय पर पहुँचा की हमें एक दूसरे को चोट नहीं पहुँचानी चाहिए।

उस ने यह बार बार कहा। "छोटे बच्चो, एक दूसरे से प्रेम करो" (१ यूहन्ना पढिये)। हम इतनी दूर तक नहीं पहुँच पाते, है न? हम अपना सारा समय यह साबित करने में लग जाते हैं की हम सही हैं और दूसरे गलत।

परन्तु कलीसीया में नास्तिकों के बारे में क्या? कलीसीया में नास्तिक होते हैं। क्या आप जानते हैं की यूनानी में नये नियम में नास्तिक के बारे में क्या बताया गया है? यह वह है जो भाग करता है। वह लडाकू है। आज कल कई पुस्तकें हैं जो विभाजन करती हैं, तो क्या इन के लेखक नास्तिक हैं? मुझे और कुछ नहीं सूझता।

एकता से परमेश्वर की पवित्रात्मा का तेल निकलता है :

कक्षा में हम नास्तिकों को आने नहीं देते। हम लडाकूओं को आने नहीं देते। यदी आप लडना चाहते हैं तो कहीं और जा कर लडीए। हम यहाँ पर परमेश्वर को खोज रहे हैं। और परमेश्वर की पवित्रात्मा का तेल तब बहता है जब एकता होती है (भजन १३३)। इसलिए हम केवल एकता के लिए लडते हैं ताकी हमारे बीच पवित्रात्मा की उपस्थिती हो।

नया नियम भी कहता है की हमारे बीच में भेद होना चाहिए, ताकी जो स्विक्रित है उसका सब को पता लग जाए (१ कुरिं ११ : १९)। परन्तु जो विभाजन लाता है उस पर हाय....।

गलतीयाँ बताने कि आवश्यकता नहीं - केवल रौशनि को उपर उठाईए :

गलत ईश्वरज्ञान का क्या? क्या हमें उसे निकाल बाहर नहीं करना है? क्या बाईबल नहीं कहती की, "हर बात का परिक्षण करो और जो गलत है उसे निकाल बाहर करो?" मुझे नहीं पता। क्या वह ऐसा कहती है? आप क्या समझते हैं?

मुझे नहीं लगता की वह ऐसा कहती है। मुझे लगता है की वह कहती है, "सब बातों को परखो, जो अच्छि है उसे पकडे रहो।" (१ थिस्लोनि ५ : २१)। क्या अच्छे को पकडे रहना और बुरे को निकाल देना में कुछ भेद है? भेद है। यदी हम सच्चाई की ज्योति को उपर उठा कर रखें तो अंधकार अपने आप भाग जाएगा। परमेश्वर के सच की ज्योति बहुत शक्तिशाली बत्ति साबित होती है। एक मसीह के मन में वह अपना कार्य करती है।

हमें किसी के सिर पर ठोक कर उसे सच के बारे में नहीं बताना है। हम केवल प्रश्न पूछते हैं। हम पवित्रात्मा को हमारे बीच उसका काम करने देते हैं।

अनुभव पर विश्वास करना या पवित्रशास्त्र पर विश्वास करना :

पवित्रशास्त्र और अनुभव के बीच के समतुलन के बारे में क्या? मुझे अधिक विश्वास किस पर करना चाहिए? कौन विवाद को जीतता है, मेरा अनुभव या पवित्रशास्त्र? पवित्रात्मा से कहीए की वह आपके मनो से बात करे।

प्रेरितों के काम १५ - कलीसीया की पहली ईश्वरज्ञान की लड़ाई :

क्या प्रारम्भ की कलीसीया की पहली ईश्वरज्ञान की लड़ाई याद है? यह प्रेरितों के काम १५ में पाया जाता है और वह यह था की क्या खतना के बगैर, गैर यहूदी को कलीसीया में शामिल होने दिया जाए या नहीं (प्रेरित १५:५)। सारे पिछले पवित्रशास्त्र के वचन और यहूदि मसीहों का मानना था की, "पहले उन का खतना किया जाए, फिर वे परमेश्वर के लोगों के भाग बन सकते हैं।" यह निर्गमन १२ : ४८, ४९ में स्पष्ट था, "यदी कोई परदेशी तुम लोगों के संग रहकर यहोवा के लिए पर्व को मानना चाहे तो वह अपने यहाँ के सब पुरुषों का खतना कराए, तब वह समीप आकर उसको माने, और वह देशी मनुष्य के तुल्य ठहरेगा। पर कोई खतना रहित पुरुष उसमें से न खाने पाए।" इसलिए उन्होंने यरूशलेम में एक बड़ी सभा बुलाई और इस विषय पर विवाद किया। वह क्या था जो आखिरकार उन्हें ठीक लगा? क्या वह पवित्रशास्त्र था या अनुभव या दोनों? आईए देखते हैं।

"जब वे यरूशलेम पहुँचे, तो कलीसीया और प्रेरित और प्राचीन उनसे आनन्द के साथ मिले, और उन्होंने बताया की परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे कैसे काम किए थे। (प्रेरित १५ : ४) तब पतरस ने खड़े होकर उनसे कहा, "मन के जाँचने वाले परमेश्वर ने उनको भी हमारे समान पवित्रात्मा देकर उनकी गवाही दी तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो की चेलों की गरदन पर ऐसा जूआ रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते हैं? (प्रेरित १५ : ८)।" तब सारी सभा चुपचाप बरनबास और पौलुस की सुनने लगी, की परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातीओं में कैसे बड़े बड़े चिन्ह और अदभुत काम दिखाए। (प्रेरित १५ : १२)।"

अपनी बात को अनुभव से साबित करना :

पतरस, पौलुस और बरनबास कैसे अपने नये ईश्वरज्ञान को अनुभव से साबित किया। क्या वे नहीं जानते की यह प्रबल नहीं है? परमेश्वर का वचन प्रबल है। क्या उन्हें नहीं पता? वे कहाँ से आ रहे हैं? मुझे नहीं लगता की वे बचे हुए हैं। शायद वे नास्तिक हैं, जो हमें बर्गला रहे हैं। वे यहां पर पवित्रात्मा के अनुभवों के बारे में कह रहे हैं, जहाँ पर लोग अन्कीय भाषा में बोल रहे हैं और चमत्कार कर रहे हैं। क्या वे नहीं जानते की शैतान भी यह सब कर सकता है? हमें पौलुस और बरनबास और पतरस से दूर रहना चाहिए और उस पर विश्वास करना है जिस पर हम हमेशा से करते आसे हैं जो पवित्रशास्त्र में पाया जाता है। पवित्रशास्त्र कहता है की यदी कोई परदेशी यहोवा के लिए पर्व को मानना चाहे तो वह अपने यहाँ के सब पुरुषों का खतना कराए (निर्ग १२ : ४८)।

अनुभवों को पवित्रशास्त्र से साबित करना :

या इन को सच साबित करने के लिए अब समय आ गया है की हम पवित्र वचन को खोजें। हमें इन अनुभवों को गलत नहीं साबित करना है। हमें देखना है की क्या ये अनुभव स्विकार करने योग्य हैं। याकूब ने इन अनुभवों के लिए पवित्रशास्त्र से एक वचन खोज लिया है, "इसके बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊँगा, और उसके खण्डरों को फिर बनाऊँगा, और उसे खड़ा करूँगा, इसलिए की शेष मनुष्य, अर्थात् सब अन्यजाती जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूँढ़ें, यह वही प्रभु कहता है जो जगत को उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।" प्रेरित १५ : १६ - १८।

पवित्रशास्त्र को बड़ा करना :

मैं समझता हूँ की याकूब इन वचनों को विशाल बना रहा है, क्योंकि वह अपनी बात को साबित करना चाहता है। मेरा मतलब यह है की इन वचनों में कहाँ यह सफाई से बताया गया है की गैर मसीहों को अब खतने की आवश्यकता नहीं? यदी मैं उससे लडना चाहूँ, तो लड सकता हूँ। मैं यह साबित कर सकता हूँ की वह अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए इन वचनों को कह रहा है। वह कलीसीया में कुछ नसे अनुभव लाना चाहता है। मुझे यह नास्तिक की तरह लग रहा है। आओ हम इसे भगा दें। इसे जला दें। हम इस के बारे में एक पुस्तक लिखते हैं, ताकी कोई और इससे धोखा न खा सके। इससे कलीसीया शुद्ध रहेगी।

यह अच्छा है की कलीसीया में मेरी तरह रखवाली करने वाले कुत्ते हैं, वर्णा बहुत बुरा हो जाता। मैं आपकी कलीसीया को शुद्ध रखूँगा, हे परमेश्वर। याकूब, तुम और तुम्हारे नास्तिक साथी अपने अनुभवों से धोखा खा लो। हम तुम्हें स्विकार नहीं करते।

तब यीशु रो कर कहने लगा, "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम। तू भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन पर पथराव करता है। कितनी ही बार मैंने चाहा की जैसे मुर्गि अपने बच्चों को अपने पंखों को नीचे इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुमने न चाहा। (मत्ति २३ : ३७)।"

स्तिफनुस चिल्लाता है, "हे हठीले और मन और कान के खतनारहित लोगो, तुम सदा पवित्रात्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। भविष्यद्वक्ताओं में से किस को तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया? उन्होंने उस धर्म के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को मार डाला और अब तुम भी उसके पकड़नेवाले और मार डालनेवाले हुए। तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक साथ उस पर झपटे, और उसे नगर के बाहर निकालकर उस पर पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पाँवों के पास उतार कर रख दिये।" (प्रेरित ७:५१, ५२, ५७, ५८)।

यह बार बार होता है। मये वचन के और ये अनुभवों को खोजने वालों को मार दिया जाता है। आज हम विषैले कलम की दुनिया में जी रहे हैं, हमें जो पसन्द नहीं आता उस पर हम नफरत से भरी पुस्तकें लिखते हैं।

अनुभव की कीमत :

ईश्वरज्ञान के विवादों को समाप्त करने के लिए मुझे नहीं पता की कलीसीया या बाईबल कितना भाव देती है। मुझे नहीं पता की कौन गलत है, वे या हम। हम गलत हैं। तार्किकता कहती है की अनुभव का कोई मूल्य नहीं।

और मेरी आत्मा चिल्लाती है, बस। बाईबल ऐसा कहाँ कहती है? बाईबल में यह कहाँ सिखाया जाता है? बाईबल में ईश्वरज्ञान का महान विवाद अनुभव के बल पर माना गया और उसे एक वचन से ढाँपा गया। मुझे इस के विपरित सिखाया गया। मुझे बदलीए प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूँ, मैं पश्चताप करता हूँ की मैंने झूठ को स्विकार किया। मैं आपके वचन से सीखने

के लिए आता हूँ। मुझे ईश्वरज्ञान के बक्से से छुटकारा दीजिए। मैं आप को खोज सकूँ। मैं आपका अनुभव कर सकूँ। मुझे चंगा करीए, प्रभु।

जीवन योग्य है :

अब मैं आपको बताना चाहता हूँ की जीवन योग्य है। हम विश्वास करते हैं की परमेश्वर पवित्रात्मा की शक्ति से जीवन के अनुभवों पर कार्य करता है। (रोमि ८ : २८)। जीवन वह नहीं है जहाँ ईश्वरज्ञान सब कुछ है और अनुभव कुछ भी नहीं। जीवन योग्य है। जीवन को जाँचना आवश्यक है। परमेश्वर हमें बहुतायत का जीवन प्रधान करने आये।

मैं क्यों अविश्वासीयों का आदर करता हूँ, जो जीवन को बारे में पढ़ते हैं, क्या अब आप जान पाए? किसी ने मनुष्य के हृदय के बारे में पढ़ा। कईयों ने हजारों स्वपनों को पढ़ा ताकी उस में से कुछ समझ सकें और अपने बिमारों को चंगा कर सकें। कलीसिया ने कितने स्वपनों को पढ़ा है? कलीसिया ने कितने स्वपनों का विश्लेषण किया है? स्वपन देखने वाले के मन की आवाज को सुन कर, कलीसिया ने कितनो को चंगा किया है? क्या स्वपन बाईबल से सम्बंधित हैं? पवित्रशास्त्र में करीब ५० स्वपन बतोये गये हैं और यह सब परमेश्वर की ओर से मिले हुए हैं। इसके अलावा, नये और पुराने नियमों में परमेश्वर कहता है की वह हमारे साथ स्वपनों में बात करेगा। परन्तु क्या हम सुनते हैं? या क्या वे प्रयोग करने वाली वस्तु हैं जिन पर विश्वास न किया जाए?

"मेरी बातें सुनो, यदी तुम में कोई नबी हो, तो उस पर मैं यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आप को प्रगट करूँगा, या स्वपन में उससे बातें करूँगा।" (गिन १२ : ६)।

"परमेश्वर कहता है, की अन्त के दिनों में ऐसा होगा की मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वपन देखेंगे। वरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उँडेलूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।" (प्रेरित २:१७, १८)।

क्या हम ने असली को छोड़ कर उसके प्रतिनिधी को अपनाया है? क्या हम ने जीवन को त्याग दिया है? हाँ। प्रभु, हमें चंगा करीए। संसार हम पर हँसता है। उन के पास जीवन है।

अनन्दजीवी, जीवन का अनुभव करता है और आनन्द लेता है। नये युग वाला, अपने मन और आत्मिक दुनिया का अनुभव करता है। आर्मिक उपासक शैतान का अनुभव करता है। परन्तु हम अपने ईश्वरज्ञान के बक्यों में ही रहते हैं। प्रभु, हमें चंगा कर। हमें तेरे साथ सीधे अनुभव करवा। हम दर्शन देखें। हमें पवित्रात्मा के बहुमूल्य उपहार वापस लौटा। हम तेरी पवित्रात्मा को अपने मनों में अनुभव कर सकें।

एक हिम्मतवाला व्यक्ति जो अपनी परम्परा को छोड़ कर आगे निकल आया :

मैं एक व्यक्ति को शृद्धांजली देना चाहता हूँ, जिस ने मेरे जीवन को बहुत प्रभावित किया। उसका नाम, पादरी. हरमैन रिफ़एल है। वह हिम्मत और शक्ति वाला व्यक्ति है। उसने जीवन के अनुभवों से लडा है, ताकी परमेश्वर को पा सके। उस ने बैपटिस्ट पादरी के रूप में प्रारंभ किया और बाद में चमत्कारी बन गया, क्योंकि वह आत्मा का भूखा था। यह भूख उसे स्विडजरलैण्ड में जंगियन इनस्टिट्यूट ले गयी, जहाँ पर उसने स्वपनों का अर्थ बताना सीखा। उसने सब कुछ सीखा परन्तु जो अच्छा था, केवल उसे पकडे रहा। उसने इसे पवित्रशास्त्र से जोड लिया और अब कलीसीया को मसीही स्वपनों का अर्थ सिखाता है। उसने मुझे भी सिखाया। इससे मैंने परमेश्वर की आवाज को हर रात सुनना सीखा। अब हरमैन को कुछ कलीसीयाओं ने धुतकार दिया है, क्योंकि उन में भय की आत्मा आ गयी है, तब उसने वही किया जो यीशु ने किया था, जब उसे धुतकारा गया। वह कलीसीया के बाहर उन के पास जाता है, जो भूखे हैं, और अपना बहुमूल्य जीवन उन के साथ बाँटता है।

हे, कलीसीया, मैं तुझ पर रोना चाहता हूँ, जैसे यीशु ने किया। क्या हमे हमेशा उन नबीयों को धुतकारना चाहिए, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए बेजा है? हर पादरी जो मेरी इस पुस्तक को पढता है, मैं उसे प्रोत्साहित करता हूँ की वह हरमैन को अपनी कलीसीया में बुलाए, इससे पहले की धेर हो जाए। वह सत्तर वर्ष का हो चुका है। इसकी आग बुझने ना पाए बलकी सारे संसार में फैलती रहे। उसे उसके घर पर जो पेनसिलवेनिया में है, पहुँचा जा सकता है। उस के घर का पता है हरमैन रिफ़एल, २०१५, स्टोन रिड्ज लेन, विल्लेनोवा, पी ए १९०८५.

नम्रता का अर्थ है लगातार सीखनेवाला :

हमने इस अध्याय का प्रारंभ नम्रता शीरशक से किया था। मेरे लिए इस का अर्थ यह है की मैं सब कुछ नहीं जानता। मैं एक सीखने वाला हूँ, जो विश्वासी के जीवन में आत्मा के रास्तों को खोज रहा है। मुझे आप से सुनना है। मैं आपके बिना पूरा नहीं हूँ. मसीह की देह के हर भाग से मैं सीखना चाहता हूँ। जिसने भी जीवन के बारे में पढा है मुझे सिखा सकता है।

छोटे समूह में इस का अर्थ है की हम सब सीख रहे हैं। कियी को सब कुछ नहीं पता। कोई भी अपने आप को दूसरों पर नहीं थोपता। हर कोई परमेश्वर के साथ उसके अनुभव की साक्षी देता है।

नम्रता का अर्थ है, एक दूसरे के आधीन रहना :

मुझे लगता है की आप मेरे सुरक्षा कवच हो, जो मुझे पागलपन में जाने से रोकते हो। क्या आप मुझे स्विकार करते हैं? जब मैं बड रहा हूँ तो क्या आप मुझे सुरक्षा दे सकते हैं? क्या मैं आपके सुपुर्द रहूँगा? मैं हमेशा अपने आप संतुलन बनाना चाहता था। तब एक दिन परमेश्वर ने मुझ से कहा, "मार्क, जब तुम स्वयं को स्वयं से संतुलित करोगे, तो वह तुम संतुलन बना रहे हो, और तुम संतुलन बना रहे हो उस मापदण्ड से जो तुम ने तैयार किया है।" यह कितना सही है? परमेश्वर ने मुझ से कहा, "मार्क, तुम् स्वयं संतुलन नहीं बना सकते। तुम्हें चाहिए की तुम यह कार्य मुझे या मेरी देह को करने दो।" इसलिए, अब मेरा संतुलन मेरी सोच से नहीं आता, परन्तु परमेश्वर की देह से आता है। हर किसी को किसी न किसी के सुपुर्द होना चाहिए।

अध्याय १३ के कुछ मुख्य विचार

१. हम में से कोई भी सब कुछ नहीं जानता।

२. सच हमेशा परेशानी में खोजा जाता है।

३. हमें किसी पर दोष नहीं लगाना है। हमें उन्हें सच साबित करना है।

४. बाईबल पूरी तरह सच्चि है, परन्तु परमेश्वर ने बाईबल के बाहर भी बहुत सच रखे हैं।

५. हमें सच को आदर करना सीखना है।

६. पवित्रशास्त्र बताती है की परमेश्वर झूठे नबी (बिलाम), मूर्तिपूजक नबी (यित्री) और गदैह (बिलाम की गदही) के द्वारा बोल सकता है। इसलिए हमें किसी से सीखने में गर्व नहीं होना चाहिए।

७. लोग जो हमेशा भय में रहते हैं की वे धोखा खाएंगे, वे धोखा खा चुके हैं, क्योंकि भय की आत्मा का उत्पादक शैतान है।

८. क्योंकि परमेश्वर हमारे दिमागों से बड़ा है इसलिए यदी हम विपरित भी सोचें तो वह परमेश्वर के दिमाग और मन के लिए सही हो सकता है।

९. सच निजी है।

१०. नास्तिक वे लोग हैं जो लडकर भाग करते हैं।

११. जब हम लडने लगते हैं तो पवित्रात्मा छोड जाता है (भजन १३३ : १ - ३)।

१२. सच को साबित करने में अनुभव उतना ही बहुमूल्य है जितना पवित्रशास्त्र।

१३. इस अध्याय में आपको जो विचार मुख्य लगे उन्हें लिख लें....

कार्य :

निम्न को अपने जीवन की आवश्यकता अनुसार अपनाईए।

"प्रभु, मैं भय की आत्मा के लिए पश्चताप करता हूँ। मैं मानता हूँ की आप मेरी आत्मा के चरवाह हैं, और मैं आप पर और आप के नीचे के चरवाह पर जिसे आपने मेरे उपर रखा है, विश्वास करता हूँ, क्योंकि मैंने अपने आप को आप के हाथों में रख दिया है।"

"प्रभु, मैं पश्चताप करता हूँ गर्व की आत्मा के लिए, की मैंने सब व्यक्तियों से नहीं पाया। मुझे क्षमा करें और मुझे नम्र और सीखने लायक बनाईये।"

"प्रभु, मुझे क्षमा करीए की मैंने दोष लगाने वाले का सथान लिया, और दूसरों के विरुध आया बजाए उन के साथ रहने के। मैं अपने कार्यों के लिए पश्चताप करता हूँ और भविष्य में जब भी मैं दोषी का स्थान लूँ तो आप मुझे बताएँ और मुझे अनुग्रह दे कर बदल दें।"

यदी कोई है जिस के विरुध आपने दोष लगाया है, और वे यह जानते हैं तो आप परमेश्वर से पूछीए की क्या वह किसी तरह स्थिती को सुधार सकते हैं। यदी हाँ, तो करीए।

"प्रभु मैं पश्चताप करता हूँ की मैंने सच को एक ईश्वरज्ञान के रूप में रखा बजाए आप के साथ अनुभव के। मैं पश्चताप करता हूँ और आप से बन्नती करता हूँ की आप मुझे आपके जीवन की नदी के बहाव की ओर ले जाओ। इसे खोजने में मेरी मदद करीए। मुझे उस पर विश्वास करना सिखाईए। मैं अपने दिमाग के मूर्तिपूजन को छोड़ कर मन की ओर आता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ, मुझे चंगा करीए।"

"प्रभु, मुझे क्षमा करीए की मैंने उस व्यक्ति का आदर नहीं किया जो मेरा समर्थन करता था। मैं पश्चताप करता हूँ की मैंने उसकी सलाह नहीं मानी और उससे नहीं सीखा। मुझे इतनी बुद्धि दो की मैं उन की आवाज को सुन सकूँ जो मेरा समर्थन नहीं करते। मुझे इस से आगे बढ़ाईए। धन्यवाद, प्रभु।"

प्रार्थनापूर्वक कुछ सलाह पर गौर करीए जो आपको आप से समर्थन न करने वालों ने दी है। उस सलाह से परमेश्वर से पूछीए की वह आप को क्या बताना चाहता है।

"प्रभु, मुझे क्षमा करीए की शिक्षक के रूप में मैंने अनुभव का आदर नहीं किया। अब आपके अनुग्रह से मैं अनुभव का, दूसरों की सलाह का, मेरे मन का, मेरे दिमाग का, आपके वचन का और आपकी आत्मा के दैवी प्रकाशन का, आदर करूँगा।"

विचार करें और बैहस करें :

१. क्या आप स्थिर हैं की आप के पास सच है? क्यों या क्यों नहीं? यदी आप के बगल वाला भी स्थिर है की उसके पास भी सच है, पर वह आप के सच से सहमत नहीं है? तो आप क्या करेंगे?
२. क्या आप अपने आपको सच की राह पर देखते हैं या वह जिस ने सच पा लिया है?
३. क्या उन का आदर करते हैं जो आप से सहमत नहीं हैं (इफि ५ : २१)? क्या आप उन से कुछ सीख रहे हैं? क्या आप को उन से कुछ सीखना चाहिए?
४. क्या आप समझते हैं की सच को बचाना चाहिए? क्या सच को बचने की आवश्यकता है, या वह बिना किसी की मदद के स्थिर है?
५. क्या आप इस बात से सहमत हैं की हमें जीवन के अनुभवों को भी मूल्य देना चाहिए? कितना? सुरक्षा कवच क्या हैं?

६. क्या आप यरूशलेम की सभा जो प्रेरित १५ में बताई गयी है, उसके लिए याकूब ने जो वचन दिया है, जो खतनारहित लोगों के कलीसीया में आने के लिए, क्या उससे सहमत हैं? क्या हम अपने जीवन के अनुभवों को जारी रख सकते हैं, यदी हमें उस दिशा में जाने के लिए वचन मिल जाता है तो?
७. क्या आप अपने आप को लगातार सीखने वाले के रूप में देखते हैं? क्या आप इतने दिम्मतवाले हैं की आप अपनी परम्परा को छोड़ कर सच की खोज में निकल सकते हैं?
८. बाईबल में दिये गये नास्तिक (जो विभाजन करता है) के उदहारण के अनुसार, आप के विचार में बीसवीं सदी की सलीसीया में नास्तिक कौन हैं?
९. क्या आप पवित्रशास्त्र में परेशानी देखते हैं? क्या आप कुछ उदहारण दे सकते हैं? क्या यह परेशानी देख कर आप उन के प्रति अधिक मुलायम हो गये हैं जो आप से सहमत नहीं हैं?
१०. परमेश्वर से करीबी रिश्ते को लिए क्या प्रोत्साहित करती है, उसके साथ हमारे सीधे अनुभव (स्वपन, दर्शन, उसकी आवाज और हमारे मनो पर भार), या उसके बारे में हमारा ईश्वरज्ञान? हमारे जीवन का मुख्य लक्ष्य क्या है?
११. क्या आपने कभी दूसरों के प्रति दोष लगाने वाले का स्थान लिया है? क्या तसल्लि लेने वाले का स्थान लेना मसीहत है? क्या कभी यीशु किसी के विरुद्ध आये? यदी हाँ, तो किस के विरुद्ध? किस तरह के समूह के लोगों के विरुद्ध यीशु थे? क्या कभी यीशु पापीयों के विरुद्ध आये?
१२. क्या बाईबल के बाहर सच है? क्या मसीही अपनी परम्परा से बाहर जा कर सच पा सकते हैं? क्या कलीसीया के बाहर लोगों के पास जा कर सच पा सकते हैं? क्या आप जाते हैं? यदी नहीं, तो आप को जाने से कौन रोकता है?
१३. क्या आप के पास आत्मिक शिक्षक या पादरी है जो आप को अच्छी तरह जानता है और आप के जीवन के विषय आप से लगातार बात करता है? यदी नहीं तो परमेश्वर से प्रार्थना करीए की वह आप के जीवन में ऐसा एक व्यक्ति को स्थापित कर।
१४. पत्राचार - "प्रभु, इस अध्याय में दिये गये विचारों के बारे में आप मुझ से क्या कहना चाहते हैं?"

अध्याय चौदाह

निजी मुलाकात और बाईबल का मूलार्थ

यदी आप मेरी तरह हैं, तो अब तक आप ने चिल्लाना प्रारंभ कर दिया होगा की मुझे यह पुस्तक नहीं पसन्द। मुझे भी यह पसन्द नहीं आ रहा की यह पढाई मुझे पवित्रशास्त्र से, मेरे और मेरे जीवन के लिए, क्या स्विकार करने के लिए मजबूर कर रही है। क्या आप बाईबल विश्वासी, बाईबल का प्रयोग करने वाला मसीही बनना चाहते हैं? मैं बनना चाहता हूँ। मुझे यकीन है की आप भी बनना चाहते हैं, वरना इस पुस्तक को अब तक नहीं पढते होते।

कई ऐसे दिन भी हैं जब मैं कहने को तैयार हूँ की, "तुम अपनी निजी मुलाकात ले कर चले जाओ। मैं अपना बाईबल का मूलार्थ ले कर सुरक्षित रहूँगा।" अच्छा लगता है, है न ? परन्तु यह काम नहीं करता। यह सीधे शैतान की ओर ले जाता है।

भविष्यवक्ताओं के विरुद्ध फरीसी :

क्या आप ने इस बात पर ध्यान दिया की जब हम कलीसीया के पहले विवाद पर बात कर रहे थे (प्रेरित १५), तो वहां पर दो प्रकार के समूह थे जो सच को खोजने के लिए दो विभिन्न रास्तों का प्रयोग कर रहे थे? एक समूह फरीसीयों का था (प्रेरित १५:५), और दूसरा समूह भविष्यवक्ताओं का था जो नया संदेश फैला रहे थे (यानी पौलुस और बरनबास - देखीए १३:१ जहाँ पर उन्हें भविष्यवक्ता बुलाया गया)। इसलिए हम हमेशा फरीसीयों को भविष्यवक्ताओं के विरुद्ध पाते हैं।

फरीसी मूलार्थ पर भरोसा रखते थे :

ध्यान दीजिए की फरीसीयों ने कैसे समस्या का सामना किया: पहले सिर, अपने स्थान पवित्रशास्त्र और परम्परा का सहारा लिया। परन्तु फरीसीयों का एक समूह जो विश्वास करता था, उठ कर कहने लगे उनका खतना करना आवश्यक है और मूसा की आज्ञाओं को मानना होगा। उन को पता था की सुरक्षित कैसे रहा जाए। वे अपने ईश्वरज्ञान के साथ नये अनुभवों को नहीं मिलाना चाहते थे। उन का ईश्वरज्ञान पवित्रशास्त्र से स्थापित था (निर्गमन १२:४८), और विश्वास किया गया था और परमेश्वर के लोगों द्वारा कई वर्षों तक प्रयोग किया गया। कोई नये अर्थ ला नहीं सकता।

भविष्यवक्ता जोवन के अनुभवों को जाँचते हैं :

भविष्यवक्ता सारी स्थिती को अलग तरह से देखते हैं। वे अपने अनुभवों को बाँटते हैं। उन्होंने सोचा की इस बात में दम होगा की परमेश्वर भी अन्य जाती के लोगों के जीवन में काम कर रहा है। परन्तु एक फरीसी को इस बात की कोई परवाह नहीं की परमेश्वर किया के जीवन में इतनी शक्तिशाली रूप से कार्य कर रहा है। वे केवल अपने ईश्वरज्ञान को बचाने की कोशिश में रहते। फरीसीयों ने तो यीशु को अपने बीच चलते देखा, रोगों को चलते देखा, मरे हुएों को जीवित होते देखा, शैतान को भागते देखा? क्या इस तरह के व्यवहार ने फरीसीयों में कुछ बदलाव आया? नहीं। सच होना उन के लिए इतना मुख्य था की वे परमेश्वर की शक्ति को मारना चाहते थे, लाजरस को मारते हुए, जिसे मसीह ने जिलाया था।

आज कुछ अलग नहीं है :

आज भी हमारे पास है। कई आत्मिक मसीही हैं, परन्तु कलीसीया आज भी उन को मार रही है। किसे परवाह है की बिमार चंगा हो रहे हैं? किसे परवाह है की मुरदे जिलाये जा रहे हैं? हमें सच पता है। हमारे पास परमेश्वर का वचन है।

और उन्होंने उनके बाच में मसीह को पार डाला क्योंकि वे उसे पहचान नहीं पाए। हमारी अध्यात्म विध्या क्या इतनी अंधी है की हम जीवन देने वाले परमेश्वर को मार देते हैं?

नया नियम भी पुराने नियम का अर्थ बताता है :

क्या आप को याद है जब यीशु एलिय्याह और उसके चेलों के वापस आने के विषय विवाद कर रहे थे? उन्होंने उस से पूछा, "फिर शास्त्र क्यों कहते हैं की एसिय्याह का पहले आना अवश्य है?" यह इसलिए था क्योंकि शास्त्र बाईबल के मानने वाले थे और पवित्रशास्त्र में एक वचन है जो कहती है की एलिय्याह को परमेश्वर के महान दिन से पहले आना है। यह पुराने नियम में मलाकी ४ : ५,६ में बतायी गया है, "देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा। वह माता पिता के मन को उन के पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता पिता की ओर फेरेगा, ऐसा न हो की मैं आकर पृथ्वि का सत्यनाश करूँ?"

यह स्पष्ट वचन है, है न? अरेथ की गुनजाईश नहीं। मुझे एस्य्याह की वापसी का इंतजार करना चाहिए, है न? गलत।

यीशु ने जवाब दे कर कहा, "एसिय्याह अवश्य आएगा, और सब कुछ सुधारेगा। परन्तु मैं तो कहता हूँकी एलिय्याह आ चुका है और लोगो ने उसे पहचाना नहीं, परन्तु जैसा चाहा वैसा उसके साथ किया। इसी रीती से मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दिख उठाएगा।" तब चेलों ने समझा की उसने हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है। (मत्ति १७:११ - १३)। यीशु ने कहा, यूहन्ना तक सारे भविष्यवक्ता और व्यवस्था भविष्यवाणी करते रहे। और चाहो तो मानो की एलिय्याह जो आनेवाला था, वह यही है। जिस के सुनने के कान हों, वह सुन लें। (मत्ति ११: १३ - १५)। यीशु किसी पर दबाव नहीं डालते की वे उसके पवित्रशास्त्र के अनुवाद को स्विकार करें। वह केवल उन्हें बताते हैं जो स्विकार करना चाहते हैं।

देखीये की जकरयाह क्या कहता है की स्वर्गदूत ने उससे क्या कहा (लूका १:१३ - १७)। "वह एलिय्याह की आत्मा म और सामर्थ में हो कर उसके आगे आगे चलेगा की पितरों का मन बाल बच्चों की ओर फेर दे...."

क्या आप यकीन कर सकते हैं की यदी मैं अपनी कलीसीया में जाऊँ और उन से कहूँ की स्वर्गदूत ने मुझ से कहा की वचन का इस तरह अर्थ निकलता है और यह की अब परमेश्वर के राज में नयी बातें हो रही हैं। वे तो मेरे विरुध एक पुस्तक लिख कर मुझे समाप्त कर देंगे।

मलाकी के उस वचन का क्या कहना था की वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में आने वाला था या मैं एलिय्या को भेजूँगा। यदी आप देखें तो यह स्पष्ट है की मैं एलिय्याह नबी को भेजूँगा। अब हम इतनी स्पष्ट वचन का गलत अर्थ तो नहीं निकाल सकते।

मैं जानता हूँ की कुछ वचनों का अर्थ समझाना कठिन होता है। स्पष्टता से यह कहा गया है की एलिय्याह आयेगा तो आप इसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले पर लगा कर तुम उसका स्तर गिरा रहे हो। यह बड़ी शर्म की बात है यीशु, और जकरयाह, यह आप कैसे कह सकते हो की स्वर्गदूत ने तुम से कहा। आप ने सच को झुठलाया है और इस कहानी को ले कर आये हो की स्वर्गदूत ने तुम से कहा। क्या मैं इस पर विश्वास कर सकत हूँ?

मैं एक बाईबल का मानने वाला हूँ। मैं विश्वास का रखवाली करने वाला कुत्ता हूँ। मैं सारे नास्तिकों को मार कर परमेश्वर की मदद करूँगा। मैं यीशु मसीह की कलीसीया को साफ रखूँगा।

विश्वास का रखवाला या यीशु का खूनी? :

मैंने अपनी पुस्तक लिख दी। मैंने कलीसीया को साफ कर दिया। परन्तु अभी हमारे बीच में यीशु नबी का खून हुआ है। क्योंकि तुम जीवन को सुनना नहीं चाहते थे। तुम ने अपने दिमाग की आत्माविध्या को बनाया है। आप उस में जीवन नहीं डाल रहे थे। आप के मसीही विश्वास में निजी मुलाकात के लिए स्थान नहीं था। तुम फरीसी बन गये। मैं तुम को गलत साबित करूँगा।

फरीसीयों में खून की आत्मा भरी हुई थी :

जिस ने आप में यह आत्मा भरी वह खूनी और नाश करने वाला है। मेरे पिता इस संसार में प्रेम और चंगाई लेकर आये। तुम्हारे आकर नाश और भाग कर गये।

"मैं इस समय के लोगों की उपमा किससे दूँ? क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न पीता और वे कहते हैं, उसमें दुष्टात्मा है। मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया और वे कहते हैं, देखो पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, महसूल लेने वालों और पापीयों का मित्र।" (मत्ति ११: १६ - १९)।

हमें एक दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए :

"यदी तुम एक दूसरे को दाँत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो की एक दूसरे का सत्यनाश न कर दो (गल ५:१५)।" "जिस के सुनने के कान हों, वह सुन लें (मत्ति ११:१५)।" "ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है (मत्ति ११:१९)।"

आप फिर शुरू हो गये यीशु, जीवन और कामों और अनुभवों के बारे में बताते हुए। हम अपना सच परमेश्वर के वचन पर स्थापित करते हैं।

जीवन का आधार जीवन ही है :

जीवन का आधार जीवन ही है, क्या आप नहीं जानते? क्या आपने अब तक यह नहीं जाना की मसीहत मन से मन का मुकाबला है? क्या आप नहीं जानते की उत्पत्ति से ले कर प्रकाशितवाक्य तक दैवी मुकाबले के बारे में लिखा हुआ है? शिक्षक के रीप में जीवन के अनुभव की ओर वापस लोटो। वापस आकर फल से उसे पहचानों। कलीसीया वापस आओ अपने प्रभु और रक्षक यीशु मसीह के पास।

लोग जो जीवन के अनुभव के बारे में पढते है :

इसी कारण मैं कई अविश्वासीयों का आदर करता हूँ। वे जीवन का प्रयोग करने वाले होते हैं। मुझे किस का आदर करना चाहिए, अविश्वासी का जो जीवन का ध्यान से अध्ययन करता है या उस विश्वासी का जिस ने ईश्वरज्ञान को स्थापित कर रखा है?

हम एक साथ सीखते हैं :

मैं एक सीखनेवाला हूँ, वह जो सच तक पहुँचना चाहता है। मैं रास्ते पर हूँ, अभी मंजिल तक नहीं पहुँचा। मैं एक फरीसी की तरह बड़ा हुआ। जो परमेश्वर का अनुभव करते थे मैं उन्हें शैतान से भरा हुआ मानता था। मैं उन के विरुद्ध सिखाता था। फिर मेरे जीवन में एर समय आया, "जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानी समझता हूँ जिसके कारण मैंने सब वस्तिओं की हानी उठाई और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मसीह को प्राप्त करूँ और उस में पाया जाऊँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उसमें पाया जाऊँ.... (फिल ३:७-९)।"

इस जानकारी के बाद मैंने पश्चताप किया की मैं एक फरीसी था। मैंने पश्चताप किया की मैं यीशु मसीह की कलीसीया को नष्ट करने वाला था।

निजी जवाब :

अब समय है की मैं इमानदारी से स्विकार करूँ की परमेश्वर उस समय क्षमा नहीं मांगता जब वह अपने बच्चों को देश से बाहर निकाल कर ले जाता है उन्हें शिक्षा देने के

लिए। परमेश्वर ने यूसुफ को मूर्तिपूजकों के बीच मिस्र भेजा और दानियल को बाबुल, एस्तर को एक नास्तिक राजा की रानी बनने के लिए और बाईबल में इस बारे में बताते हुए वह शर्माया नहीं।

परमेश्वर मुझे कैथोलिक पादरी डैनिस और मैट लिन के पास भेजा। उस ने मुझे एपिसकोपल पादरी मोर्टन कैलसी और स्टैनफोर्डस के पास भेजा। क्या मैं उन सब से सहमत था? नहीं। उन्होंने मुझे ऐसा बातें बतायीं जो मेरी परम्परा में किसी ने मुझे नहीं बतायी थीं। उन्होंने मुझे सिखाया की आत्मिक संसार में परमेश्वर से किस तरह मुलाकात की जा सकती है। इसलिए मैं उन का आदर करता हूँ।

स्वयं पर लागू :

क्या आप अब तक रेगिस्तान गये हो? यदी नहीं, तो क्या जाओगे? क्या आप परमेश्वर को अपने मन या आत्मा में देखोगे या उसे ईश्वरज्ञान के डिब्बे में बंद कर रखोगे?

अध्याय १४ के कुछ मुख्य विचार :

१. फरीसीयों और भविष्यवक्ताओं के बीच लगातार लड़ाई चलती रही है।
२. फरीसी बाईबल पर निर्बर होते हैं।
३. नबी जीवन के अनुभव को जाँचते हैं।
४. यीशु भी बाईबल पर निर्भर नहीं थे।
५. फरीसी समझते हैं की नबीयों की हत्या कर वे विश्वास को बचा रहे हैं।
६. फरीसी अपने साथ खूनी आत्मा को रखते हैं।
७. यीशु भी दोष लगाने वालों का स्थान नहीं ले सका।
८. हमें एक दूसरे को दाँत नहीं काटना है।

९. जीवन का आधार जीवन ही है।

१०. जीवन में मेरी सुरक्षा मेरा ईश्वरज्ञान नहीं है परन्तु मैं मसीह को पकड़े रहता हूँ।

११. कई लोग बाईबल को आधार बना कर परमेश्वर के अनुभव को मारना चाहते हैं. उन्हें अपनी मूर्तिपूजा के लिए पश्चताप करना होगा।

१२. इस अध्याय में जो आप को मुख्य लगीं हो उन बातों को लिखीए...

विचार करें और बैहस करें :

१. मसीहत को ललचाती हैं उन पुस्तकों को पढ़ीए, उन का फल क्या है? भय या विश्वास? चंगाई या विभाजन? जीवन या मृत्यु? आत्मिक मुलाकात या तार्किक ईश्वरज्ञान? वे लोगों को सच साबित करते हैं या झूठा? क्या वे अपने परम्परा से बाहर लोगों की सुनते हैं? हमें इन उतपादकों के लिए किस तरह प्रार्थना करनी चाहिए?

२. क्या आप इस बात से सहमत हैं की फरीसी बाईबल मे जो लिखा गया है उस पर निर्भर होते हैं और नबी अनुभव पर? क्या आज भी ऐसा ही है? क्या आप यीशु पर दोष लगायेंगे की वे बाईबल के सिद्धांत या आत्मिक मुलाकात और जोवन के अनुभवों पर निर्भर थे?

३. अपने जीवन को इस पुस्तक के सिद्धांतों के साथ तुलना करीए। आप ने क्या पाया?

४. क्या आप अपने आप को मसीह से जुड़े हुए पाते हो या अपने ईश्वरज्ञान से जुड़े रहना चाहते हो?

५. क्या बाईबल को सुरक्षा मानना या परमेश्वर की देह अनुभव की राह पर है?

६. क्या आप समझते हैं की बाईबल का अधिक ज्ञान हानिकारक है?

७. क्या बाईबल का आदर न करना बुरा हो सकता है?

८. प्रेरित १३ : १ कहता है, "अन्ताकीया की कलीसीया में कई भविष्यवक्ता और उपदेशक थे ..." यह कितना आवश्यक है की भविष्यवक्ता और उपदेशक एक साथ कार्य करें? क्या वे एक दूसरे का संतुलन बना सकेंगे? क्या वे एक दूसरे का अर्थ समझाने में मदद करेंगे? क्या बीसवीं सदी की कलीसीया में भविष्यवक्ता और उपदेशक क्या एक साथ कार्य कर सकते हैं? क्या आप एक उदहारण बता सकते हो जहाँ ऐसा हुआ है?
९. सच के शिक्षक होने को नाते क्या तुम बाईबल में जीवन के अनुभव पर एक और उदहारण बता सकते हो? आप जितने चाहे बता सकते हो। (एक सुझाव लीका २४:१३ - ३५, विषेश कर ३५ वचन)।
१०. पत्राचार - "प्रभु, आप मुझ से इस अध्याय के विचारों के बारे में क्या कहना चाहते हैं?"

अध्याय पंद्राह

बीसवी सदी के भविष्यवक्ता को अपनाना

यीशु के समय के फरीसीयों की सब से बड़ी समस्या यह थी की उन्होंने यीशु नबी को नहीं पहचाना। उन के लिए यह कहा जाता है की अंधा अंधों की अगुवाई करता है। मैं एक भी पुरुष का नाम नहीं ले सकता जो इस बीसवीं सदी में नबी रहा हो। परन्तु परमेश्वर ने प्रेरित, भविष्यवक्ता, प्रचारक, पादरी और शिक्षक के रूप में कलीसीया में धेजा है (इफि ४:११)। तो मैं विश्वास क्यों नहीं करता? मुझे नहीं पता। मेरी परम्परा ने परमेश्वर के वचन को गलत ठहराया है।

फरीसीयों के लिए यीशु रुकावट का रोडा समझते थे। वे उस पत्थर पर गिरे और टूट गये। हमारा क्या? मैं भी उन्ही की तरह था। क्या आज नबी हैं जो भविष्यवाणी कर सकते हैं? बाईबल बताती है की जब यीशु ने कलीसीया बनाई तो उस में उसने पाँच तरह के सेवकों को रखा (इफि ४:११-१३)। यदी मैं अपनी परम्परा को छोड़ दूँ तो मुझे मेरे चारों ओर प्रेरित, भविष्यवक्ता, प्रचारक, पादरी और शिक्षक दिखाई देने चाहिए।

हाँ, मैंने कईयों को पाया परन्तु मुझे सुनने से पहले आप अपनी सूची बनाईये। आप के लिए आज के संसार में कौन नबी है? दी गया सूची में लिखीए।

हमारे युग के भविष्यवक्ता कौन हैं? उन के संदेश क्या हैं? मैं हर एक का नाम नहीं बताने वाला, केवल उनके बारे में बताऊँगा जिन्होंने मेरे जीवन को छूआ है। यदी आप उन को नहीं मानते तो मुझ पर दोष मत लगाईये। शायद सब मुझ से सहमत होंगे की मार्टिन लूथर, जौन कालविन, चार्लस वैसली और चार्लस फिन्ने, अपने समय के नबी थे। बीसवीं सदी के प्रारंभ में परमेश्वर ने कई लोगों को अन्य भाषा बोलने का उपहार दिया। परन्तु कुछ मसीहो ने जो समझते थे की ये गलत हैं उन उन्होंने पेनटीकौस्टल लोगों को घर और गिरजाघर जला दिये। सी. पीटर वाग्नर जो की प्रफेसर हैं फुल्लर थिओलौजिकल सेमिनरी में, उन्होंने भविष्यवाणी की की दुनिया में १.१ करोड लोग आत्मा से भरे जाएंगे। इन में पहले दौर में १९०० सदी के पेनटीकौस्टल, दूसरी दौर में १९६० को चम्तकारी और तीसरे दौर में १९८० से प्रारंभ होगी। कई लोगो ने इसे माना है। यह चम्तकारी है है न?

१९४० में ओरल रौबर्ट ने शारीरिक चंगाई का कलीसीया में प्रारंभ किया और कई मसीहो ने भी माना की उन में पवित्रात्मा है जो बिमारी पर काबू पा सकता है।

१९६० में डेरेक प्रिंस ने मुक्ति का प्रचार प्रारंभ किया।

१९७० में डेरेक प्रिंस और फोर्ट लौडरडेल फाईव ने चरवाह क् कार्यो और स्थान के बारे में बताया और मसीहों को कवच की आवश्यकता के बारे में बताया। बिल गोथार्ड ने इस का विरोद्ध किया।

डा. पौल योंगि चो ने प्रार्थना समीह को प्रत्साहित किया। १९८० में हम देखते हैं की परमेश्वर सच को वापस कलीसीया में स्थापित कर रहा है। सूची तो बडती जाएगी। परन्तु हमारे अंदर भविष्यवक्ताओं को मारने की इच्छा क्यों है। हम इस तरह क्यों करते हैं? इसके कुछ कारण हैं, यदी हम इन कारणों को देकें तो इस पर काबू पा सकते हैं।

कारण १ - अकसर भविष्यवाणी परदे में रहती है, केवल उन्हीं को मिलती है जो आत्मिक समझ रखते हैं।

उदहारण के लिए, मलाकी ने कहा, "देखो, यहोवा के उस बडे और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा ... (मलाकी ४ : ५,६)। यहूदी इस को पूरी तरह मान लिए और वे एलिय्याह के वापस आने की बाट जोहने लगे। लूका कहता है की यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने इसे पूरा किया. क्योंकि वह "वह एलिय्याह की आत्मा म और सामर्थ में हो कर आएगा ... (लूका १:१७)। यीशु ने कहा, यूहन्ना तक सारे भविष्यवक्ता और व्यवस्था भविष्यवाणी करते रहे। और चाहो तो मानो की एलिय्याह जो आनेवाला था, वह यही है। जिस के सुनने के कान हों, वह सुन लें। (मत्ति ११: १३ - १५)।

इसके अलावा यदी हम कुछ नया विचार पाते हैं, तो हम उसको पहली बारी में उतनी सफाई से नहीं कर पाते, जितना की करते करते सफाई आयेगी। इसलिए जब कोई नयी बात सुनते हो तो उस के पास समझदारी से जाओ और उसे समझने की कोशिश करो। बजाए इस के की उसके विरोध में खडे हो जाओ।

कारण २ - अपनी नयी खोज की खुसी में हम अपने भविष्यवाणी के सच को उन लोगों को गले के नीचे उतारते हैं, जो अभी तैयार नहीं हैं और स्विकार नहीं करते। आप में से कितने लोग, जब पहली बार मुक्ति पाए थे तो उनको जल्दी से अपने कियी दोस्त को बचाने को कहा गया था, जो तैयार नहीं था? आप में से ऐसा कितनों ने किया जब उन्हें पवित्रात्मा मिली? जो भविष्यवाणी करते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए और परमेश्वर के समय का इंतजार करना चाहिए, बजाए इसके की वे हर किसी को जिन से वे मिलते हैं बताते जाएं।

कारण ३ - जो भविष्यवक्ताओं की सुनते हैं, दूसरों को बताने से पहले उस संदेश को अपना नहीं बनाते, जिस से वह शुद्ध नहीं रह पाता।

कैन्नित हैगिन ने ५० वर्ष, पवित्रात्मा की मदद से वचन पर ध्यान लगाने में काटे और उन्होंने पाया की वचन उन में इतना समा गया था की वे वचन की शक्ति को स्थिती के अनुसार निकाल सकते थे। उन के एक चेली ने मुझ से कहा की उसका बच्चा उस बिमारी से जान गवा बैठा जो डाक्टर लोग आसानी से ठीक कर सकते थे क्योंकि वह स्वयं बच्चे को चंगा करने में लग गयी। उसने यह नहीं जाना की कैन्नित हैगिन में जो शक्ति है वह उस में नहीं है। इस तरह के हादसे कैन्नित हैगिन को गलत नहीं ठेहरा सकते।

कारण ४ - यदी भविष्यवक्ता केवल अपनी नयी दैवी प्रकाशन के बारे में बताये तो पागलपन हो सकता है।

कई लोग शैतानों को दर्वाजे की कुण्डी से या रस्ते के किनारे से निकालते हैं। यह इसलिए होता है क्योंकि भविष्यवक्ता या उसका चेला पागल हो जाते हैं। यीशु की एक तीहाई (८० में से २५) प्रार्थना मुक्ति के लिए थीं। यदी मैं उस पर विश्वास करता हूँ तो मेरी भी एक तीहाई प्रार्थना मुक्ति के लिए होनी चाहिए। कई लोगों का मानना है की यदी तुम में विश्वास है दैवी चंगाई के लिए, तो तुको डाक्टर के पास नहीं जाना चाहिए। हमें परमेश्वर से संतुलन बनाने के लिए पूछना चाहिए।

कारण ५ - वक्ता में गर्व की भावना हो सकती है।

यह कुछ वाक्य हैं जो गर्व की ओर संकेत करते हैं, "मेरे पास कुछ है जो तुम्हारे पास नहीं है," "मैं तुम से अच्छा हूँ," या "आओ, मैं तुम को सिखाता हूँ।" यदी आप बाँटते हैं, तो इस तरह के घमण्ड से दूर रही। यदी आप सुन रहे हैं और इस तरह का गर्व की बातें सुनते हैं तो परमेश्वर से अनुग्रह की प्रार्थना करीए।

कारण ६ - सुनने वाले में गर्व हो सकता है।

यदी कोई हमारे साथ अपने अनुभव को बाँटना चाहता है, तो हम अपने गर्व के कारण शायद नहीं सुनना चाहते। "कोई यह कोसे जान सकता है?" "मैं इससे अधिक समय से मसीही हूँ," या "क्या नासर से कुछ अच्छा आ सकता है?" इस गर्व से सतरक रही।

कारण ७ - कई बार सुनने वाला पवित्रवचन का सहारा ले कर भविष्यवक्ता के कहे वचन को गलत साबित करना चाहता है।

वचन में इतनी संभावना है की वह उस सच को जिसे हम मानते हैं, गलत साबित हो सकता है। यदी आप समझते हैं की स्वर्ग जाने के लिए अपने भाई से प्रेम रखना आवश्यक है, तो मैं उस यह वचन सुना कर गलत साबित करूँगा, "यदी कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाईयों और बहनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"

दूसरी ओर यदी कोई यह माने की वह अपने भाई से नफरत कर के स्वर्ग जा सकता है, तो उसके लिए मेरे पास यह वचन है जो यूबना की आज्ञा है, "जो कोई यह कहता है की मैं ज्योति में हूँ और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अंधकार ही में है। (लूका २:९)। इसलिए मैं कहता हूँ की पवित्रशास्त्र में कई वचन हैं जो सच को गलत और गलत को सच साबित कर सकते हैं।

कारण ८ - सुनने वाला अपनि आँखों को भविष्यवक्ता के कुछ उद्धारणों पर रखना चाहिए, बजाए इसके की पूरे संदेश को सुनो।

कितने लोग ऐसा करते हैं, मुझे नहीं पता। हमें चाहिए की हम परमेश्वर से वचन के द्वारा संदेश को स्पष्ट करने को कहें। शैतान हमेशा चाहेगा की हम संदेश को छोड़ दें। ज्योति के बच्चे होने को नाते हमारे पास आत्मिका है जिससे हम अर्थ निकाल सकते हैं। हमें प्रति दिन वचन को पढ़ना चाहिए यह जानने के लिए की वह सच है। हम ज्योति के बच्चे हैं।

इस आध्याय को पढ़ने के बाद सदी आप समझते हैं की आप ने किसी पर पत्थर फेंके हैं, तो आप क्षमा माँगीये।

अध्याय १५ के कुछ मुख्य विचार :

१. परमेश्वर अपनी कलीसीया में लगातार भविष्यवक्ताओं को स्थापित करता है।
२. हम हमारे मध्य के भविष्यवक्ताओं के प्रति अंधे हैं।
३. हमारे युग में परमेश्वर तेजी से सच को स्थापित कर रहा है।
४. भविष्यवक्ताओं को पत्थर मारने के आठ कारण दिये गये हैं।
५. इस अध्याय से कुछ और विचार जो आपको मुख्य लगें उन को लिख लीजिए।

कार्य :

अगले पृष्ठ पर दी गयी कार्यपत्रे का प्रयोग कर बीसविं सदी के भविष्यवक्ताओं के नाम लिखिए।

विचार करें और बैहस करें :

१. क्या आप समझते हैं की पाँच तरह के प्रचारक जो इफिसियों ४:११ में बताया गया है, वह आज भी लागू है?
२. क्या हम सब में हमारे बीच भविष्यवक्ताओं के प्रति अंधापन है? यदि हाँ, तो आप को ऐसा क्यों लगता है?
३. आप के मुताबिक कोन बीसविं सदी के भविष्यवक्ता हैं?

बीसविं सदी के भविष्यवक्ता

भविष्यवक्ता की संस्था का

नाम _____

इस संस्था के मुख्य लोग

इस संस्था का मुख्य संदेश

इस संदेश की शक्ति और बहुमूल्यता

इस संदेश की अधिकता और कमजोरी

इस संस्था के प्रति मेरा जवाब

मैंने इस संस्था के भविष्यवक्ताओं का आदर किया है _____ हाँ _____ नहीं।

मैं इस संस्था के साथ हूँ और संदेश को शुद्ध करने में सहायक बनूँगा, उसे पवित्रशास्त्र से

खोजूँगा और संसार के दूसरे सच से संतुलन बनाऊँगा। _____ हाँ _____ नहीं।

मैंने इस संस्था से उपदेश पाया है। _____ हाँ _____ नहीं।

मैंने इस संस्था की अधिक्ता देखी है और मैं इसके विरोध में आया हूँ बिना पवित्रवचन से इस के सच को जाँचे। _____ हाँ _____ नहीं।

यदी इस संस्था के प्रति आप पश्चताप करना चाहते हैं, तो आप इस समय पश्चताप की प्रार्थना करीए। आप अपने छोटे समूह में सब के सामने भी पश्चताप कर सकते हैं।

अध्याय सोलाह विश्वास, आशा और प्रेम को उजागर करना

पर अब विश्वास, आशा, प्रेम, ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है। (१ कुरि १३:१३)।

स्थायी सच्चाईयाँ :

विश्वास, आशा, प्रेम, ये तीनों स्थायी, सच्चाईयाँ हैं। इस का क्या अर्थ है? क्या इस का अर्थ यह है की शक, भय और गुस्सा स्थायी नहीं हैं और इन्हें विश्वास, आशा, प्रेम, खा जाएंगे? क्या विश्वास, आशा, प्रेम, से परमेश्वर का राज बनता है? मैं यही समझता हूँ।

इसलिए मैं अपने विधार्थियों में सब से पहले विश्वास, आशा, प्रेम, ये तीनों को स्थापित करना चाहता हूँ। कई विधार्थि शैतान के बमले का शिकार बन कर आते हैं। वे भय, दोष और गुस्से से संघर्ष करते रहते हैं और मेरी जिम्मेदारी होती है की मैं उन को सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाऊँ।

इस पृथ्वि पर परमेश्वर का राज है :

जब मैंने लिखना प्रारंभ किया तो मैं हमेशा किसी न किसी समस्या को ले कर परमेश्वर के सामने आता और परमेश्वर का पहला जवाब रहता, "शांत रहो, मैं यहाँ हूँ।" मुझे पता है की वह है। वह इमानुएल है, परमेश्वर हमारे साथ। एक शण को मैं भूल गया था। उसने मुझ से ऐसा करीब १०० बार कहा होगा तब मैंने उस पर विश्वास किया, की परमेश्वर उपस्थित है। लोग मुझ से कहने लगे की जब तुम कहते हो की परमेश्वर यहाँ है, तो यह तुम्हारे मुख से अभिषिक्त सा लगता है। अभीषेक क्या है? मन का अनुभव या जैसा प्रभु ने मुझ से पहले कहा था, दैवी प्रकाशन।

शैतान चाहता है की हम विश्वास करें की वह राज करता है :

शैतान का राज भय, शक और गुस्से पर स्थापित है। शैतान के राज को परमेश्वर का राज निगल लेता है। शैतान कहता है की विश्वास मत करो। परमेश्वर कहता है विश्वास करो। शैतान कहता है, मेरी शक्ति में विश्वास करो। विश्वास करो की गुस्सा राज करता है। परमेश्वर कहता है, विश्वास करो की मैं राज करता हूँ। शैतान कहता है अच्छे लोग अंत में आते हैं।

परमेश्वर कहता है अच्छे लोग पहले आते हैं। शैतान कहता है की इस संसार के राज्य उसके हैं। परमेश्वर कहता है की राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु वही है।

विश्वास, आशा और प्रेम को स्थापित करना :

जब वे आप को शैतान पर काबू पाते देखते हैं, तो थोड़ा बहुत उन में स्थापित हो जाता है। यीशु के चेलों ने उस पर विश्वास किया जो वे उसे करते हुए देखते थे। यीशु कहता है की विश्वास सुनने से आता है। कुछ विश्वास, आशा, प्रेम, दूसरों की साक्षी सुनने से स्थापित हो जाता है। कुछ बाईबल की कहानीयों से और कुछ पवित्रात्मा के द्वारा पत्रचार करते समय।

हम सच को स्थापित करने के लिए अपनी पुरानी बात पर वापस आ गये। सच पवित्रशास्त्र की गवाही से पैदा हुआ है, अपनी साक्षी से, मन के अनुभव से, दूसरों की सलाह से, और पवित्रात्मा के बहाव से जो जीवन के अनुभवों में होती है, और उसके अपने मन से बात करते हुए, सुनने से।

जीवन और समाझ के कार्यों में, मन से बाहर का और आत्मा चेतना सम्बंधि, दोनों का साथ बहना

दिमाग

लोगस

दूसरे

जीवन का अनुभव

मन, अनुभव स्पर्श

सच तब पहचाना जाता है जब मेरा दिमाग और मन वचन को खोजते हैं, पवित्रात्मा को सुनते हुए, दूसरों की सलाह ले कर और जीवन के अनुभव से।

इन में से कौन सी बातें हम हर दिन प्रयोग करना चोहेंगे? सब।

मुझे यह जानने में कुछ समय लग गया की परमेश्वर के राज में प्रवेश करने के लिए विश्वास, आशा, प्रेम कितने मुख्य हैं। ये न सिर्फ १ कुरिंथियों १३:१३ में मिलते हैं, परन्तु पौलुस इन का प्रयोग अपने कई पत्रों में करता है (इफि १ : २, १५; कुल १:४,५; १ थिस १:३, २ थिस १:३; १ थिमु १:५)। वे १, २, ३, यूहन्ना में भी पाए जाते हैं। मुझे यह भी पता

चला की मुझ में विश्वास, आशा, प्रेम, नहीं हैं और मुझ में बदलाव लाना आवश्यक है।

मसीह के विरोधी पर विश्वास या जीवित परमेश्वर पर विश्वास :

मुझे मसीह के विरोधी पर विश्वास, जीवित परमेश्वर पर विश्वास से अधिक था। जब मैंने बुराई देखी तो सोचा की परमेश्वर राज नहीं कर सकता। मुझ में विश्वास था परन्तु मसीह के विरोधी में।

सिद्ध पुरुष के विरुध असिद्ध पुरुष :

असिद्ध पुरुष मसीह को राज करते नहीं देख सकते। वे केवल बुराई को रज करते देख सकते हैं। यूसुफ सिद्ध पुरुष था। जो नहीं देखता वह कहता है की शैतान राज कर रहा है। देखने वाला कहता है परमेश्वर राज कर रहा है। यीशु को जब क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था तो कौन चिल्ला रहा था की क्रूस पर चढ़ाओ, कितने मसीह को राज करते देखेंगे? परमेश्वर ने इतनी बुराई कैसे होने दी? क्या वह अपना प्रेम और इच्छा स्थापित कर रहा था? आप क्या समझते हैं? क्या उस दिन परमेश्वर राज कर रहा था? सिद्ध पुरुष जानता है की परमेश्वर राज करता है।

कलीसीया को देखना सीखना चाहिए :

मैं एक सिद्ध पुरुष बन गया हूँ। मैं हर सप्ताह कई बार पत्राचार कर के दर्शन देखता हूँ। मैं मेरे जीवन और मेरे इरद गिरद लोगों के जीवन में परमेश्वर की योजना और इच्छा को देखता हूँ। मुझ में विश्वास, आशा, प्रेम, भरे हुए हैं। बड़े और छोटे समूह में प्रार्थना करीए की परमेश्वर हर एक की आँखें खोले ताकी वे सिद्ध बन सकें। तब उन के मन शक, भय और गुस्से से चंगे हो जाएंगे।

अपनी आँखों को जीविते मसीह पर लगाये रखना, मसीह के विरोधि पर नहीं :

हमें यह नहीं देखना है की मसीह का विरोधी क्या कर रहा है। हमें यीशु पर आँखों को लगाये रखना है। आज संसार की एक तिहाई से अधिक जनता मसीही है। हर दिन ७८००० नये विश्वासी हो रहे हैं और १६०० कलीसीया हर सप्ताह बन रही हैं। आज कल महान कलीसीयाएँ हैं, जिन में १,००,००० से ६,००,००० सदस्य हैं। इसकी बराबरी कहीं नहीं। लैटिन अमेरिका में मसीहत १९०० में ५०,००० से बढ कर २००० में १,३७,००० हो गयी। अफरिका

में १० लाख से कुछ कम मसीही थे १९०० में परन्तु २००० में वे ३,२४,००० बन गये। यह ८% से ५०% की बडत है। पहले यह डर था की इसलाम विश्व में फैल जागा, परन्तु यह गलत साबित हुआ।

अध्याय १६ के कुछ मुख्य विचार :

१. विश्वास, प्रेम और आशा, स्थायी सच्चाईयाँ हैं।
२. विश्वास, प्रेम और आशा, परमेश्वर को देख कर आते हैं।
३. भय, शक और गुस्सा शैतान को देख कर आते हैं।
४. असिद्ध पुरुष शैतान के राज को मानते हैं।
५. सिद्ध पुरुष परमेश्वर के राज को मानता है।
६. असिद्ध पुरुष अपनी आँखें मसीह विरोधी पर रखते हैं और भय में रहते हैं।
७. सिद्ध पुरुष मसीह पर आँखें रखते हैं और विश्वासमें रहते हैं।
८. हमें आज्ञा है की हम अपनी आँखें यीशु पर रखें।
९. जो मुख्य विचार आप को लगते हैं, उन्हें लिख लीजिए....

कार्य :

यदी आपने अपनी आँखें शैतान पर लगाईं तो पश्चताप करीए। यदी आप सिद्ध पुरुष नहीं हैं, तो मेरी पुस्तक परमेश्वर से बमधुत्व और अपनी आँखों को परमेश्वर के दर्शन के लिये खोलना सीखीए। यदी आप विश्वास, आशा और प्रेम में नहीं हैं, तो परमेश्वर से क्षमा माँगीसे।

विचार करें और विवाद करें :

१. आज किस के पास अधिक शक्ति है, मसीह या मसीह विरोधी? यीशु ने कलवरी पर शैतान के क्या किया?
२. कलीसीया के साथ मसीह का क्या रिश्ता है? वह कितनी शक्ति छोड़ना चाहता है?
३. क्या व्यवस्थाविवरण आज भी लागू है, जैसे "मैं तुम्हें प्रधान बनाऊँगा पूँछ नहीं, तुम राज करोगे, राज किये नहीं जाओगे, तुम दोगे लोगे नहीं?" यदी हाँ, तो क्या हम उसका अनुभव कर रहे हैं? यदी नहीं, तो क्यों नहीं?
४. अंधकार को क्या होगा जब रौशनी उजागर होगी? क्या अंधकार का ज्योति पर कोई शक्ति है? क्या ज्योति का अंधकार पर कोई शक्ति है? अंधकार क्या है? क्ाय होगा यदी कलीसीया कहने लगे की हम अपने मसीही सिद्धांतों के अनुसार इस क्षेत्र में लागू करेंगे? क्या यह सारे राष्ट्रों को मसीह के तैहत लाने का भाग है?
५. किस को इस पृथ्वि पर राज करना चाहिए, मूर्तिपूजक को या मसीही को? क्यों?
६. क्या आप इस बात से सहमत हैं की बाईबल के अनुसार असिद्ध पुरुष शैतान और दुष्ट को देखता है और भय का अनुभव किया है, जबकी सिद्ध पुरुष परमेश्वर को राज करते देखता है और विश्वास में जी रहा है? क्या आप कुछ उदहारण दे सकते हैं?
७. क्या कलीसीया में अधिकतर सिद्ध पुरुष या असिद्ध पुरुष होते हैं? आप सिद्ध पुरुष हैं या असिद्ध पुरुष हैं?
८. क्या हम पुरुष को सिद्ध बनाने की शिक्षा दे सकते हैं? यदी हाँ, तो कैसे?
९. पत्राचार - "प्रभु, आप इस अध्याय के विचारों के विषय मुझ से क्या कहना चाहते हैं?"

छोटे समूह में परमे तार का अनुभव करना

The Bible clearly teaches that we no longer live, but that Jesus lives His life through us. How do we sense this divine, yet natural flow from within us? What does it feel like? How can we cultivate this experience? How can we live naturally in the supernatural?

Naturally Supernatural will teach you how to sense the Holy Spirit within you on a daily basis. As you read and apply these truths, you will begin to live naturally yet supernaturally out of Him!



Mark and his family live near Buffalo New York. Mark received his bachelor's in Religion/Philosophy at Roberts Wesleyan College and his Master's and Doctorate in Bible and Theology from Miami Bible Institute. Raised a conservative Baptist, educated Free Methodist, influenced and trained by renowned Catholic, Episcopal and Charismatic a unique blending of the truths found in each of these traditions. He has 22 years pastoral experience. He has written more than 50 books and has co-sponsored more than 100 adult-level Bible schools. He travels full-time conducting various training seminars in churches and encouraging entrepreneurship in the Body of Christ.

**"Speaking to the Purposes of God for
This Generation and for the Generations to Come"**

**P.O.Box 310 Shippensburg, PA 17257
ISBN 1 - 56043-060-5**